



ہماری زبان

روزانہ منصوبہ کار
دैनिक कार्योजना



7

تسلیم رضا خاں
Tasleem Raza Khan





सच बता तू सभी को भाता है
या कि मुझसे ही तेरा नाता है
मैं ही करता हूँ तुझपे जां निसार
या कि दुनिया है तेरी आशिके ज़ार
क्या ज़माने को तू अज़ीज़ नहीं
जिन्न व इंसां की हयात है तू
मुर्ग व माही की कायनात है तू
है नबातात का नमु तुझसे
रोख तुझ बिन हरे नहीं होते
सबको होता है तुझसे नुशु नुमा
सबको भाती है तेरी आब व हवा
तेरी एक मुश्त खाक के बदले
लूँ न हरगिज़ अगर बहिशत मिले
जान जब तक न हो बदन से जुदा

लेखक का नाम हो वतन से जुदा

इस नज़्म के लेखक श्री अल्लाफ़ हुसैन
हाली हैं।

उन्होंने इस नज़्म में अपनी भावनाओं को

प्रकट किया है

शब्द अर्थ

नबातात। वह चीजें जो ज़मीन

से उगती हैं

मुश्त। मुठ्ठी

बहिशत। जन्नत

नुशु नुमा। बढ़ोत्तरी

प्रश्न,, हाली ने इस नज़्म में अपने
जज़्बात किसके बारे में बयान किए
हैं?

प्रश्न,, हाली ने जिन्न व इंसां की हयात
किसे कहा है?

सच बता तू सभी को भाता है
या कि मुझसे ही तेरा नाता है
मैं ही करता हूँ तुझपे जां निसार
या कि दुनिया है तेरी आशिके ज़ार
क्या ज़माने को तू अज़ीज़ नहीं?
अ وطن तो तू ऐसी चीज़ नहीं
जन و انسان کی حیات ہے تو
مرغ و ماہی کی کائنات ہے تو
ہے نباتات کا نمو تجھ سے
روکھ تجھ بن برے نہیں ہوتے
سب کو ہوتا ہے تجھ سے نشو نما
سب کو بھاتی ہے تیری آب و ہوا
تیری اک مشّت خاک کے بدلے
لوں نہ بر گز اگر بہشت ملے
جان جب تک نہ ہو وطن سے جدا
کوئی دشمن نہ ہو وطن سے جدا

اس نظم کے مصنف جناب الطاف حسین
حالی صاحب ہیں۔ انہوں نے وطن کی محبت
پر اپنے جذبات کا اظہار کیا ہے

الفاظ..... معنی

.....نباتات

وہ چیزیں جو زمین سے اگتی ہیں

مشّت۔ مٹھی

بہشت.....جنت

نشو نما.....بڑھوتری

سوال..حالی نے اپنے

جذبات کا اظہار کس کے

لئے کیا ہے۔

سوال...جن و انسان کی

حیات کس کو کہا ہے

.....



बैठे बे प्रिक्र किा हो हम वतनों
उठो अरुते वतन के दोस्त बनो
तुम अगर चाहते हो मुल्क की खैर
न किसी हम वतन को समझो गैर
हो मुसलमान इस में या हिन्दू
बौद्ध मज़हब हो या कि हो ब्रहमो
सबको मीठी निगाह से देखो
समझो आंखों की पुतलियां सबको
मुल्क हैं इत्तफाक से आजाद
शहर हैं इत्तफाक से आबाद
हिन्द में इत्तफाक होता अगर
खाते गैरों की ठोकरें क्योंकि
क़ौम सब इत्तफाक खो बैठी
अपनी पूंजी से हाथ धो बैठी
एक का एक हो गया बद खुआ
लगी गैरों की पड़ने तुम पे निगाह
फिर गये भाइयों से जब भाई
जो न आई थी वह बला आई



بیٹھے بے فکر کیا ہو ہم وطنو
اٹھو اہل وطن کے دوست بنو
تم اگر چاہتے ہو ملک کی خیر
نہ کسی ہم وطن کو سمجھو غیر
ہوں مسلمان اس میں یا ہندو
بودھ مذہب ہو یا کہ ہو برہمو
سب کو میٹھی نگاہ سے دیکھو
سمجھو آنکھوں کی پتلیاں سب کو
ملک ہیں اتفاق سے آزاد
شہر ہیں اتفاق سے آباد
ہند میں اتفاق ہوتا اگر
کھاتے غیروں کی ٹھوکریں کیونکر
قوم سب اتفاق کھو بیٹھی
اپنی پونجی سے ہاتھ دھو بیٹھی
ایک کا ایک ہو گیا بد خواہ
لگی غیروں کی پڑنے تم پہ نگاہ
پھر گئے بھائیوں سے جب بھائی
جو نہ آئی تھی وہ بلا آئی

शब्द। अर्थ

बद खुआ। बुरा चाहने
वाला

बला। मुसीबत

प्रश्न,,, नज़्म के इस दूसरे
हिस्से में हाली एहले वतन
को क्या पैगाम दे रहे हैं?

प्रश्न,,, क़ौमी एकता से क्या
लाभ है?

01/07/2020 के جواب

(1) اپنے وطن ہندوستان کے

لئے

(2) ہندوستان کو

تسلیم رجا خاں

الفاظ.....معنی

بد خواہ.....برا

چاہنے والا

.....بلا

مصیبت

سوال...نظم کے اس

حصے میں حالی اہل

وطن کو کیا پیغام

دے رہے ہیں؟

سوال....قومی

یکجہت سے کیا



विषय- उर्दू

प्रकरण- नज़्म

पाठ- हुब्बे वतनकक्षा-7

क्रमांक- 2



मिशन शिक्षण संवाद

कविता का सार نظم کا خلاصہ

बच्चों पिछले दो पाठ में हमने अपने वतन कविता की वह पंक्तियां पढ़ी जिनमें हाली ने अपने वतन हिंदुस्तान से बेइंतहा मोहब्बत का इजहार किया है और क़ौम की बदहाली का तज़करा बहुत दर्दनाक अंदाज में बयान किया है। आज हम इस नज़्म के आखिरी पंक्तियों का अध्ययन करेंगे इंतजार में हाल ही में क़ौम के नौजवानों को बेदार करने की कोशिश की है हाली फरमाते हैं कि अगर इज्जत चाहते हो तो अपने वतन के लोगों से मोहब्बत करो, जो क़ौम दुनिया में मुमताज़ होती है वह गरीबी में भी इज्जत पाती है वह दौर गुजर गया जब लोग अपनी जात और नस्ल पर गुरुर करते थे। अब वह दिन दूर नहीं जब बे हुनर इंसान को भीख भी नहीं मिलेगी।

بچوں پچھلے دو اسباق میں ہم نے حب وطن نظم کے وہ اشعار پڑھے جن میں حالی نے اپنے وطن ہندوستان سے والہانہ محبت کا اظہار کیا ہے۔ اور قوم کی بد حالی کا تذکرہ بہت پرسوز انداز میں بیان کیا ہے آج ہم اس نظم کے آخری اشعار کا مطالعہ کریں گے ان اشعار میں حالی نے قوم کے نوجوانوں کو بیدار کرنے کی کوشش کی ہے حالی فرماتے ہیں کہ اگر عزت چاہتے ہو تو اپنے وطن کے لوگوں سے محبت کرو جو قوم دنیا میں ممتاز ہوتی ہے وہ غریبی میں بھی عزت پاتی ہے وہ دور گزر گیا جب لوگ اپنی ذات اور نسب پر فخر کرتے تھے اب وہ دن دور نہیں جب بے ہنر انسان کو بھیک بھی نہیں ملے گی

अभ्यास कार्य

शब्द=अर्थ

मुबतज़िल=बे क़दर

मुमताज़=नुमायां

इफ़्तिख़ार=इज्जत

तरजीह=बरतरी

सय्यद=सरदार

प्रश्न, कोई दिन में वह दौर भी आएगा
बे हुनर भीख भी न पाएगा।

हाली इन पंक्तियों में किसे बेदार कर रहे हैं?

नोट, बच्चे इस कविता के सार को अपने शब्दों में कापी पर लिखें।



مشق

الفاظ=معنی

مبتذل=بے قدر

ممتاز=نمایاں

افتخار=عزت

ترجیح=برتری

سید=سرदार

سوال-کوئی دن میں وہ دور آئے گا

بے ہنر بھیک تک نہ پائیگا

حالی ان اشعار میں کسے بیدار کر رہے ہیں؟

نوٹ..بچے اس نظم کا خلاصہ اپنے الفاظ میں کاپی پر

لکھیں۔



विषय- उर्दू

पाठ- हुब्बे वतन कक्षा-7



प्रकरण- अभ्यास कार्य

क्रमांक- 9

मिशन शिक्षण संवाद

अभ्यास कार्य

مشق

बच्चों हमने नज़म हुब्बे वतन का मुताला किया। अब हम इस नज़म के मशक करेंगे जो अल्फाजों मानी दिए जा रहे हैं उनको याद करना है और सवाल जवाब अपनी कॉपी में तहरीर करना है।

بچو ہم نے نظم حب وطن کا مطالعہ کیا۔ اب ہم اس نظم کی مشق کریں گے جو الفاظ و معنی دیے جا رہے ہیں ان کو یاد کرنا ہے۔ اور سوالات کے جواب اپنی کاپی میں تحریر کرنا ہے۔

शब्द=अर्थ

हुब्ब=मुहब्बत

सिन्फ=किस्म

क्राफिया=तुकबंदी

मुकरर=तय

बद खुआ=बुरा चाहने वाला

बला=मुसीबत

निबातात=वह चीज़ें जो ज़मीन

से उगती हैं

मुश्त=मुठी

बहिश्त=जन्नत

नुशुनुमा=पैदावार

الفاظ=معنی

حب=محبت

صنف=قسم

قافیہ=تک بندی

مقرر=طے

بد خواہ=برا چاہنے والا

بلا=مصیبت

نباتات=وہ چیزیں جو زمین سے اگتی

ہیں۔

مشت=مٹھی

بہشت=جنت

نشونما=پیداوار

प्रश्न, बैठे बे फ़िक्र..... वह

बला आई।

नज़म के इन अशआर में

हाली अहले वतन को क्या

पैग़ाम दे रहे हैं?

प्रश्न, क़ौमी एकता से क्या

फायदा है?

प्रश्न, किस से नुशुनुमा होती है?

प्रश्न, हाली ने इस नज़म को

नज़म की किस सनफ़ में लिखा

है?

سوال..بیٹھے بے فکر.....وہ بلا

آئی

حالی نے نظم کے ان اشعار میں اہل

وطن کو کیا پیغام دیا ہے؟

سوال..قومی یکجہتی سے کیا فائدہ

ہے؟

سوال..حالی نے اس نظم کو نظم کی

کس صنف میں لکھا ہے؟

سوال..کس سے نشونما ہوتی ہے؟

9458278429



بچوں آج ہم حاتم طائی
کے کہانی پڑھیں گے
اس سے پہلے ہم اس آبادی
کے مصنف کے
معارف میں جانیں گے۔ تو غیر
معارف شروع کرتے ہیں

میر امن کا اصلی نام میر امان تھا۔ امن انکا تخلص تھا۔

بڑی سادہ اور آسان زبان لکھتے تھے۔ دہلی پر
تباہی آئی تو اپنا گھر بار چھوڑ کر گھومتے پھرتے کلکتہ
پہنچ گئے۔ کلکتہ میں اسی زمانے میں انگریزوں نے
فورٹ ولیم کالج کھولا تھا

ڈاکٹر جان گل کرائسٹ کالج کے پرنسپل تھے
وہ اردو ادب جانتے تھے، اور انہوں نے کئی کتابیں بھی
اردو میں لکھی تھیں۔ گل کرائسٹ نے میر امن کو کالج
کے لئے کتابیں لکھنے پر مقرر کر دیا۔
اپنی ملازمت کے زمانے میں میر امن نے۔
کہانیوں کی ایک کتاب لکھی جو باغ و بہار کے نام سے
آج بھی مشہور ہے۔



میر اम्मन کا असली नाम नीर अमान था।

अमान उनका तख्तलुस था।

बड़ी सादा और आसान जुबान लिखते थे।

देहली पर तबाही आई तो अपना घर बार छोड़ कर घूमते फिरते
कलकत्ता पहुंच गए। कलकत्ता में इसी ज़माने में अंग्रेजों ने फ़ोर्ट
विलियम कॉलेज खोला था। डाक्टर जान गिल क्राइस्ट कालेज के
प्रिंसिपल थे।

वह उर्दू खूब जानते थे, और उन्होंने कई किताबें भी उर्दू में लिखी थीं।
गिल क्राइस्ट ने मीर अम्मन को कालेज के लिए किताबें लिखने पर
मुकर्रर कर दिया।

अपनी मुलाजमत के ज़माने में मीर अम्मन ने कहानियों की एक
किताब लिखी जो 'बाग व बहार' के नाम से आज भी मशहूर है।



سوال۔۔ میر امن کا اصلی نام کیا
تھا؟

سوال۔۔ دہلی پر تباہی کے بعد میر
امن کہاں گئے؟۔

سوال۔۔ میر امن کے زمانے میں
فورٹ ولیم کالج کے پرنسپل
کون تھے؟۔

الفاظ۔	معنی
معروف۔	مشہور
ملازمت۔	نوکری
پرنسپل۔	صدر معلم
مقرر۔	طے شدہ

معلم...تسلیم رضا خان
اধ্যاپک,,, تस्लीم رज़ا खां

معلم...تسلیم رضا خان



उन दोनों की बातें हातिम ने सुनी और इंसानियत के नाते वह गार से बाहर निकल आया हातिम ने बूढ़े से कहा कि मुझे बादशाह के पास ले चलो और अपना इनाम पाओ पीर मर्द ने कहा कि इसमें मेरी भलाई जरूर है मगर कहीं बादशाह ने तुम्हें खत्म कर दिया तो मैं खुदा को क्या मुंह दिखाऊंगा इतने में भीड़ जमा हो गई और हातिम को लोग पकड़कर बादशाह नौफ़िल के पास ले गए।

हर शख्स कह रहा था कि इसे इसे मैं आपके पास लेकर आया हूँ बूढ़ा सबकी शोखियाँ सुन रहा था हातिम ने कहा कि नहीं वह बूढ़ा मुझे लाया है बादशाह ने झूठ बोलने वालों को 500 जूतियाँ लगवाई और हातिम की फराखी और ईमानदारी को देखकर बूढ़े शख्स को पांच सौ अशर्फियाँ दीं और हातिम का जो माल क़रक़ किया था सब वापस किया।

नौफ़िल ने सोचा कि ऐसे खुदा तरस इंसान को परेशान करना बहुत बड़ा गुनाह है। तो बच्चों हमें इससे यह तालीम मिलती है कि हम लोगों की भलाई के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दें यही इंसानियत का सबसे बड़ा सताता है।

بجوں ہم نے کہانی کی مصنف اور حاتم طائی اور بادشاہ کے بارے میں پڑا بڑا اب ہم کہانی کا آخری حصہ پڑھیں گے۔
بوڑھے اور اس کی بیوی کی باتیں سن کر انسانیت کے ناتے حاتم طائی غار سے باہر نکل آیا۔ ہار تم نے بوڑھے سے کہا مجھے بادشاہ کے پاس لے چلو اور اپنا انعام پاؤ۔ پیرمرد نے کہا اس میں میری بھلائی ضرور ہے مگر کہیں بادشاہ تمہیں قتل نہ کر دے یا اس نے تمہیں قتل کر دیا تو میں خدا کو کیا منہ دکھاؤں گا۔ اتنے میں بھیڑ جمع ہو گئی اور ہاتم کو لوگ بکڑ کر بادشاہ نوفل کے پاس لے گئے۔
پر شخص کہہ رہا تھا کہ اسے میں آپ کے پاس لے کر آیا ہوں۔ بوڑھا ایک طرف خاموش سب کی شیخیاں سن رہا تھا۔ سب کی لنترائی سن کر ہاتم نے کہا کہ نہیں وہ بوڑھا مجھے لایا ہے۔
بادشاہ نے جھوٹ بولنے والوں کو 500 جوتیاں لگوائی اور حاتم کی فراخی اور ایمانداری کو دیکھ کر بوڑھے شخص کو پانچ سو اشرافیاں دیں اور ہاتم

کا جو مال قرق کیا تھا سب واپس کیا۔ نوفل نے سوچا کہ ایسے خدا ترس آدمی کو دشمنی رکھنا بہت بڑا گناہ ہے۔ بجوں ہمیں اس کہانی سے یہ تعلیم ملتی ہے کہ ہم دوسروں کی بھلائی کے لیے اپنا سب کچھ قربان کر دیں یہی انسانیت کا سب سے بڑا تقاضہ ہے۔

शब्द = अर्थ

रद्दो बदल = उखाड़ पछाड़

लन तरानी = बड़ाई

फ़तह = कामयाबी

مشق

الفاظ

ردوبدل۔

لن ترانی۔

فتح۔

व्याकरण

बच्चो हमारे मुंह से कुछ अर्थ वाले शब्द निकलते हैं। जिन्हें कलमा कहते हैं। जैसे किताब, कलम, जूता, खाना आदि।

और कुछ बिना अर्थ वाले शब्द निकलते हैं, जिन्हें मुहमल कहते हैं।

जैसे, विताब, वलम, वूता, वाना।

आप अपनी कापी पर ऐसे दस मुहमल अल्फ़ाज लिखिए।

प्रश्न,, हमें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

प्रश्न,, झूठ बोलने वालों को बादशाह ने क्या सज़ा सुनाई?

ہمارے منہ سے کچھ معنی دار آوازیں نکلتی ہیں۔ انہیں کلمہ کہتے ہیں۔ جیسے کھانا، کپڑا، جوتا، قلم، وغیرہ۔

کچھ آوازیں بے معنی نکلتی ہیں جو کلمہ کے ساتھ ہی بولی جاتی ہیں۔ انہیں مہمل کہتے ہیں۔ جیسے، وانا، ویڑا، ووتا، ولم، وغیرہ۔

بچواپ ایسے ہی دس مہمل الفاظ اپنی کاپی میں تحریر کرو۔

سوال --- ہمیں دوسروں کے ساتھ کیسا سلوک کرنا چاہئے؟

جھوٹ بولنے والوں کو بادشاہ نے کیا سزا دی؟



विषय- उर्दू

पाठ- हुब्बे वतनकक्षा-7



प्रकरण- नज़्म

क्रमांक- 2

मिशन शिक्षण संवाद

कविता का सार نظم کا خلاصہ

बच्चों पिछले दो पाठ में हमने अपने वतन कविता की वह पंक्तियां पढ़ी जिनमें हाली ने अपने वतन हिंदुस्तान से बेइंतहा मोहब्बत का इजहार किया है और क़ौम की बदहाली का तज़करा बहुत दर्दनाक अंदाज में बयान किया है। आज हम इस नज़्म के आखिरी पंक्तियों का अध्ययन करेंगे इंतजार में हाल ही में क़ौम के नौजवानों को बेदार करने की कोशिश की है हाली फरमाते हैं कि अगर इज्जत चाहते हो तो अपने वतन के लोगों से मोहब्बत करो, जो क़ौम दुनिया में मुमताज़ होती है वह गरीबी में भी इज्जत पाती है वह दौर गुजर गया जब लोग अपनी जात और नस्ल पर गुरुर करते थे। अब वह दिन दूर नहीं जब बे हुनर इंसान को भीख भी नहीं मिलेगी।

بچوں پچھلے دو اسباق میں ہم نے حب وطن نظم کے وہ اشعار پڑھے جن میں حالی نے اپنے وطن ہندوستان سے والہانہ محبت کا اظہار کیا ہے۔ اور قوم کی بد حالی کا تذکرہ بہت پرسوز انداز میں بیان کیا ہے آج ہم اس نظم کے آخری اشعار کا مطالعہ کریں گے ان اشعار میں حالی نے قوم کے نوجوانوں کو بیدار کرنے کی کوشش کی ہے حالی فرماتے ہیں کہ اگر عزت چاہتے ہو تو اپنے وطن کے لوگوں سے محبت کرو جو قوم دنیا میں ممتاز ہوتی ہے وہ غریبی میں بھی عزت پاتی ہے وہ دور گزر گیا جب لوگ اپنی ذات اور نسب پر فخر کرتے تھے اب وہ دن دور نہیں جب بے ہنر انسان کو بھیک بھی نہیں ملے گی

अभ्यास कार्य

शब्द=अर्थ

मुबतज़िल=बे क़दर

मुमताज़=नुमायां

इफ़्तिख़ार=इज्जत

तरजीह=बरतरी

सय्यद=सरदार



مشق

الفاظ=معنی

مبتذل=بے قدر

ممتاز=نمایاں

افتخار=عزت

ترجیح=برتری

سید=سرदार

प्रश्न, कोई दिन में वह दौर भी आएगा
बे हुनर भीख भी न पाएगा।

हाली इन पंक्तियों में किसे बेदार कर रहे हैं?

नोट, बच्चे इस कविता के सार को अपने शब्दों में कापी पर लिखें।

سوال- کوئی دن میں وہ دور آئے گا
بے ہنر بھیک تک نہ پائیگا
حالی ان اشعار میں کسے بیدار کر رہے ہیں؟
نوٹ.. بچے اس نظم کا خلاصہ اپنے الفاظ میں کاپی پر لکھیں۔

9458278429



विषय- उर्दू

पाठ- सोहबत का असर कक्षा -7

प्रकरण- सोहबत

क्रमांक-11



मिशन शिक्षण संवाद

सारांश

خلاصہ کلام

बच्चों कल हमने इस पाठ के लेखक के बारे में मालूमात हासिल कीं। आज हम सबक के छोटा बेटा सलीम से लेकर जनाब वही चार लड़के तक के हिस्से का अध्ययन करेंगे। नज़ीर साहब ने इसमें बेटे और उसके वालिद के दरमियान गुफ्तगू को तहरीर किया है इस सबकसे हमें यह नसीहत मिलती है कि हमें अपने वालदेन का किस तरह अदब व एहताराम करना चाहिए वालदेन जिस बात का उपदेश और जिस से मना करें उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। इस बात चीत में वालिद

साहब ने यूं ही सलीम को बुलाया था। मगर देरी से उठने पर वह डरा हुआ था।

सलीम को खेल का बहुत शौक था मगर अचानक वो खेल से बेजार हो गया वालिद साहब इस बेज़ारी का कारण जानना चाहते थे। इस सबक से हमें यह भी नसीहत मिलती है कि हमें अपने बडों से किस तरह एहताराम से बात करना चाहिए। बेदारा के जगाने पर सलीम अदब से भयभीत हो गया था।

بچوں کل ہم نے اس سبق کے مصنف کے بارے میں معلومات حاصل کیں۔ آج ہم سبق کے چھوٹا بیٹا سلیم سے لے کر کر جناب وہی چار لڑکے تک حصے کا مطالعہ کریں گے۔ آگے نذیر صاحب نے اس میں بیٹے اور اس کے والد کے درمیان گفتگو کو تحریر کیا ہے۔ اس سبق سے ہمیں یہ نصیحت بھی حاصل ہوتی ہے کہ ہمیں اپنے والدین کا کس طرح ادب و احترام ملحوظ رکھنا چاہئے۔ والدین جس بات کا حکم دیں اور جس سے منع کریں اسے تسلیم و رضا قبول کر لینا چاہیے اس گفتگو میں حالانکہ والد صاحب نے یوں ہی سلیم کو طلب کیا تھا مگر تاخیر سے اٹھنے پر وہ خائف تھا سلیم کو کھیل کا بہت شوق تھا مگر اچانک وہ کھیل سے بیزار ہو گیا۔ والد صاحب اس بیداری کا سبب جاننا چاہتے تھے۔ اس سبق سے ہمیں یہ بھی نصیحت ملتی ہے کہ ہمیں اپنے بڑوں سے کس طرح احترام سے بات کرنا چاہیے بیدارا کے جگانے پر سلیم ادب سے خوفزدہ ہو گیا تھا۔

शब्द=अर्थ

बाला खाना=ऊपर का कमरा

तलब=बुलावा

कोठा=छत

माकूल=मुनासिब

गन्जफ़ा=एक खेल का नाम जो ताश की तरह खेला जाता है।

मुबतदी=शुरू करना

निस्बत=लगाओ

الفاظ=معنی

بالا خانہ=اوپر کا کمرہ

طلب=بلاوا

کوٹھا=چھت

معقول=مناسب

گنجفہ=ایک کھیل کا نام

جو تاश کی طرح کھیلا جاتا ہے

اس میں 96 پتے اور 8 رنگ ہوتے ہیں۔

اور 3 کھلاڑی ہوتے ہیں۔

مبتدی=شروع کرنا

نسبت=لگاؤ

प्रश्न,, सलीम को किसने बुलाया?

प्रश्न,, सलीम ने बेदारा से क्या मालूम

किया?

प्रश्न,, सलीम अपने पिता के पास जाने से क्यों डर रहा था?

سؤال,, سلیم کو کس نے طلب کیا؟

سؤال,, سلیم نے بیدارا سے کیا معلوم کیا؟

سؤال,, سلیم اپنے والد کے پاس جانے سے کیوں ڈر رہا تھا؟

9458278429



मिशन शिक्षण संवाद

लेखक का परिचय

مصنف کا تعارف

बच्चों आज हम मौलवी नजीर अहमद के नाविल से लिया गया एक सबक आमोज वाकिये को पढ़ेंगे। पहले हम नजीर अहमद साहब के बारे में जानेंगे। नजीर अहमद साहब उर्दू नाविलनवेसी के बानी समझे जाते हैं उन्होंने अपने नाविलों से समाजी इस्लाह का काम लिया है। उनकी जुबान बहुत सादा और बा मुहावरा होती है, जो सबक आज हम पढ़ेंगे यह सबक उनके एक नाविल तौबतन नुसुह से लिया गया है। इसके अलावा मरातुल उरूस, बिनातुन्नाश और रोयाए सादिका भी उनके मशहूर नाविल हैं। उनका इंतकाल सन 1912 में हुआ।

بچوں آج ہم مولوی نذیر احمد کے ناول سے لیا گیا ایک سبق آموز واقعہ پڑھیں گے۔ پہلے ہم نذیر احمد صاحب کے بارے میں جانیں گے نذیر احمد صاحب اردو ناول نویسی کے بانی سمجھے جاتے ہیں، انہوں نے اپنے ناولوں سے سماجی اصلاح کا کام لیا ہے ان کی زبان بہت سادہ اور بامحاورہ ہوتی ہے جو سبق ہم پڑھیں گے یہ سبق ان کے ایک ناول توبۃ النصوح سے لیا گیا ہے اس کے علاوہ مرآة العروس، بنات النعش، اور رویائے صادقہ بھی ان کے مشہور ناول ہیں ان کا انتقال 1912 میں ہوا۔

शब्द = अर्थ
सोहबत=मेल जोल
तौबतन नुसुह=सच्ची
तौबा
बिनातुन्नाश=सात
सितारें
रोयाए
सादिका=सच्चा

الفاظ = معنی
صحبت = मिल جول
توبۃ النصوح = سچی توبہ
بنات النعش = سات ستارے
رویائے صادقہ = سچا خواب

प्रश्न,, नेक सोहबत का असर के लेखक का नाम क्या है?
प्रश्न,, यह सबक नजीर साहब के किस नाविल से लिया गया है?
प्रश्न,, मौलवी नजीर साहब ने इसके अलावा और कौन कौन से नाविल लिखे हैं?

سوال.. نیک صحبت کا اثر کے مصنف کا نام بتائیں۔
سوال.. یہ سبق نذیر صاحب کے کس ناول سے ماخوذ ہے؟
مولوی نذیر احمد نے اسکے علاوہ اور کون کون سے ناول لکھے؟



विषय- उर्दू

प्रकरण- नज़्म

पाठ- बारिश का पहला कतरा

कक्षा-7

क्रमांक-14



मिशन शिक्षण संवाद

सारांश

خلاصہ

एक कतरा कि,..... जी पे खेल जाना

बच्चों अब तक हमने बारिश की बूंदों की बातचीत को पढ़ा। अब हम एक कतरा की हिम्मत और हौसले के बारे में जानेंगे। आपने देखा कि हर कतरा अपनी बे हिम्मती और कमजोरी को बता रहा था, कि मैं मामूली कतरा भला क्या इस गर्म और खुशक जमीन की प्यास बुझा पाऊंगा, उन्हीं में से एक कतरा ने हिम्मत दिखाई और बाकी कतरों को हौसला दिया, उसने कहा कि मेरे पीछे जमीन पर बरसो और मुर्दा जमीन में जान डाल दो। अगर हम सब मिलजुल कर जमीन पर बरसेंगे तो इस बंजर जमीन को हरा भरा कर देंगे हिम्मत बंधा कर वह खुद तन्हा ही जमीन की जानिब चल दिया।

اک قطرہ.....جی پہ کھیل جانا

بچوں اب تک ہم نے بارش کی بوندوں کا مکالمہ پڑھا۔ اب ہم ایک قطرے کی ہمت اور حوصلہ کے بارے میں جانیں گے۔ آپ نے دیکھا کہ ہر قطرہ اپنی بے ہمتی اور پسماندگی کا مظاہرہ کر رہا تھا کہ میں معمولی خطرہ بھلا کیا اس گرم اور خشک زمین کی پیاس بجھا پاؤں گا۔ انہی میں سے ایک قطرے نے ہمت دکھائی اور باقی بوندوں کو حوصلہ دیا، اس نے کہا کہ میرے پیچھے زمین پر برسو اور مردہ زمین میں جان ڈال دو، اگر ہم سب مل جل کر زمین پر برسنے لگے تو اس بंजर زمین کو ہرا بھرا کر دیں گے۔ ہمت بندھا کر وہ خود تنہا ہی زمین کی جانب روانہ ہو گیا۔

शब्द=अर्थ

मुहीत=घेरा

शनावर=पानी में तैरना

जवाद=बुलन्द हौसला

हम्मियत=गैरत

जां फशानी=हिम्मत



الفاظ=معنی

محیط=گھیرا

شناور=پانی میں تیرنا

جواد=بلند حوصلہ

حمیت=غیرت

جاں فشانی=ہمت

प्रश्न,,जो कतरा आगे बढ़ा वह कैसा था?

प्रश्न,, उसने बाकी कतरों से क्या कहा?

प्रश्न,, इन अशुआर से हमें क्या सबक मिलता है?

क्रमांक 13के उत्तर

(1) इस्माइल मेरठी

(2) मिट जाने का

(3) बारिश की बूंदों को



سوال..جو قطرہ آگے بڑھا وہ کیسا تھا؟

سوال..اس نے باقی قطروں سے کیا

کہا؟

سوال.. ان اشعار سے ہمیں کیا سبق

میلتا ہے؟

(1) اسماعیل میرٹھی

(2) فنا ہو جانے کا

(3) بارش کی بوندوں کو

9458278429



विषय- उर्दू

प्रकरण- नज़्म

पाठ- बारिश का पहला कक्षा -7
कतरा

क्रमांक - 15



मिशन शिक्षण संवाद

सारांश

خلاصہ

हर चन्द कि,..... कश्तियां तुम्हारी
 इस कविता से हमें एकता
 का संदेश मिलता है।
 कतरे की तरह अगर हर व्यक्ति
 समाज को बदलने की
 कोशिश करे तो हमारा समाज
 हर तरह की बुराई से साफ़ हो सकता है।
 कवि ने कतरे का उदाहरण
 देकर हमें यह सन्देश दिया है
 कि आपस में मिल जुलकर
 काम करने से हम हर कठिनाई को
 आसानी से हल कर सकते हैं।
 जिस तरह एक कतरे ने कमजोर
 होकर भी हिम्मत दिखाई
 और बंजर जमीन को भी हरा भरा कर दिया।
 इस तरह हम भी आगे बढ़कर
 अकेले भी इस समाज के भविष्य
 को उज्ज्वल बना सकते हैं।

بر چند کہ تھا..... کشتیاں تمہاری
 اس نظم سے ہمیں یکجہتی کا پیغام ملتا ہے۔
 قطرے کی طرح اگر ہر شخص معاشرے کو
 بدلنے کی کوشش کرے، تو ہمارا معاشرہ ہر
 طرح کے عیب سے پاک ہو سکتا ہے۔ شاعر نے
 قطرے کی مثال دے کر ہمیں یہ سبق دیا ہے کہ
 آپس میں مل جل کر کام کرنے سے ہم بڑی سے
 بڑی مشکل کو آسانی سے حل کر سکتے ہیں۔
 جس طرح ایک قطرے نے بے بضاعت ہونے کے
 باوجود ہمت دکھائی اور بنجر زمین کو سیراب
 کر دیا اسی طرح ہم بھی آگے بڑھ کر تنہا بھی
 معاشرے کا مستقبل روشن کر سکتے ہیں۔



مشق

الفاظ = معنی

بے بضاعت = مفلس

شجاعت = بہادری

خیابان = کھیت، کیاری

پائمال = برباد شدہ

قحط = کال

سوال -- بیابان کو کس نے

سیراب کیا؟

سوال -- بارش سے خلقت کو

فائدہ ہوا؟

اس نظم سے ہمیں کیا پیغام

ملتا ہے؟

ترتیب 14 کے جواب

(1) بہادر تھا۔

(2) آپ سب ہمت کریں۔

(3) ہمیں اپنی بے بضاعت پر ہمت نہیں

بارنا چاہیے۔

अभ्यास कार्य



शब्द = अर्थ
 बे बिजाअत = मुफलिस
 शजाअत = बहादुरी
 ख्याबां = खेत, क्यारी
 पाएमाल = बर्बाद शुदह
 कहत = काल

एकता में शक्ति



प्रश्न,,, बयाबां को किसने सैराब क्या?

प्रश्न,, बारिश से खलकत को क्या फ़ायदा हुआ?

प्रश्न,, इस नज़्म से हमें क्या पैगाम मिलता है?

क्रमांक 14 के उत्तर

- (1) बहादुर था।
- (2) आप सब हिम्मत करें।
- (3) हमें अपनी कमजोरी पर हिम्मत नहीं हारना चाहिए।

9458278429



मिशन शिक्षण संवाद

सारांश

خلاصہ

बच्चों यह नज़म इस्माइल मेरठी साहब ने लिखी है। स्माइल साहब बच्चों के शायर और अदीब की हैसियत से मशहूर हैं।
घनघोर घटा..... चमक रही थी।
नजम के उपरोक्त शयरो में शायर ने बारिश की बूंदों की बातचीत पेश की है, और इतनी खूबसूरत मंजर कशी की है, ऐसा महसूस होता है कि बारिश की बूंदे हकीकत में आपस में गुफ्तगू कर रही हैं। हर बूंद यह कह रही थी कि मैं तो एक मामूली कतरा हूँ भला खेतों की प्यास कैसे बुझा आ पाऊंगी। जमीन की तमाम चीजें गर्म हैं, मैं जहां गिरूंगी खुद ही फना हो जाऊंगी, मैं किस तरह दिलेरी दिखाऊँ।
इतनी बड़ी सर जमीन में मेरी बिसात ही क्या है।

بچو یہ نظم اسماعیل میرٹھی صاحب نے لکھی ہے اسماعیل صاحب بچوں کے شاعر اور ادیب کی حیثیت سے مشہور ہیں۔
گھنگھور گھٹا..... چمک رہی تھی
نظم کے بالا اشعار میں شاعر نے بارش کی بوندوں کا مکالمہ پیش کیا ہے۔ اور اتنی خوبصورت منظر کشی کی ہے، گویا ایسا محسوس ہوتا ہے، کہ بارش کی بوندیں حقیقت میں آپس میں گفتگو کر رہی ہیں ہر بوند یہ کہہ رہی تھی کہ میں تو ایک معمولی قطرہ ہوں، بھلا کھیتوں کی پیاس کیسے بجھاؤں گا۔ زمین کی تمام اشیاء گرم ہیں میں جہاں گر ونگی خود ہی فنا ہو جاؤں گی میں کسی طرح دلیری دکھاؤں۔ اتنی بڑی سرزمین میں میری بساٹ ہی کیا ہے۔



शब्द=अर्थ
सखावत=बरिश
हलावत=मिठास
बिसात=हस्ती
बाहम=आपस में
मक़बूल=पसंद

الفاظ=معنی
سخاوت=بخشش
حلاوت=مٹھاس
بساٹ=ہستی
باہم=آپس میں
مقبول=پسند

प्रश्न,, बारिश का पहला कतरा के शायर का नाम बताएं?
प्रश्न,, बारिश की बूंदों को क्या डर था?
प्रश्न,, शायर ने गरीब किसको कहा है?

سوال.. بارش کے پہلا قطرہ کے شاعر کا نام بتائیں؟
سوال.. بارش کی بوندوں کو کیا خوف تھا؟
سوال.. شاعر نے غریب کس کو کہا ہے؟

क्रमांक 12के उत्तर
(1) क्योंकि सलीम ने उन्हें कभी खेलते हुए नहीं देखा।
(2) बड़ों का सम्मान करना सीखा।
(3) नेक स्वभाव था।

فہرست 12 کے جواب
(1) کیوں کہ اس نے اپنے ساتھیوں کو کبھی کھیلتے ہوئے نہیں دیکھا۔
(2) بڑوں کا احترام کرنا سیکھا۔
(3) نیک اور شریف اخلاق تھا۔



विषय- उर्दू

पाठ- बहस व तकरारकक्षा -7



प्रकरण- मज़मून

क्रमांक-16

मिशन शिक्षण संवाद

लेखक परिचय

مصنف کا تعارف

सर سैयद अहमद خان हिंदुستان की बहुत ही मशहूर व्यक्तित्व में अपना एक अलग मुकाम रखते हैं। उनका नाम सैयद अहमद था उनकी शैक्षिक खिदमातत की वजह से हुकूमत बरतानिया ने उन्हें सर के खिताब से नवाजा सर सैयद 1817 में पैदा हुए। सर सैयद हिंदुस्तानियों में तालीम को बढ़ावा देने की अनथक कोशिश करते रहे। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी उनकी इसी कोशिश का एक नमूना है। सर सैयद ने कई किताबें लिखी उन्होंने एक रिसाला तहजीब उल अखलाक जारी किया था यह मज़मून इसी रिसाले में शाय हुआ था। सय्यद अहमद ने एक किताब तारीख के खुतबात आशा आसारुस्सनादीद तहरीर की जिसमें मोहल्लात की दीवारों पर लिखी तहरीर को शाय किया था।

سر سید احمد خان ہندوستان کی مشہور و معروف شخصیات میں اپنا ایک منفرد مقام رکھتے ہیں۔ ان کا نام سید احمد تھا۔ ان کی تعلیمی خدمات کی وجہ سے حکومت برطانیہ نے انہیں سر کے خطاب سے نوازا سر سید 1817 عیسوی میں پیدا ہوئے۔ سر سید ہندوستانیوں میں تعلیم کو فروغ دینے کی کوشش کرتے رہے۔ علی گڑھ مسلم یونیورسٹی ان کی اسی کوشش کا نادر نمونہ ہے۔ سر سید نے کئی کتب تصنیف کیں۔ انہوں نے ایک رسالہ تہذیب الاخلاق جاری کیا تھا۔ یہ مضمون اسی رسالے میں شائع ہوا تھا سید احمد نے ایک جامع کتاب تاریخ کے خطبات آثار الصنادید بھی تحریر کی جس میں محلات کی دیواروں پر لکھی تحریروں کو شائع کیا ہے۔

अभ्यास कार्य

- शब्द= अर्थ
- शख्सियात=
- शख्सियत का
- बहुवचन
- मुनफ़रिद=अलग
- शाय=छापा हुआ
- फ़रोग=बढ़ावा
- तस्नीफ़=लिखी हुई
- किताब



مشق

- الفاظ = معنی
- شخصیات۔
- شخصیت کی جمع =
- منفرد۔ = الگ
- شائع۔ = چھاپا ہوا
- فروغ۔ = بڑھاوا
- تصنیف۔ = لکھی ہوئی
- کتاب

سوال,, سر سैयद का असली नाम क्या था?

प्रश्न,, सर सैयद को सर का खिताब किसने दिया?

प्रश्न,, सर सैयद कब पैदा हुए?

प्रश्न,, शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने किस नाम से यूनिवर्सिटी बनाई?

क्रमांक 15 के उत्तर

- (1) बारिश की बूंदों ने।
- (2) सैराब हो गई।
- (3) हमें मुश्किल समय में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

سوال.. سر سید کا اصل نام کیا تھا؟

سوال.. سر سید کو سر کا خطاب کس نے دیا؟

سوال.. سر سید کب پیدا ہوئے؟

تعلیم کو فروغ دینے کے لئے انہوں نے کس نام سے یونیورسٹی بنائی؟

ترتیب 15 کے جواب۔

- (1) بارش کی بوندوں نے
- (2) سیراب ہو گئی
- (3) ہمیں ہمت سے ہر مشکل کا مقابلہ کرنا چاہئے۔



विषय- उर्दू

पाठ- बहस व तकरार

कक्षा-7



प्रकरण- मज़मून

क्रमांक- 18

मिशन शिक्षण संवाद

सारांश

خلاصہ

बच्चों लेखक अब तमाम अहले वतन को एक नसीहत दे रहे हैं। वह अहल ए वतन से मुखातिब होकर कहते हैं कि ऐ मेरे अजीज हम वतनों जब तुम किसी के बर खिलाफ कोई बात कहनी चाहो या किसी की तरदीद का इरादा करो तो खुश अखलाकी और तहजीब को हाथ से मत जाने दो, जब कि तुम मजलिस में हो जहां मुख्तलिफ राय के आदमी मिले हुए हैं, तो जहां तक मुमकिन हो झगड़े तकरार और मुबाहिसे को आने मत दो, क्योंकि जब तकरीर और बढ़ जाती है तो दोनों को नाराज कर देती है। मैं चाहता हूं कि मेरे हमवतन इस बात पर गौर करें कि इन मजलिसों में आपस के मुबाहिसे और तकरार का अंजाम क्या होता है।

بچوں مصنف اب تمام اہل وطن کو ایک نصیحت دے رہے ہیں۔ وہ اہل وطن سے مخاطب ہو کر کہتے ہیں، کہ اے میرے عزیز ہم وطنو جب تم کسی کے بر خلاف کوئی بات کہنا چاہو یا کسی کی تردید کا ارادہ کرو تو خوش اخلاقی اور تہذیب کو ہاتھ سے مت جانے دو، جب کہ تم مجلس میں ہو جہاں مختلف رائے کے آدمی ملے ہوئے ہیں، تو جہاں تک ممکن ہو جگڑے تکرار اور مباحثے کو آنے مت دو، کیونکہ جب تقریر بڑھ جاتی ہے تو دونوں کو ناراض کر دیتی ہے۔ میں چاہتا ہوں کہ میرے ہم وطن اس بات پر غور کریں کہ ان مجلسوں میں آپس کے مباحثہ اور تکرار کا انجام کیا ہوتا ہے۔

अभ्यास कार्य



शब्द=अर्थ

इखितलाफ=खिलाफ करना

तरदीद=रद्द करना

हनीफ=सही

मआज़रत=माफ़ी

प्रश्न,, ना मुहज़ज़ब आदमियों की मजलिस में किस तरह की तकरार होती है?

प्रश्न,, लेखक हमें क्या पैगाम दे रहा है?

प्रश्न,, जब तकरीर बढ़ती है तो उसका अंजाम क्या होता है?



مشق

الفاظ=معنی

اختلاف=خلاف کرنا

تردید=رد کرنا

حنیف=صحیح

معذرت=معافی

سوال..نا مہذب آدمیوں کس طرح تکرار ہوتی ہے؟

سوال..مصنف ہمیں کیا پیغام دے رہا ہے؟

سوال..جب تقریر بڑھتی ہے تو اسکا

क्रमांक 17के उत्तर

(1) कुत्तों की

(2) ना मुहज़ज़ब लोग

(3) अदब के साथ



انجام کیا ہوتا ہے؟ ترتیب 17 کے جواب

(1) کتوں کی

(2) نا مہذب قسم کے لوگ

(3) ادب کے ساتھ۔



विषय- उर्दू

पाठ- खोटा सोना

कक्षा-7

प्रकरण- ڈراما

क्रमांक- 37



میشن شیکشن سباده

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچوں کل ہم نے اب کو اس ڈرامے کے مصنف کے بارے میں بتایا۔ آج ہم آپ کو اس ڈرامے کی جو کہانی ہے اس کے بارے میں بتائیں گے۔ اس میں چھ کردار دئے گئے ہیں، جن میں دو بدمعاش ہیں۔ جب بدمعاش آپس میں ایک جوہری کو بیوقوف بنانے کی ترکیب سوچ رہے تھے تب ایک کانسٹیبل ان کی یہ باتیں سن رہا تھا وہ دونوں بدمعاش ایک جوہری کو نقلی سونا فروخت کر دیتے ہیں اور جب جوہری کے والد کو پتہ چلتا ہے تو وہ کانسٹیبل کے کو لے کر بدمعاشوں کے پاس جاتا ہے مگر وہ اس بات سے انکار کر دیتے ہیں یہ نقلی سونا انہوں نے فروخت کیا ہے۔ کیوں کہ جوہری کے لڑکے نے بھی چوروں کے ساتھ بے ایمانی کی تھی اس وجہ سے الٹا قصور چوروں نے جوہری پر لگا دیا۔ اس ڈرامے سے ہمیں یہ سبق ملتا ہے کہ ہمیں لوگوں کو فریب نہیں دینا چاہیے ورنہ ہم بھی فریب کا شکار ہو سکتے ہیں۔

بच्चों कल हमने आपको इस ड्रामे के मुसन्निफ (लेखक) के बारे में बताया। आज हम आपको इस ड्रामे की जो कहानी है उसके बारे में बताएंगे। इसमें छह किरदार दिए गए हैं जिसमें दो बदमाश हैं। जब दो बदमाश आपस में एक जोहरी को बेवकूफ बनाने की तरकीब सोच रहे थे तब एक कांस्टेबल उनकी यह बातें सुन रहा था वह दोनों बदमाश एक जोहरी को नकली सोना फरोख्त (बेच) कर देते हैं और जब जोहरी के वालिद को पता चलता है तो वह कांस्टेबल को लेकर इन बदमाशों के पास जाता है मगर वह इस बात से इंकार कर देते हैं यह नकली सोना उन्होंने फरोख्त किया है। क्योंकि जोहरी के लड़के ने भी चोरों के साथ बेईमानी की थी इस वजह से उल्टा कुसूर चोरों ने जोहरी पर लगा दिया। इस ड्रामे से हमें यह सबक मिलता है कि हमें लोगों को फरेब नहीं देना चाहिए वरना हम भी फरेब का शिकार हो सकते हैं।

अभ्यास कार्य

शब्द=अर्थ

जौहरी=सुनार

कान्सिटबल=पुलिस

का अहलकार

फ़रोख्त=बेचना

फ़रेब=धोखा

कुसूर=गलती



خوٹا سونا

مشق

الفاظ=معنی

جوہری=سناور

کانسٹیبل=پولیس

کا اہل کار

فروخت=بیچنا

فریب=دھوکا

قصور=غلطی

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

پرسن، بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح

سوال۔۔ بدمعاشوں نے جوہری کو کس طرح دھوکا دیا؟

سوال۔۔ چندر کانت آسانی سے کیوں دھوکا کھا گیا؟

سوال۔۔ بدمعاش کیسے پکڑے گئے؟

سوال۔۔ تمکو اس ڈرامے سے کیا سبق ملتا ہے؟

ترکیب 37 کے جواب

(1) 1897 عیسوی کو۔ (2) ڈاکٹر ذاکر

حسین۔

(3) صدر، راشٹریتی۔ (4) ڈرامے اور

کہانیوں کے ذریعے

9458278429



विषय- उर्दू

पाठ-खोटा सोना कक्षा-7

प्रकरण-मज़मून

क्रमांक- 37



मिशन शिक्षण संवाद

लेखक का परिचय

مصنف کا تعارف

بچو آج ہم آپ کو ایک عظیم شخصیت کے بارے میں بتائیں گے۔ یہ عظیم شخصیت تھے جناب ڈاکٹر ذاکر حسین خان جو 1897 عیسوی کو پیدا ہوئے۔ ڈاکٹر ذاکر صاحب معروف ماہر تعلیم تھے ان کو بچوں کی ابتدائی تعلیم سے لے کر اعلیٰ تعلیم تک کا تجربہ تھا۔ جامعہ ملیہ اسلامیہ دہلی انہی کی کوشش کا ثمرہ ہے۔ گاندھی کی بیسک ایجوکیشن میں شریک تھے۔ تعلیم کے ساتھ ملک کی خدمت بھی انجام دیتے رہے ڈاکٹر ذاکر علی گڑھ مسلم یونیورسٹی کے وائس چانسلر ہندوستان کے نائب صدر اور پھر صدر ہوئے۔ بچوں کے لیے انہوں نے بہت سے قصے اور ڈرامے لکھے ہیں جو بہت دلچسپ اور نتیجہ خیز ہیں یہ کھوٹا سونا بھی ان کا ایک ڈرامہ ہے۔ ان کے ڈرامے انسانی قدروں کو قائم رکھنے میں بہت معاون ثابت ہوتے ہیں۔ ہماری اخلاقی کوتاہیوں کو وہ بہت مؤثر انداز میں منظر عام پر لاتے ہیں۔ ان کا انتقال 1969 کو ہوا۔

بच्चों आज हम आपको एक अजीम शख्सियत के बारे में बताएंगे। यह अजीम शख्सियत थे जनाब डॉक्टर जाकिर हुसैन खां, जो 1897 को पैदा हुए। जाकिर साहब मशहूर माहिर ए तालीम (शिक्षा में निपुण) थे। उनको बच्चों की तालीम से लेकर आला तालीम तक का तजुर्बा था। जामिया मिलिया इस्लामिया दिल्ली उन्हीं की कोशिश का नतीजा है। वह महात्मा गांधी की बेसिक एजुकेशन में शरीक रहे। तालीम के साथ मुल्क की खिदमत भी वह अंजाम देते रहे। डॉ जाकिर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर, हिंदुस्तान के नायब सदर, और फिर सदर(राष्ट्रपति) हुए बच्चों के लिए उन्होंने बहुत से किससे और ड्रामे लिखे हैं जो बहुत दिलचस्प और नतीजा खैज़ हैं। यह सबक खोटा सोना भी उनका एक ड्रामा है। उनके ड्रामे इंसानी कदरों का कायम रखने में बहुत असर रखते हैं। हमारी अखलाकी गलतियों को बहुत असरदार अंदाज में सामने लाते हैं। उनका इंतकाल 1969 को हुआ।

अभ्यास कार्य



शब्द=अर्थ

इब्तदाई=शुरुआती

मारूफ़=मशहूर

समरा=नतीजा

एजुकेशन=शिक्षा

मुआविन=मददगार

मौअस्सर=असरदार



مشق

الفاظ=معنی

معروف=مشهور

ابتدائی=شروعاتی

ثمرہ=نتیجہ

ایجوکیشن=تعلیم

معاون=مددگار

مؤثر=اثر انداز

سوال,, ڈاکٹر جاکیر حسین کب پیدا ہوئے؟

جواب (1) تلسی داس

سوال.. ڈاکٹر ذاکر حسین کب پیدا ہوئے؟

سوال,, جामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय किसकी कोशिश का नतीजा है?

(2) بالمیکی

سوال.. جامعہ ملیہ اسلامیہ دہلی کس کی کوشش سے وجود میں آیا؟

سوال,, ڈاکٹر جاکیر ہمارے ملک کے کس پد پر कार्यरत رہے؟

(3) رامائن

ڈاکٹر ذاکر ہمارے ملک کے کس عظیم عہدے پر فائز رہے؟

سوال,, ہماری अखलाकी गलतियों का वह किस तरह सामने लाते हैं?

(4) رام اور سیتا

سوال.. ہماری اخلاقی خامیوں کو وہ اور پانڈوؤں کے کس طرح منظر عام پر لاتے ہیں؟

(5) کوروو

درمیان

9458278429



विषय- उर्दू

पाठ- रामायण और महाभारत

प्रकरण- मजमून

क्रमांक- 36



मिशन शिक्षण संवाद

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچوں ہم نے آپ کو اب تک بتایا کہ آریہ کس طرح ہندوستان میں آئے اور وہ کس کو مقدس سمجھتے تھے۔ وہ اپنے شہروں کو اندو کا دیس بھی کہتے تھے رامائن میں جس میں رام سیتا اور لنکا کے راجہ راوَن کا جنگ کا تذکرہ ہے۔ اس کتاب کو بالمیکی نے سنسکرت زبان میں لکھا تھا بعد میں اس کے ترجمے ہوئے جس میں معروف ترجمہ تلسی داس کا رام چرت مانس ہے رامائن مزے دار کہانیاں سے بھری پڑی ہے۔ رامائن کے کافی عرصے بعد یہ مہابھارت لکھی گئی مہابھارت ایک ضخیم کتاب ہے۔ اس میں اس جنگ کا ذکر ہے جو آریوں میں بی لڑی گئی تھی۔ ان سب سے بڑھ کر تو بات یہ ہے کہ اس کتاب میں وہ عالی شان نظم ہے جس کو بھگوت گیتا نے کہتے ہیں۔ اگرچہ یہ کتابیں صدیوں پہلے لکھی گئیں مگر وہ ہندوستان میں آج بھی زندہ ہیں اور بچہ بچہ ان سے واقف ہے۔

بچوں ہم نے آپ کو اب تک بتایا کہ آریہ کس طرح ہندوستان میں آئے اور وہ کس کو مقدس سمجھتے تھے۔ وہ اپنے شہروں کو اندو کا دیس بھی کہتے تھے رامائن میں جس میں رام سیتا اور لنکا کے راجہ راوَن کا جنگ کا تذکرہ ہے۔ اس کتاب کو بالمیکی نے سنسکرت زبان میں لکھا تھا بعد میں اس کے ترجمے ہوئے جس میں معروف ترجمہ تلسی داس کا رام چرت مانس ہے رامائن مزے دار کہانیاں سے بھری پڑی ہے۔ رامائن کے کافی عرصے بعد یہ مہابھارت لکھی گئی مہابھارت ایک ضخیم کتاب ہے۔ اس میں اس جنگ کا ذکر ہے جو آریوں میں بی لڑی گئی تھی۔ ان سب سے بڑھ کر تو بات یہ ہے کہ اس کتاب میں وہ عالی شان نظم ہے جس کو بھگوت گیتا نے کہتے ہیں۔ اگرچہ یہ کتابیں صدیوں پہلے لکھی گئیں مگر وہ ہندوستان میں آج بھی زندہ ہیں اور بچہ بچہ ان سے واقف ہے۔

अभ्यास कार्य

शब्द=अर्थ

तजकरा=जिक्र

मारूप=प्रसिद्ध

जखीम=मोटी

मुतास्सिर=दिल से

लगना

वाक़िफ़=जानना



مشق

لفاظ=معنی

تذکرہ=ذکر

معروف=مشہور

ضخیم=موٹی

متاثر=دل سے لگنا

واقف=جاننا

प्रश्न,, रामचरितमानस किसने लिखी?

प्रश्न,, सबसे पहले रामायण के लेखक कौन हैं?

प्रश्न,, रामायण पहले लिखी गई या महाभारत?

प्रश्न,, रामायण में किसका जिक्र है?

प्रश्न,, महाभारत किनके बीच हुई?

क्रमांक 35 के उत्तर

(1) रामायण और महाभारत।

(2) रज्मिया अंदाज में

(3) चांद को।(4) चांद की शकल के।

जواب (1) रामائن اور مہابھارت

(2) رزمیہ انداز میں

(3) چاند کو۔(4) چاند کی شکل کے۔

سوال.. رام چرت مانس کس نے لکھی؟

سوال.. سب سے پہلے رامائن کے

مصنف کون تھے؟

سوال.. رامائن پہلے لکھی گئی یا

مہابھارت؟

سوال.. رامائن میں کس کا ذکر ہے؟

سوال.. مہابھارت کس کے درمیان

ہوئی؟

9458278429

تسلیم رجا خاں

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-



विषय- उर्दू

पाठ- रामायण
और
महाभारत

कक्षा-7



प्रकरण- मज़मून

क्रमांक-34

मिशन शिक्षण संवाद

लेखक का परिचय

مصنف کا تعارف

بجو آج ہم آپ کو ہندوستان کے عظیم وزیر اعظم کے بارے میں معلومات فراہم کریں گے۔ پنڈت جواہر لال نہرو ہمارے ملک ہندوستان کے پہلے وزیراعظم تھے یہ کشمیری پنڈت ہیں۔ جب کشمیری حکمرانوں کے ظلم و ستم سے بیزار ہو کر جلاوطن ہوئے تو ان خاندانوں میں انکا گھرانہ بھی شامل تھا جو الہ آباد میں آکر مقیم ہوا۔ ان کے والد موتی لال نہرو تھے۔ ان کے ایک بیٹی جن کا نام اندرا گاندھی تھا وہ بعد میں ہمارے ملک کی وزیر اعظم بنیں۔ یہ سبق جواہر لال کی مشہور کتاب "باپ کے خط بیٹی کے نام" سے لیا گیا اس میں پنڈت جی نے رامائن اور مہابھارت کے بارے میں بتایا ہے اور ہندوستان کی پرانی تاریخ کی جھلک دکھائی۔ انگریزوں کے دور میں جب جواہر لال نہرو جیل میں تھے تو وہ اپنی بیٹی اندرا پر یہ درسی (اندرا گاندھی) کو یہ خط جیل سے بھیجا کرتے تھے۔ بعد میں یہ خط کتابی شکل میں شائع ہوئے۔ جواہر لال نہرو کا انتقال 27 مئی 1964 کو ہوا۔

بच्चوں آج ہم آپ کو ہندوستان کے اجماعی وزیر اعظم (مہانہ پراধান منتری) کے بارے میں مالومات فراہم (جانکاری) کریں گے۔ پنڈت جواہر لال نہرو ہمارے ملک ہندوستان کے پہلے وزیر اعظم تھے یہ کشمیری پنڈت ہیں۔ جب کشمیری حکمرانوں کے ظلم و ستم سے بیزار ہو کر جلاوطن ہوئے تو ان خاندانوں میں انکا گھرانہ بھی شامل تھا جو الہ آباد میں آکر مقیم ہوا۔ ان کے والد موتی لال نہرو تھے۔ ان کے ایک بیٹی جن کا نام اندرا گاندھی تھا وہ بعد میں ہمارے ملک کی وزیر اعظم بنیں۔ یہ سبق جواہر لال کی مشہور کتاب "باپ کے خط بیٹی کے نام" سے لیا گیا اس میں پنڈت جی نے رامائن اور مہابھارت کے بارے میں بتایا ہے اور ہندوستان کی پرانی تاریخ کی جھلک دکھائی۔ انگریزوں کے دور میں جب جواہر لال نہرو جیل میں تھے تو وہ اپنی بیٹی اندرا پر یہ درسی (اندرا گاندھی) کو یہ خط جیل سے بھیجا کرتے تھے۔ بعد میں یہ خط کتابی شکل میں شائع ہوئے۔ جواہر لال نہرو کا انتقال 27 مئی 1964 کو ہوا۔

अभ्यास कार्य



शब्द=अर्थ

फ़राहम=हासिल

वज़ीर

आज़म=प्रधानमंत्री

मुक्तीम=बसना

शाए=छपना

माखूज़=लिया गया



مشق

الفاظ=معنی

فراہم=حاصل

وزیراعظم=پردہان منتری

مقیم=بسنا

شائع=چھینا، ظاہر کرنا

ماخوذ=لیا گیا

پرسن، ہندوستان کے پہلے وزیر اعظم آجیم کے نام بتائیں۔

پرسن، اہاہاہاہا سے پہلے جواہر لال نہرو کا خاندان کہاں آباد تھا؟

پرسن، اندیرا گاندھی کا پورا نام کیا تھا؟

پرسن، یہ سبق جواہر لال نہرو کی کس کتاب سے لیا گیا ہے؟

کریماک 33 کے ائئر

(1) شاعر اور ادیب۔ (2) مسلمانوں نے

موسلموں نے

(3) پنجابی زبان کا۔ (4) عربی،

فارسی، ترکی، ہندی،

سوال۔ ہندوستان کے پہلے وزیراعظم کا نام بتائیں۔

سوال۔ الہ آباد سے قبل جواہر لال نہرو کا خاندان کہاں آباد تھا؟

سوال۔ اندرا گاندھی کا پورا نام کیا تھا؟

سوال۔ یہ سبق جواہر لال کی کس کتاب سے ماخوذ ہے؟

ترتیب 33 کے جواب

(1) شاعر اور ادیب۔ (2) مسلمانوں نے

(3) پنجابی زبان کا۔ (4) عربی،

فارسی، ترکی، ہندی،

9458278429

تسلیم رجا خا

نیرماں کارے کرنے والے شیکک کا نام-



पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

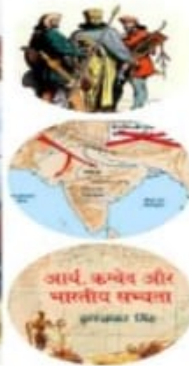
بجو کل ہم نے آپ کو جواہر لال نہرو کے بارے میں معلومات دیں۔ آج ہم آپ کو اس خط کے بارے میں بتائیں گے جو انہوں نے اپنی بیٹی اندرا گاندھی کو لکھے۔ وہ خط میں تاریخی پہلو کو نمایاں کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ جب ویدوں کا زمانہ گزر گیا اس کے بعد دو بڑی رزمیہ نظمیں لکھی گئیں جو رامائن اور مہابھارت کے نام سے موسوم ہوئیں اس رزمیہ دور میں آریہ لوگ تمام شمالی ہندوستان میں کوہ ہندھیا چل تک پھیل گئے۔ اگر آپ ہندوستان کے نقشے پر نظر ڈالیں تو آپ کو تعجب ہوگا کہ ہمالیہ اور ہندھیا چل کے درمیان اس علاقے کی شکل آریہ ورت کہتے تھے بلال کی نظر آئے گی۔ کیونکہ یہ لوگ بلال کے بڑے گرویدہ تھے اور وہ ہر اس جگہ کو مقدس سمجھتے تھے جس کی شکل بلال جیسی ہوتی تھی۔ ان کے بڑے شہر بلال کی شکل کے ہوتے تھے جیسے بنارس اور الہ آباد گنگا کی شکل بھی بلال ہی کی سی بن جاتی ہے۔

بچوں کल हमने आपको जवाहरलाल नेहरू के बारे में मालुमात दी। आज हम आपको इस खत के बारे में बताएंगे जो उन्होंने अपनी बेटी इंदिरा गांधी को लिख वह खत में तारीखी पहलू (ऐतिहासिक महत्व) हुए कहते हैं कि जब वेदों का जमाना गुजर गया उसके बाद दो बड़ी रज़मिया नज़में (वह कविता जिसमें युद्ध में फ़ौजियों के कारनामे बढ़ा चढ़ाकर लिखे जाते हैं) में लिखी गई जो रामायण और महाभारत के नाम से मशहूर हुई। इस रज़मिया दौर में आर्य लोग तमाम शुमाली हिंदुस्तान में कोह (पहाड़) विंध्याचल तक फैल गए अगर आप हिंदुस्तान के नक्शे पर नजर डालें तो आपको ताज्जुब (आश्चर्य) होगा कि हिमालय और विंध्याचल पहाड़ों के दरमियान इसी इलाके की शक्ल जिसे आर्यव्रत कहते थे हिलाल (चांद) की नजर आएगी क्योंकि आर्य लोग हिलाल के बड़े गर्वीदा थे और वह हर उस जगह को मुकद्दस (पवित्र) समझते थे जिसकी शक्ल हिलाल जैसी होती थी। उनके बड़े शहर हिलाल की शक्ल के होते थे बनारस और इलाहाबाद में गंगा की शक्ल हिलाल ही सी किती बन जाती है।

अभ्यास कार्य

शब्द=अर्थ

रज़मिया=वह कविता जिसमें युद्ध में फ़ौजियों की बहादुरी के कारनामे बढ़ा चढ़ाकर बयान किए जाते हैं।
मौसूम=नाम दिया गया
कोह=पहाड़
दरमियान=बीच में
हिलाल=चांद
मुकद्दस=पवित्र
गरवीदा=दीवाने



مشق

معنی
وہ نظم جس میں فوجیوں کے جوہر بیان کئے جاتے ہیں۔
نام دیا گیا۔
بیچ میں
پاک، قابل احترام
دیوانے

سوال,, इस खत में किन दो किताबों का जिक्र है?

سوال.. اس خط میں کن دو کتابوں کا ذکر ہے؟

سوال,, रामायण और महाभारत कविता की किस अंदाज पर लिखी गई?

سوال.. رامائن اور مہابھارت نظم کی کس صنف میں لکھی گئیں؟

سوال,, आर्य किस को मुकद्दस (पवित्र) समझते थे?

سوال.. آریہ کس کو مقدس سمجھتے تھے؟

سوال,, बनारस और इलाहाबाद में गंगा किसकी शक्ल बनाते हैं?

سوال.. بنارس اور گنگا کس کی شکل بناتے ہیں؟

क्रमांक 34 के उत्तर

ترتيب 34 کے جواب

(1) जवाहरलाल नेहरू (2) कश्मीर में (3) इन्दिरा प्रिय दर्शनी (4) बाप के खत बेटी के नाम।

(1) جواہر لال نہرو۔ (2) کشمیر میں (3) اندرا پر یہ درشنی (4) باپ کے خط بیٹی کے نام



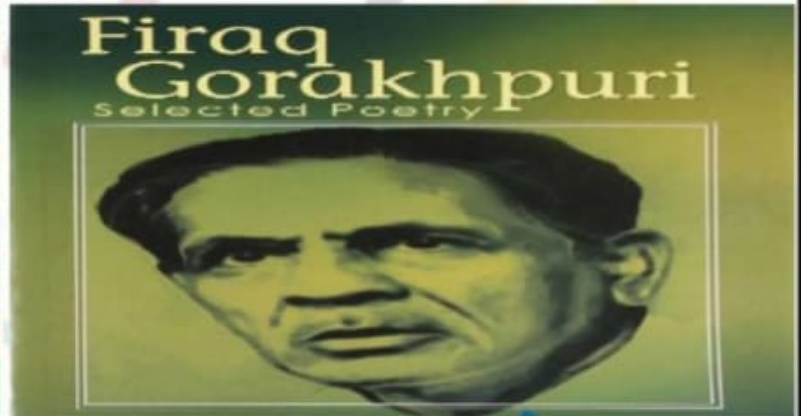
नज़म का खुलासा (कविता का सारांश)

मिशन शिक्षण संवाद

نظم کا خلاصہ

بجو فراق گورکھپوری اس دور کے مشہور شاعر ہیں۔ فراق کا پورا نام رگھو پتی سہائے تھا۔ وہ ہندی انگریزی سنسکرت وغیرہ کی زبانوں کے ماہر ہیں۔ الہ آباد یونیورسٹی میں انگریزی کے معلم تھے۔ اردو زبان سے انہیں بے پناہ محبت تھی۔ انہوں نے نہ نثر و نظم دونوں میں بہت سی کتابیں لکھی ہیں۔ ان کی یہ نظم بند کے بچے ان کی ایک مشہور نظم ہے جن کے کچھ اشعار کا خلاصہ ہم آپ کو بتا رہے ہیں۔ فراق صاحب ان اشعار میں ہندوستان کے پرانے اور پر مسرت دور کا ذکر کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ آپ کو یاد ہے کہ یہ بند کس کس عظیم شخصیتوں کا گہوارہ ہے یہاں رام لکشمی اور کرشن کا بچپن گزرا ہے یہاں سیتا اور رادھا بھی گڑیوں سے کھیلی ہیں۔ دریاؤں پہاڑ یہی نظارے تھے اسی سرزمین سے تانسن، غالب و اقبال میر و حالی جیسے معروف شاعر اور فن کار کا بچپن گزرا ہے اگر ہم حساب کریں ان دس کروڑ بچوں کا جو بند کی امانت ہیں۔

بچوں فیراک گورکھپوری اس دور کے مشہور شاعر ہیں۔ فیراک ساہب کا پورا نام رघुपति सहाय था। वह हिंदी अंग्रेजी संस्कृत वगैरह कई जुबानों के माहिर हैं। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के उस्ताद थे। उर्दू जबान से उन्हें बेपनाह मोहब्बत थी उन्होंने नस्र (गद्यांश) नज़म दोनों में बहुत सी किताबें लिखी हैं उनकी यह नज़म हिंद के बच्चे उनकी एक मशहूर नज़म है। जिनके कुछ इशआर का खुलासा हम आपको बता रहे हैं। फ़िराक साहब इन अशआर में हिंदुस्तान के पुराने पूर मसरत (खुशियों से भरा) दौर का जिक्र करते हुए कहते हैं कि आपको याद है कि यह हिन्द किन किन शख्सियतों का गहवारा (परवरिश की जगह) रहा है या राम लक्ष्मण और कृष्ण का बचपन गुजरा है यहां सीता और राधा भी गलियों में खेली हैं यही दरिया व पहाड़ यही नजारे थे इसी सरजमीन से तानसेन व इकबाल मीर व हाली जैसे मारुफ़ शायर फनकारों का बचपन गुजरा है। अगर हम हिसाब करें इन 10 करोड़ बच्चों का जो हिंद की अमानत हैं।



अभ्यास कार्य

- शब्द=अर्थ
नस्र=वह लेख जो कविता न हो
मसरत=खुशी
फ़ज़ा=माहौल
गहवारा=परवरिश की जगह
दयार=घर, इलाका
हमदम=जीवन का साथी
प्रश्न,, फ़िराक साहब का पूरा नाम क्या था?
प्रश्न,, फ़िराक साहब कहां के उस्ताद थे?
प्रश्न,, फ़िराक साहब किस ज़बान के शायर थे?
प्रश्न,, यह नज़म हमें किस दौर की याद दिलाती है?

ترتيب 29 کے

جواب

(1) اپنی فوج

کے ساتھ

(2) سادھو سے

(3) دوسروں

کی خدمت کے

لئے

(4) ہاں مطمئن

ہو گیا

مشق

- الفاظ=معنی
نثر=وہ عبادت جو نظم نہ ہو۔
مسرت=خوشی
فضا=ماحول
گہوارہ=پرورش کی جگہ
دیار=گھر، علاقہ۔
ہمدم=زندگی کا ساتھی
سوال..فراق صاحب کا پورا نام کیا تھا؟
سوال..فراق صاحب کہاں کے استاد تھے؟
سوال..فراق صاحب کس زبان کے شاعر تھے؟
سوال..یہ نظم ہمیں کس زمانے کی یاد دلاتی ہے؟

458278429



मिशन शिक्षण संवाद

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچو ہم نے اب تک آپ کو بتایا کہ کیسے اردو زبان اپنے ابتدائی دور میں مختلف جگہوں اور زبانوں سے مانوس ہو کر دلی تک کھڑی بولی کی شکل میں پہنچی۔ مسلمان جو باہر سے یہاں آئے انہوں نے اس ملک اور یہاں کی زبانوں کو بہت محبت سے قبول کیا اور یہیں مر کر دفن بھی ہو گئے۔ وہ بادشاہ بھی تھے اور فقیر بھی۔ ایسے ہی ایک فقیر (جن کا نام امیر خسرو تھا) نے یہاں کی زبان میں شاعری کی جو آج تک زبان زد عام ہے۔ انہوں نے پہیلیاں اور گیت لکھے پہلے اس اردو کو ہندی نام دیا گیا پھر اس کے رسم الخط اور لشکری زبان ہونے کی وجہ سے اردو نام سے تعبیر کیا گیا اردو لفظ کے معنی ہیں لشکر فوج یہ لفظ ترکی زبان کا ہے اس طرح اردو دہلی کے قریب پیدا ہوئی اور نکھرنے لگی جب دکن اور گجرات میں اردو زبان کا بول بالا ہوا تو اسے دکنی زبان اور گجراتی زبان بھی کہنے لگے۔ تو بچو اس طرح ہمارے ملک میں اس خوبصورت دلنشین زبان کی نشوونما ہوئی اور آج اپنے عروج پر اپنی لطافت اور تلفظ کی وجہ سے بام عروج پر ہے۔

بच्चوں ہم نے اب تک آپ کو بتایا کہ کیسے اردو زبان اپنی شुरुآتی دور میں مختلف جگہوں اور زبانوں سے مانوس (جان پہچان) ہو کر دہلی تک خڈی بولی کی شکل میں پہنچی۔ مسلمان جو باہر سے یہاں آئے انہوں نے اسی ملک اور یہاں کی زبانوں کو بہت محبت سے قبول کیا اور یہی مر کر دفن بھی ہو گئے۔ وہ بادشاہ بھی تھے اور فقیر بھی ایسے ہی ایک فقیر (جن کا نام امیر خسرو تھا) نے یہاں کی زبان میں شاعری کی جو آج تک زبان زد عام ہے انہوں نے پہیلیاں اور گیت لکھے پہلے اس اردو کو ہندی نام دیا گیا پھر اس کے رسم الخط اور لشکری زبان ہونے کی وجہ سے اردو نام سے تعبیر کیا گیا اردو لفظ کے معنی ہیں لشکر فوج یہ لفظ ترکی زبان کا ہے اس طرح اردو دہلی کے قریب پیدا ہوئی اور نکھرنے لگی جب دکن اور گجرات میں اردو زبان کا بول بالا ہوا تو اسے دکنی زبان اور گجراتی زبان بھی کہنے لگے۔ تو بچو اس طرح ہمارے ملک میں اس خوبصورت دلنشین زبان کی نشوونما ہوئی اور آج اپنے عروج پر اپنی لطافت اور تلفظ کی وجہ سے بام عروج پر ہے۔

अभ्यास कार्य

مشق



शब्द=अर्थ
इब्तिदाई=शुरुआती
मानूस=जान पहचान
ज़बान ज़द एआम=मशहूर
लताफ़त=खूबी
तलफ़फ़ुज़=कहने का अंदाज़
दिल नशी=दिल में उतरने वाला

الفاظ=معنی
ابتدائی=شروعاتی
مانوس=جان پہچان
زبان زد عام=مشہور
لطافت=خوبی
تلفظ=طرز ادا
دل نشیں=دل میں اتر جانے والا

प्रश्न,, अमीर खुसरो कौन थे?

प्रश्न,, उर्दू लफज़ के मानी क्या हैं?

प्रश्न,, उर्दू लफज़ किस ज़बान का है?

प्रश्न,, पहले उर्दू को किस नाम से जाना जाता था?

سوال.. امیر خسرو کون تھے؟

سوال.. اردو لفظ کے معنی کیا ہیں؟

سوال.. اردو لفظ کس زبان کا ہے؟

سوال.. پہلے اردو کو کس نام سے جانا جاتا تھا؟

क्रमांक 32 के उत्तर

- (1) دارুল सलतनत (2) मुस्लिमों ने
- (3) पंजाबी ज़बान का (4) अरबी, फारसी, तुर्की

(1) دارالسلطنت۔ (2) مسلمانوں نے۔

(3) پنجابی زبان کا۔ (4) عربی، فارسی، ترکی۔



मिशन शिक्षण संवाद

सबक़ का खुलासा
(पाठ का सारांश)

سبق کا خلاصہ

بجو کل ہم نے آپ کو مصنف کا تعارف کرایا اور اس سبق کے بارے میں مختصر معلومات فراہم کیں۔ آج ہم آپ کو بتاتے ہیں کہ اردو کیسے وجود میں آئی۔ بجو اٹھویں صدی میں جب مسلمان مختلف ملکوں سے یہاں آئے تو سندھ پر قبضہ کر لیا پھر دسویں اور گیارھویں صدی میں مسلمان سارے پنجاب میں پھیل گئے اسی لئے شروع میں اردو میں پنجاب کی زبان کا اثر نمایاں نظر آتا ہے۔ جب دلی دارالسلطنت بن گیا تو مختلف جگہوں سے لوگ یہاں آئے لگے تو دلی میں میل جول بڑھنے لگا اور ہر جگہ کی زبانوں کا اثر اس میں شامل ہو گیا رفتہ رفتہ اس میں عربی فارسی ترکی کے لفظ شامل ہو گئے اور فوجیوں کے ساتھ بھیلنے لگے اردو زبان دہلی اور اس کے پورب میں بولی جانے والی کھڑی بولی میں شامل ہو کر اور نکھرنے لگی۔

بच्चों कल हमने आपको मुसन्नफ़ (लेखक) का तआरुफ़ (परिचय) कराया और इस सबक़ के बारे में मुख्तसर (संक्षिप्त) मालुमात (जानकारी) फ़राहम (पहुंचाई) कि आज हम आपको बताते हैं कि उर्दू कैसे वजूद में आई। बच्चों आठवीं सदी में जब मुसलमान मुख्तलिफ़ (भिन्न-भिन्न) जगह से यहां आए तो सिंध पर कब्जा कर लिया फिर 10वीं और 11वीं सदी में मुसलमान सारे पंजाब में फैल गए। इसलिए शुरू में उर्दू में पंजाब की जुबान का असर नुमायां (साफ़) नजर आता है जब दिल्ली दारुल सलतनत (राजधानी) बन गया तो मुख्तलिफ़ जगहों से लोग यहां आने लगे दिल्ली में मेल-जोल बढ़ने लगा और हर जगह की जुबानों का असर इसमें शामिल हो गया रफ़ता रफ़ता इसमें अरबी फारसी तुर्की के लोग शामिल हो गए और फौजियों के साथ फैलने लगे। उर्दू जबान दिल्ली और उसके पूरब में बोली जाने वाली खड़ी बोली में शामिल होकर और निखरने लगी।

अभ्यास कार्य

- शब्द=अर्थ
- सदी=सौ साल
- ईस्वी=वह साल जो ईसा मसीह से शुरू हुआ।
- दर्दा=घाटी
- दारुलसलतनत=राजधानी
- रूप धारना=शकल बदलना



مشق

- الفاظ=معنی
- صدی=سو سال
- عیسوی=وہ سال جو عیسیٰ علیہ السلام سے شروع ہوا۔
- درہ=گھاٹی
- دارالسلطنت=راجدھانی
- روپ دھارنا=شکل اختیار کرنا
- سوال،، دلی کیا بن گیا؟

प्रश्न,, दिल्ली क्या बन गया?
प्रश्न,, सिंध पर कब्जा किसने किया?

प्रश्न,, उर्दू ज़बान के शुरू में किस ज़बान का असर दिखाई देता है?

प्रश्न,, उर्दू में किस किस ज़बान के लफ़ज़

- क्रमांक 31 के उत्तर
- (1) सय्यद एहतेशाम हुसैन
 - (2) खोटा खरा देखने वाला
 - (3) उर्दू ज़बान के
 - (4) एक दिसम्बर 1972
 - (5) अरब, ईरान, अफ़ग़ान

سوال،، سندھ پر قبضہ کس نے کیا؟
سوال،، اردو زبان کے شروع میں کس زبان کا اثر دکھاتی دیتا ہے؟
سوال.. اردو میں کس کس زبان کے لفظ شامل ہوئے؟

شامل हुए?

तस्लीम रज़ा खा



विषय- उर्दू
प्रकरण- मज़मून

पाठ- उर्दू ज़बान की इब्तिदा कक्षा-7
क्रमांक- 31



मिशन शिक्षण संवाद

लेखक का परिचय

مصنف کا تعارف

بچوں سید احتشام حسین اردو کے مشہور ادیب اور نقاد گزرے ہیں۔ ایک عرصے تک وہ لکھنؤ یونیورسٹی کے شعبہ اردو میں استاد رہے اس کے بعد الہ آباد یونیورسٹی کے شعبہ اردو کے صدر ہوئے۔ انہوں نے علمی ادبی اور تنقیدی مضامین کثرت سے لکھے بچوں کے لیے بھی انہوں نے کئی کتابیں لکھیں۔ اردو کی کہانی ان کی ایک کتاب کا نام ہے یہ مضمون اسی کتاب سے لیا گیا ہے۔ دفعتاً یکم دسمبر 1972 کو ان کا انتقال ہو گیا۔

ہم جس آسانی سے اپنی زبان بولتے ہیں اس سے بہت کم یہ خیال ہوتا ہے کہ زبان کے بننے اور شروع ہونے میں کتنا وقت لگا ہوگا جب مسلمان یہاں آئے تو وہ کوئی نہ کوئی زبان بولتے ہوں گے اور یہاں کے مقامی لوگ اپنی زبان بولتے ہوں گے۔ انے والے لوگوں میں عرب، ایران، افغانستان، ترکستان، مغل ہر جگہ کے لوگ تھے۔ مقامی زبان میں انہوں نے اپنی زبان کے الفاظ بھی شامل کیے اور یہاں کے الفاظ اپنی زبان میں ملائے۔

بच्चों सैयद एहतेशाम हुसैन उर्दू के मशहूर अदीब और नक्काद(परखने वाले) गुजरे हैं एक अरसे तक वह लखनऊ यूनिवर्सिटी के शोब ए उर्दू में उस्ताद(अध्यापक) रहे इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के शोब ए उर्दू के सदर(प्रधान) हुए। उन्होंने इल्मी अदबी और तनकीदी मजामीन(लेख) कसरत से लिखे। बच्चों के लिए भी उन्होंने कई किताबें लिखीं। उर्दू की कहानी उनकी एक किताब का नाम है। यह मजमून इसी किताब से लिया गया है दफ़अतन (अचानक) यकुम (एक) दिसंबर 1972 को उनका इंतकाल हो गया।

हम जिस आसानी से अपनी जुबान बोलते हैं उसे बहुत कम यह खयाल होता है कि इस जुबान के बनने और शुरू होने में कितना वक्त लगा होगा। जब मुसलमान यहां आए तो वह कोई जुबान जरूर बोलते होंगे और यहां के मकामी (रहने वाले) लोग अपनी जुबान बोलते थे आने वाले लोगों में अरब, ईरान, अफ़ग़ान, तुर्किस्तान, मुगल हर जगह के लोग थे मकामी जुबान में उन्होंने अपनी जुबान के अल्फाज भी शामिल किए और यहां के अल्फाज अपनी जुबान में मिला लिए।

अभ्यास कार्य

- शब्द=अर्थ
- नक्काद=परखने वाला
- शोबा=महकमा
- सदर=प्रधान
- कसरत=ज़्यादा
- दफ़अतन=अचानक



مشق

- الفاظ=معنی
- نقاد=پرکھنے والا
- شعبہ=محکمہ
- صدر=خاص
- کثرت=زیادتی
- دفعتاً=احانک

ترتیب 30 کے جواب

- (1) رگھو پتی سہائے (2) الہ آباد یونیورسٹی
- (3) اردو زبان کے۔ (4) ہمارے اجداد کے ماضی کی۔

- پ್ರश्न,, इस सबक के लेखक कौन हैं?
- प़श्न,, नक्काद किसे कहते हैं?
- प़श्न,, एहतेशाम हुसैन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में किस ज़बान के सदर बनाए गए?
- प़श्न,, एहतेशाम हुसैन का इंतकाल कब हुआ?
- प़श्न,, किन किन मुल्कों से आकर लोग यहां आबाद हुए?
- क्रमांक 30 के उत्तर
- (1) रघुपति सहाय। (2) इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
- (3) उर्दू ज़बान के (4) हमारे बुजुर्गों के ज़माने की।

- سوال.. اس سبق کے مصنف کون ہیں؟
- سوال.. نقاد کسے کہتے ہیں؟
- سوال.. احتشام حسین الہ آباد یونیورسٹی میں کس زبان کے صدر منتخب ہوئے؟
- سوال.. احتشام حسین کا انتقال کب ہوا؟
- سوال.. کن کن ملکوں سے لوگ یہاں آکر آباد ہوئے؟



विषय- उर्दू

पाठ- तीन सवाल कक्षा-7



प्रकरण- मज़मून

क्रमांक- 29

मिशन शिक्षण संवाद

सबक़ का खुलासा (पाठ का सारांश)

سبق کا خلاصہ

بچوں ہم نے آپ کو بتایا کہ جب بادشاہ کو اس کے سوالوں کا جواب اپنے دربار میں دانش مندوں سے بھی نہ مل سکا تو اس نے ایک سادھو کے پاس جانے کا ارادہ کیا اور اپنی فوج کے ساتھ رخت سفر باندھا۔ بادشاہ جنگل میں پہنچ کر اس سادھو سے ملا اور اپنے تینوں سوال اس کے سامنے پیش کیے۔ بادشاہ سادھو کا کام کرنے لگا یعنی کھیت میں رو پائی کرنے لگا اتنے میں ایک زخمی شخص اس کے پاس بھاگتا ہوا آیا تو سادھو نے بادشاہ سے اس کی تیمارداری کرنے کو کہا۔ بادشاہ نے پھر سے اصرار کیا کہ برائے مہربانی مجھے میرے سوالوں کا جواب مرحمت فرمائیں۔ سادھو نے کہا ہاں اگر تم میرے پاس نہ رکتے تو یہ زخمی آدمی تم پر حملہ کر دیتا اس لیے وہ وقت بہت اہم تھا اور زخمی کی تیمارداری تمہارے لئے بہت اہم کام تھا سب سے اہم آدمی وہ ہے جس کے ساتھ تم ہو اور سب سے اہم کام یہ ہے کہ اس کے ساتھ نیکی کی جائے کہ انسان کو دوسروں کی خدمت کے لیے ہی زندگی عطا ہوئی ہے۔

बच्चों हमने आपको बताया जब बादशाह को उसके सवालों का जवाब अपने दरबार में दानिशमंदों (विद्वानों) से भी ना मिल सका तो उसने जंगल में एक साधु के पास जाने का इरादा किया और अपनी फौज के साथ सब सामान सफ़र बांधा। बादशाह जंगल में पहुंचकर उस साधु से मिला और अपने तीनों सवाल उसके सामने पेश किए। बादशाह साधु का काम करने लगा यानी खेत में रोपाई करने लगा। इतने में एक जख्मी शख्स उसके पास भागता हुआ आया तो साधु ने बादशाह से उसकी तीमारदारी (देख भाल) करने को कहा। बादशाह ने फिर साधु से इसरार (ज़ोर) किया कि बराय मेहरबानी मुझे मेरे सवालों का जवाब मरहमत (देना) फरमाएं साधु ने कहा अगर तुम मेरे पास ना रुकते तो यह जख्मी आदमी तुम पर हमला कर देता इसलिए वह वक्त बहुत अहम है और जख्मी की तीमारदारी तुम्हारे लिए बहुत अहम काम था सबसे अहम आदमी वह है जिसके साथ तुम हो और सबसे अहम काम यह है कि उसके साथ नेकी की जाए कि इंसान को दूसरों के खिदमत के लिए ही जिंदगी अता हुई है।

अभ्यास कार्य

- शब्द=अर्थ
- दानिश मन्द=विद्वान
- रखते सफ़र=सफ़र का सामान
- तीमारदारी=देख भाल
- इसरार=ज़ोर देना
- बराए=के लिए
- मरहमत=मेहरबानी



مشق

- الفاظ=معنی
- دانش مند=عقل مند
- رخت سفر=سفر کا سامان
- تیمارداری=دیکھ بھال
- اصرار=زور دینا
- برائے=کے لئے
- مرحمت=مہربانی

प्रश्न,, बादशाह किसके साथ सफ़र पर गया?

प्रश्न,, बादशाह जंगल में किससे मिला?

प्रश्न,, इंसान को जिन्दगी किस लिए अता हुई? سوال..بادشاہ کس کے ساتھ سفر پر گیا؟

प्रश्न,, क्या बादशाह साधु के जवाब से निश्चित हो गया? سوال..بادشاہ جنگل میں کس سے ملا؟

क्रमांक 28 के उत्तर

(1) तीन (2) अपने दरबार में

(3) खुद जवाब की तलाश में सफ़र का جواب سوال..کیا بادشاہ سادھو کے جواب سے مطمئن ہو گیا؟

इरादा किया।



विषय- उर्दू

पाठ- तीन सवालकक्षा -7

प्रकरण- मज़मू

क्रमांक - 28



सबक का खुलासा (पाठ का सारांश)

मिशन शिक्षण संवाद

سبق کا خلاصہ

بچوں کل ہم نے آپ کو اس سبق کے مصنف کے بارے میں بتایا۔ آج ہم آپ کو سبق کے پہلے حصے کے بارے میں بتائیں گے۔ دراصل یہ ایک کہانی ہے اور جس طرح کے سوال اس میں کئے گئے ہیں وہ عام انسان کے ذہن میں اکثر آتے رہتے ہیں۔ اس سبق میں ان سوالوں کے حل تلاش کرنے کی بھی کوشش کی گئی ہے۔ مصنف نے اس کہانی کو ایک بادشاہ کی کہانی بنا کر پیش کیا ہے بادشاہ کے ذہن میں تین سوال آتے ہیں کہ کسی کام کے شروع کرنے کا صحیح وقت کیا ہے۔ دوسرا وہ کون لوگ ہیں جن پر اعتماد کیا جائے اور جن پر نہ کیا جائے۔ تیسرا سوال اس کے ذہن میں یہ آیا کہ وہ کونسا کام ہے جسے سب سے زیادہ ضروری سمجھا جائے۔ ان سوالوں کے جواب تلاش کرنے کے لئے اس نے اپنے ملک میں منادی کرا دی مگر کوئی اس کا جواب نہ دے سکا تو اس نے خود ان سوالوں کے جوابات تلاش کرنے کے لئے سفر کا ارادہ کیا۔

بच्चों कल हमने आपको इस सबक के मुसन्निफ के बारे में बताया। आज हम आपको सबक के पहले हिस्से के बारे में बताएंगे। दरअसल यह एक कहानी है और जिस तरह के सवाल इसमें किए गए हैं वह आम इंसान के जहन में अक्सर आते रहते हैं। इस सबक में इन सवालों के हल तलाश करने की भी कोशिश की गई है। मुसन्निफ(लेखक) ने इसी कहानी को एक बादशाह की कहानी बनाकर पेश किया है। बादशाह के जहन (दिमाग) में तीन सवाल आते हैं। पहला किसी काम के शुरू करने का सही वक्त क्या है। दूसरा वह कौन लोग हैं जिन पर एतमाद (भरोसा) किया जाए और जिन पर ना किया जाए। तीसरा सवाल उसके जहन में यह आया कि वह कौन सा काम है जिसे सबसे ज्यादा जरूरी समझा जाए। इन सवालों के बाद जवाब तलाश करने के लिए उसने अपने मुल्क में मुनादी करा दी मगर कोई उसके सवालों का जवाब ना दे सका तो उसने इन सवालों के जवाब आघ तलाश करने के लिए सफ़र का इरादा किया।

अभ्यास कार्य

- शब्द=अर्थ
- ज़हन=दिमाग
- एतमाद=भरोसा
- मुनादी=ऐलान
- अहम=ज़रूरी
- मुख्तलिफ=अलग-अलग



مشق

- الفاظ=معنی
- ذہن=دماغ
- اعتماد=بھروسہ
- منادی=اعلان
- اہم=ضروری
- مختلف=الگ الگ

- प्रश्न,, बादशाह के जहन में कितने सवाल आए?
- प्रश्न,, सवालों के जवाब के लिए पहले बादशाह ने किया क्या?
- प्रश्न,, जब जवाब नहीं मिले तो बादशाह ने क्या इरादा किया?

- سوال..بادشاہ کے ذہن میں کتنے سوال آئے؟
- سوال..سوالوں کے جوابات کے لئے پہلے بادشاہ نے کیا کیا؟
- سوال..جب جواب نہ ملے تو بادشاہ نے کیا ارادہ کیا؟

क्रमांक 27 के उत्तर

- (1)टालिस्टाए (2) रूसी कहानी
- (3)1828ई॰रूस में (4)नाविलों और कहानियों के जरिए से (5)1910ईत्व॰

ترتيب 27 کے جواب
 (1) ٹالسٹائی۔(2) روسی کہانی
 (3) 1828 عیسوی روس میں
 (4) ناولوں اور کہانیوں کے ذریعے سے
 (5) 1910 عیسوی میں

**میشن شیکشن سواد****مسننفر کا تاروف**
(لکوک کا ٲرلک)**مصنف کا تعارف**

ٲچو ٲه سبق ناولٹ ٹالسٹائی کی ایک روسی کہانی کا اردو ترجمہ ہے۔ ٹالسٹائی ایک بڑے دولتمند گھرانے میں اٹھارہ سو اٹھائیس (1828) میں ٲیدا ہوئے۔ (ٲچو آپ جانتے ہیں کہ روس ایک بہت ترقی یافتہ اور بڑا ملک ہے۔ رقبہ کے حساب سے بھی وہ ہمارے ملک ہندوستان سے بڑا ہے۔) لیکن انہوں نے عیش و عشرت کی زندگی چھوڑ کر غریب لوگوں کے ساتھ زندگی بسر کی اور وہ ناولوں اور کہانیوں کے ذریعے سے اپنے خیالات کی تشہیر کرتے رہے۔ "جنگ اور امن" اور "آنا کریتا ان کی مشہور ناول ہیں ٹالسٹائی کا انتقال 1910 میں ہوا۔

بچوں یہ سبک ناولٹ ٹالسٹائی کی ایک روسی کہانی کا اردو ترجمہ (انواد) ہے۔ ٹالسٹائی روس کے ایک بڑے دولتمند گھرانے میں 1828 میں ٲیدا ہوئے۔ (بچو آپ جانتے ہیں کہ روس ایک بہت ترقی یافتہ اور بڑا ملک ہے۔ رقبہ کے حساب سے بھی وہ ہمارے ملک ہندوستان سے بڑا ہے۔) لیکن انہوں نے عیش و عشرت کی زندگی چھوڑ کر غریب لوگوں کے ساتھ زندگی بسر کی اور وہ ناولوں اور کہانیوں کے ذریعے سے اپنے خیالات کی تشہیر کرتے رہے۔ "جنگ اور امن" اور "آنا کریتا ان کی مشہور ناول ہیں ٹالسٹائی کا انتقال 1910 میں ہوا۔

اہماس کارف**مشق**

شبد=ارث
رکبا=زمین
اشرت=آرام
بسر=گزاری
تشر=ٲیلانا



الفاظ=معنی
رقبہ=زمین
عشرت=آرام
بسر=گزاری
تشر=ٲیلانا

ٲرلک، اس سبک کے مسننفر (لکوک) کون ہے؟

ٲرلک، یہ سبک کس ملک کی کہانی کا ہے؟ سوال، اس سبق کے مصنف کون ہیں؟ سوال، یہ سبق کس ملک کی کہانی کا ہے؟

ٲرلک، ٹالسٹائی کب اور کہاں ٲیدا ہوئے؟

ٲرلک، ٹالسٹائی نے اپنے خیالات (وچار) کا اظہار (اہمبشکف) کس طرح کیا؟ سوال، ٹالسٹائی کب ٲیدا ہوئے؟ سوال، ٹالسٹائی نے اپنے خیالات کا اظہار کن ذرائع سے کیا؟

ٲرلک، ٹالسٹائی کا ائٹقال کب ہوا؟

سوال، ٹالسٹائی کا ائٹقال کب ہوا؟ ترتیب 26 کے جواب

- (1) کاہل
(2) چاند سٹاروں چشموں کی
(3) اپنی منزل نہیں ٲا سکتے۔

**میشن शिक्षण संवाद****آگے بڑھو.....الحام چلے چلو**
نظم کا خلاصہ (سाराংশ) نجم کا खुलासा

شاعر آخر میں ہمیں مزید حوصلہ دیتے ہوئے کہتے ہیں کہ اب تاب فرار بالکل نہیں آگے بڑھو۔ جب ہمیں ہی فتح کرنا ہے تو انتظار کس بات کا کریں۔ اب فتح بالکل قریب ہے آگے بڑھو۔ جب آسمان پر ستارے چل رہے ہیں چشمے دریا سب چل رہے ہیں جو رک جائے وہ کبھی آگے نہیں جا سکتا یہاں رکنا نہیں ہے چلتے ہی رہنا ہے بھلائی اور برائی کی جنگ ہے اب اس کے فیصلے خاتمے پر آگے ہیں۔ قسمت کی بات نہیں ہے۔ کوشش کرتے رہیں کوشش کرنے والوں کی کبھی ہار نہیں ہوا کرتی۔ اس نظم سے ہمیں ہر مشکل سے لڑنے کی ہمت ملتی ہے اور ہمارا حوصلہ بڑھتا ہے۔

شاعر آخر میں ہمیں مزید حوصلہ دیتے ہوئے کہتے ہیں کہ اب تاب فرار بالکل نہیں آگے بڑھو۔ جب ہمیں ہی فتح کرنا ہے تو انتظار کس بات کا کریں۔ اب فتح بالکل قریب ہے آگے بڑھو۔ جب آسمان پر ستارے چل رہے ہیں چشمے دریا سب چل رہے ہیں جو رک جائے وہ کبھی آگے نہیں جا سکتا یہاں رکنا نہیں ہے چلتے ہی رہنا ہے بھلائی اور برائی کی جنگ ہے اب اس کے فیصلے خاتمے پر آگے ہیں۔ قسمت کی بات نہیں ہے۔ کوشش کرتے رہیں کوشش کرنے والوں کی کبھی ہار نہیں ہوا کرتی۔ اس نظم سے ہمیں ہر مشکل سے لڑنے کی ہمت ملتی ہے اور ہمارا حوصلہ بڑھتا ہے۔

अभ्यास कार्य

شब्द=अर्थ

इल्हाम=ज़ख्म भरना

मुआरका=हुजूम

ज़फ़र=कामयाबी

फ़रदा=अगला

नोश्ता=लपेटा हुआ

तबल=ढोल

क्रमांक 25 के उत्तर
(1) शायर और नज़म का।
(2) हिम्मत से आगे बढ़ना चाहिए।
(3) जो कोशिश करते हैं।

مشق

الفاظ=معنى

الحام=زخم بھرنا

معركه=ہجوم

ظفر=کامیابی

فردا=اگلا

نوشتہ=لپیٹا ہوا

طبل=ڈھول

प्रश्न,, जो कोशिश करने से रुक जाए वह

इंसान कैसा होता है?

प्रश्न,, शायर किसकी मिसाल देकर हमें

चलने का हौसला दे रहा है?

प्रश्न,, किस्मत को रोने वाले क्या नहीं

कर सकते?

سوال.. جو کوشش کرنے سے رک جائے

وہ انسان کیسا ہوتا ہے؟

سوال.. شاعر کس کی مثال دے کر ہمیں

چلتے رہنے کا حوصلہ دے رہا ہے؟

سوال.. قسمت کو رونے والے کیا نہیں کر

سکتے؟



विषय- उर्दू

पाठ-हिम्मत ए मर्दा कक्षा-7



प्रकरण- नज़्म

क्रमांक- 24

मिशन शिक्षण संवाद

शायर का तआरुफ़ (परिचय)

شاعر کا تعارف

मौलाना محمد حسين آزاد اردو के مشهور ادیب اور شاعر تھے۔ انہوں نے بچوں کے لئے بہت مفید نظمیں لکھی ہیں۔ "ہمت مرداں" ان کی مشہور نظم ہے، جس کو پڑھ کر قلب میں ایسی ہمت پیدا ہوتی ہے کہ مشکل سے مشکل کام بھی آسان معلوم ہونے لگتا ہے۔ "اب حیات" "دربارا کبریٰ" "نیرنگ خیال" نثر میں ان کی مشہور کتابیں ہیں۔ ان کا انتقال 1910 عیسوی میں ہوا۔ مولانا اس نظم کے شروع میں ہمیں امید دلا رہے ہیں کہ سامنے منزل ہے آپ آگے بڑھو چاہے راہ میں سمندر بھی ہو چاہے بیابان جنگل مگر تم ہمت سے آگے ہی بڑھتے رہو۔

مौلانا मोहम्मद हुसैन आजाद उर्दू के मशहूर (प्रसिद्ध) अदीब और शायर थे। उन्होंने बच्चों के लिए बहुत मुफीद (फ़ायदे मन्द) नज़्म लिखी हैं। हिम्मत ए मर्दा उनकी मशहूर नज़्म है। जिसको पढ़ कर कुलूब (दिलों में) में ऐसी हिम्मत पैदा होती है कि मुश्किल से मुश्किल काम भी आसान मालूम होने लगता है। "आबे हयात" "दरबार ए अकबरी" "नेरंग ए खयाल" नस्र (गद्य) उनकी मशहूर किताबें हैं उनका इंतकाल 1910 ई० में हुआ। मौलाना इस नज़्म के शुरू में हमें उम्मीद दिला रहे हैं कि सामने मंजिल है आप आगे बढ़ो चाहे राह में समुंदर भी हो चाहे बियाबान जंगल मगर तुम हिम्मत से आगे ही बढ़ते रहो।

अभ्यास कार्य



مشق

- शब्द=अर्थ
- मुफीद=फ़ायदे मन्द
- कुलूब=क़ल्ब का बहुवचन (दिल)
- बाग़ ए मुराद=उम्मीद का फूल
- समर=फल
- बयाबां=वीराना

- الفاظ=معنی
- مفید=فائدے مند
- قلوب=قلب کی جمع (دل)
- باغ مراد=امید کا پھول
- ثمر=پھل
- بیابان=ویران

प्रश्न,, इस नज़्म के शायर का नाम बताएं।

سوال.. اس نظم کے شاعر کا نام بتائیں۔

प्रश्न,, इस नज़्म को पढ़कर दिल में क्या पैदा होती है?

سوال.. اس نظم کو پڑھकर ہمارے دل میں کیا پیدا ہوتی ہے؟

प्रश्न,, मौलाना की और कौन कौन सी तसानीफ़ (रचनाएं) हैं?

سوال.. مولانا کی اور کون کون سی تصانیف ہیں؟

प्रश्न,, मौलाना का इंतकाल कब हुआ?

سوال.. مولانا کا انتقال کب ہوا؟



विषय- उर्दू

पाठ-इंसाफ़ कहाँ है कक्षा-7



प्रकरण- मज़मून

क्रमांक- 22

मिशन शिक्षण संवाद

सबक का खुलासा
(पाठ का सारांश)



سبق کا خلاصہ

بچوں کل ہم نے آپ کو طنز و مزاح فن کے بارے میں بتایا تھا۔ آج ہم آپ کو اس سبق میں جو طنز و مزاح ایک طالب علم امجد کے بارے میں دیا ہے اسے بتائیں گے۔ اس مضمون میں ایک طالب علم جو فیل ہو جاتا ہے وہ بے وجہ اساتذہ پر تہمت ناانصافی کی لگاتا پھر رہا ہے، جبکہ اس نے ریاضی، تاریخ، اور ادب کے پرچوں میں سوالات کے جواب نہ دے کر خود اپنی مرضی سے بے ہودہ جواب تحریر کیے اور سوالات پر مزید سوال کئے تو کیا کوئی بھی ممتحن اسے پاس کر سکتا تھا۔ امجد تو جواب دے کر مطمئن تھا اور فخریہ انداز میں خوش فہمی میں مبتلا تھا کہ وہ تو پاس ہو ہی جائے گا جب وہ امتحان میں ناکام رہا تو خود نے ہی اساتذہ کو مورد الزام ٹھہرا دیا اس پوری گفتگو کو بہت مزاحیہ انداز میں بیان کیا گیا ہے۔

بच्चों कल हमने आपको जो तन्ज़ व मज़ह (हास्य व्यंग) के बारे में बताया था। आज हम आपको इस सबक में जो तन्ज़ व मज़ह एक तालिब ए इल्म (विद्यार्थी) के बारे में दिया है उसे बताएंगे इस मजमून में एक तालिब ए इल्म जो फेल हो जाता है वह बेवजह असातज़ा (अध्यापकों) पर तोहमत नाइंसाफी की लगाता फिर रहा है, जबकि उसने रियाज़ी (गणित) तारीख (इतिहास) और अदब (साहित्य) के पर्चों में सवाल के जवाब ना देकर खुद अपनी मर्जी से बेहूदा जवाब तहरीर किए और सवालात पर मजीद सवाल किए तो क्या कोई भी मुम्तहिन (परीक्षा लेने वाले अध्यापक) ही उसे पास कर सकता था हम अमजद तो जवाब देकर मुत्मइन (संतुष्ट) था और फ़खरिया (घमंडी) अंदाज में खुश फहमी (भ्रम) में भी मुब्तिला (पीड़ित) था कि वह तो पास हो ही जाएगा। जब वह इम्तहान (परीक्षा) में नाकामयाब रहा तो खुद ने ही अध्यापकों को मौर्द ए इल्जाम (अभियुक्त) ठहरा दिया इस पूरी गुफ्तगू का बहुत मजाहिया (हास्य व्यंग) अंदाज में बयान किया गया है।

अभ्यास कार्य



शब्द=अर्थ
शरह सूद=व्याज
ज़र=दौलत
फ़रोख्त=बेचना
फुतूर=खराबी
कूज़ा=मिट्टी का बर्तन

प्रश्न,, अमजद छमाही इम्तहान में क्यों फ़ेल हो गया?
प्रश्न,, अमजद के जवाब पढ़कर तुम्हें क्यों हंसी आती है?
प्रश्न,, क्या अमजद को फ़ेल करके उसके साथ बे इंसाफी की गई?



ترتیب 21 کے جواب
(1) کنہیا لال کیور
(2) طنز و مزاح میں معاشرے کی اصلاح



مشق



الفاظ=معنی
شرح سود=سود کی مہدیار
زر=دولت
فروخت=بیچنا
فتور=خرابی
کوزہ=مٹی کا چھوٹا برتن

سوال.. امجد ششماہی امتحان میں کیوں فیل ہو گیا?
سوال.. امجد کے جوابات پڑھ کر تم کو کیوں ہنسی آتی ہے?
سوال.. کیا امجد کو فیل کر کے اسکے ساتھ بے انصافی کی گئی؟

9458278429



मिशन शिक्षण संवाद

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچوں ہم نے اب تک آپ کو گاندھی جی کی سوانح عمری اور ان کی کچھ خاص عادتوں کے بارے میں بتایا۔ اب ہم آپ کو گاندھی جی کی کچھ اور دلچسپ باتیں بیان کرتے ہیں۔ گاندھی جی اگے تحریر کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ میں شادی کی وجہ سے پیچھے رہ گیا مگر تیسرے درجے میں ششماہی امتحان دینے کے بعد چہارم درجے میں شامل کر دیا گیا تھا اور بہت کمزور تھا البتہ اقلیدس میں کچھ یاد کرنے کو نہیں ہوتا تھا یہ مضمون مجھے سہل لگتا تھا جب طلبہ ذکر کرتے کے فارسی آسان ہے اور اس کے استاد بھی کافی مخلص ہیں اس بات سے میں سنسکرت چھوڑ کر فارسی کے درجے میں جانے لگا یہ دیکھ کر سنسکرت کے استاد جی کو بہت برا لگا اور انہوں نے مجھے سمجھانے کی کوشش کی مگر میری اس وقت بات سمجھ میں نہیں آئی آج احساس ہوتا ہے کہ جو زبان بھی ہمیں سکھائی جالے اسے دل لگا کر سیکھنا چاہیے ورنہ جب عمر گزر جائے تو بہت افسوس ہوتا ہے۔ گاندھی جی کے اس سبق سے ہمیں یہی تعلیم ملتی ہے کہ ہم دل لگا کر اسکول میں تعلیم حاصل کریں جو باتیں ہمیں فضول لگتی ہیں آگے جا کر ہمارے کام آتی ہیں لہذا ہمیں اپنے استادوں کا احترام کے ساتھ بر حکم بجا لانا چاہیے۔

बच्चों हमने अब तक आपको गांधी जी की सवानेह उमरी(जीवन की आपबीती) और उनकी कुछ खास आदतों के बारे में बताया। अब हम आपको गांधीजी की कुछ और दिलचस्प बातें बयान करते हैं। गांधीजी आगे तहरीर करते हुए कहते हैं कि मैं शादी की वजह से पिछड़ गया मगर तीसरे दर्जे में अर्धवार्षिक इम्तहान देने के बाद चौथे दर्जे में शामिल कर दिया गया अंग्रेजी मुझे कम आती थी और संस्कृत में तो मैं बहुत कमजोर था अलबत्ता अक़लीदस (ज्योमेट्री) में कुछ याद करने को नहीं होता था यह मजमून मुझे आसान लगता था जब छात्र जिक्र करते के फारसी आसान है और उसके उस्ताद भी काफी मुखलिस हैं इस बात से मैं संस्कृत छोड़कर फारसी के दर्जे में जाने लगा यह देखकर संस्कृत के उस्ताद जी को बहुत बुरा लगा और उन्होंने मुझे समझाने की कोशिश की मगर मेरी इस वक्त बात समझ में नहीं आई आज एहसास होता है कि जो जुबान भी हमें सिखाई जाती जाए उसे दिल लगाकर सीखना चाहिए वरना जब उम्र गुजर जाए तो बहुत अफसोस होता है।

तो बच्चों गांधी जी की इस सबक से हमें यही तालीम मिलती है कि हम दिल लगाकर स्कूल में तालीम हासिल करें जो बातें हमें फुज़ूल लगती हैं वही आगे जाकर हमारे काम आती हैं हमें अपने उस्तादों का हेतराम के साथ हर हुक्म मानना चाहिए।

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

सवानेह उमरी = आप बीती

अक़लीदस = ज्योमेट्री

चहारुम = चार

शिशुम = छे

मुखलिस = नेक, शरीफ़

फुज़ूल = बेकार

प्रश्न,, गांधी जी किस वजह से कक्षा में पीछे रह गए?

प्रश्न,, अक़लीदस विषय गांधी जी को क्यों पसंद था?

प्रश्न,, गांधी जी संस्कृत छोड़कर किस भाषा की कक्षा में शामिल हो गए?

प्रश्न,, गांधी जी को संस्कृत के उस्ताद ने क्या समझाया?

- क्रमांक 42 के उत्तर
 (1) अपनी शैक्षिक गलतियों का। (2) सज़ा पाना।
 (3) कमज़ोर शिक्षा की। (4) आदर



مشق

الفاظ = معنی

سوانح عمری = آپ بیٹی

اقلیدس = جامیٹری

چہارم = چار

ششم = چھ

مخلص = نیک، شریف

فضول = بے کار

سوال.. گاندھی جی کس وجہ

سے درجہ میں پیچھے رہ گئے؟

سوال.. اقلیدس مضمون گاندھی

جی کو کیوں پسند تھا؟

سوال.. گاندھی جی سنسکرت

چھوڑ کر کس زبان کے درجہ میں

شامل ہو گئے؟

سوال.. سنسکرت کے استاد نے

کیا سمجھایا؟

ترتیب 42 کے جواب

(1) اپنی تعلیمی

خامیوں کا

(2) سزا بھگتنا

(3) ناقص تعلیم کی

(4) انکا احترام کرتے

ہوئے حکم پورا کریں

9458278429



मिशन शिक्षण संवाद

नज़म का खुलासा

(कविता का सारांश)

बचो आज ہم کو تلوک چند محروم کی ایک نظم اچھا بچہ پڑھائیں گے۔ تلوک چند اردو کے مشہور شاعر ہیں معلمی ان کا پیشہ تھا تلوک چند 1887 میں پیدا ہوئے انہوں نے اس نظم میں اچھے بچے کے اوصاف بیان کیے ہیں۔ دیکھو بچو اچھا بچہ وہی ہوتا ہے جو اپنا ہر کام خوشی سے کرتا ہے شوق سے اسکول جاتا ہے اور اپنے بڑوں کا احترام کرتا ہے جو صاف صفائی کا خیال رکھتا ہے اور سب سے محبت سے پیش آتا ہے نیک صحبت اختیار کرتا ہے اور کبھی جھوٹ نہیں بولتا اچھا بچہ ہمیشہ ہر حال میں اپنے رب کا شکر ادا کرتا ہے جس نے اسے پیدا کیا اور پڑھنے نیک بننے کی توفیق دی۔ وہ اپنے خدا سے یہی دعا مانگتا ہے کہ وہ مجھے سیدھی راہ دکھائے اور نیک بنائے۔

بच्चوں आज ہم आपको तिलोक चंद महरूम की एक नज़म अच्छा बच्चा पढ़ाएंगे। तिलोकचंद उर्दू के प्रसिद्ध शायर हैं मोअल्लिम (अध्यापक) उनका पेशा था तिलोकचंद 1887 में पैदा हुए उन्होंने इस नज़म में अच्छे बच्चे के औसाफ़ (आदर्श) बयान किए हैं। देखो बच्चों अच्छा बच्चा वही होता है जो अपना हर काम खुशी से करता है शौक से स्कूल जाता है और अपने बड़ों का एहताराम करता है जो साफ सफाई का ख्याल रखता है और सबसे मोहब्बत से पेश आता है नेक सोहबत (अच्छी संगत) इख्तेयार (अपनाता) करता है और कभी झूठ नहीं बोलता। अच्छा बच्चा हमेशा हर हाल में अपने रब का शुक्र अदा करता है जिसने उसे पैदा किया और पढ़ने नेक बनने की तौफ़ीक (प्रेरणा) दी। वह अपने खुदा से यही दुआ मांगता है कि वह मुझे सीधी राह दिखाएं और नेक बनाए।

अभ्यास कार्य

प्रश्न,, अच्छे बच्चे में क्या खूबियां होनी चाहिए?

प्रश्न,, सारे जहां को किसने पैदा क्या?

प्रश्न,, "वही सीधी राह दिखाएगा मुझको"

"वही नेक लड़का बनाएगा मुझको" में शायर किससे दुआ मांग रहा है?



مشق

سوال.. اچھے بچے میں کیا خوبیاں ہونی چاہیئے؟

سوال.. سارے جہاں کو کس نے پیدا کیا؟

سوال.. "وہی سیدھی راہ دکھائے گا مجھکو" "وہی نیک لڑکا بناے گا مجھکو" میں شاعر کس سے دعا گو

صحیح جملہ کے آگے ✓ اور غلط جملہ کے آگے × کا نشان لگائیں۔

(1) اچھے بچے روزانہ اسکول جاتے ہیں۔ ()

(2) لباس اور جسم صاف رکھنے سے بیماری آتی ہے۔ ()

(3) لڑائی جھگڑا اچھا کام ہے۔ ()

(4) سچ بولنا بری بات ہے۔ ()

سही वाक्य के आगे ✓ तथा ग़लत वाक्य के आगे × का निशान लगाइये।

(1) अच्छे बच्चे रोज़ स्कूल जाते हैं। ()

(2) लिबास और जिस्म साफ़ रखने से बीमारी आती है। ()

(3) लड़ाई झगड़ा अच्छा काम है। ()

(4) सच बोलना बुरी बात है। ()

क्रमांक 42 के उत्तर

(1) शादी की वजह से। (2) उसमें याद नहीं करना था।

(3) फ़ारसी भाषा के। (4) यही कि थोड़ी मेहनत से संस्कृत सीख सकते हो।

ترتیب 42 کے جواب
(1) شادی کی وجہ سے۔ (2) اسے یاد نہیں کرنا پڑتا ہے۔ (3) فارسی زبان کے درجہ میں۔
(4) میں سمجھایا کہ تھوڑی محنت سے سنسکرت زبان سمجھ آ جائے گی۔



पाठ- आदमी
की
कहानी

पाठ्य क्रमांक -

44

प्रकरण-

मज़मून

लेखक परिचय व पाठ परिचय

مصنف و سبق کا تعارف

بجو آج ہم آپ کو آدمی کی کہانی سنائیں گے۔ اس سے پہلے ہم اس سبق کے مصنف کے بارے میں جان لیتے ہیں۔ پروفیسر محمد مجیب جامعہ اسلامیہ دہلی کے وائس چانسلر رہ چکے ہیں انہوں نے بہت سی علمی اور ادبی کتابیں لکھی ہیں جن میں کہانیاں بھی ہیں اور ڈرامے بھی۔ ان کی زبان آسان اور عام فہم ہوتی ہے۔ ان کی ایک مشہور کتاب کا نام دنیا کی کہانی ہے اسی کتاب کے ایک مضمون دنیا کی کہانی کو اختصار کے ساتھ آدمی کی کہانی کے نام سے سبق دیا گیا ہے۔

بچوں آپ جیسی دنیا دیکھ رہے ہیں کروڑوں سال پہلے یہ خاموش ساکت نہیں تھی بلکہ سورج سے الگ ہو کر جہاں دوسرے سیارے بے وہیں ہماری زمین بھی بنی یہ ایک جلتی ہوئی آگ کے گولے کی شکل میں تھی آج بھی آتش فشاں پھٹتے ہیں اور ان کے ساتھ بہت سی اشیاء بھی پگلی ہوئی شکل میں باہر نکلتی ہیں۔ ہماری اس زمین پر ہزاروں سال تک بارش ہوئی تب کہیں جا کر یہ ٹھنڈی پڑی۔ سائنسدان زمین کی ساخت سے چٹانوں اور دھاتوں کا پتہ لگاتے ہیں۔

بچوں آج ہم آپ کو آدمی کی کہانی سنائیں گے۔ اس سے پہلے ہم اس سبق کے مصنف کے بارے میں جان لیتے ہیں۔ پروفیسر محمد مجیب جامعہ اسلامیہ دہلی کے وائس چانسلر رہ چکے ہیں انہوں نے بہت سی علمی اور ادبی کتابیں لکھی ہیں جن میں کہانیاں بھی ہیں اور ڈرامے بھی۔ ان کی زبان آسان اور عام فہم ہوتی ہے۔ ان کی ایک مشہور کتاب کا نام دنیا کی کہانی ہے اسی کتاب کے ایک مضمون دنیا کی کہانی کو اختصار کے ساتھ آدمی کی کہانی کے نام سے سبق دیا گیا ہے۔

بچوں آپ جیسی یہ دنیا دیکھ رہے ہیں کروڑوں سال پہلے یہ خاموش ساکت (ٹھہری ہوئی) نہیں تھی بلکہ سورج سے الگ ہو کر جہاں دوسرے سیارے (گرہ) بنے وہیں ہماری زمین بھی بنی یہ ایک جلتے ہوئے آگ کے گولے کی شکل میں تھی آج بھی آتش فشاں پھٹتے ہیں اور ان سے آگ کے ساتھ بہت سی چیزیں پھینکی ہوئی شکل میں باہر نکلتی ہیں۔ ہزاروں سال تک بارش ہوئی تب کہیں جا کر یہ ٹھنڈی پڑی۔ سائنسدان زمین کی ساخت سے چٹانوں اور دھاتوں کا پتہ لگاتے ہیں۔

अभ्यास कार्य



शब्द = अर्थ

आम फ़हम = आसानी से समझ में आने वाली

इख़्तिसार = छोटा करके

साक़ित = बे हरकत

आतिश फ़शां = ज्वाला मुखी

अश्या = चीजें

साहित्य इख़्तिसार के मुसन्नफ़ का नाम बताएं।

प्रश्न,, आदमी की कहानी प्रोफेसर मोहम्मद मुजीब साहब की किस मशहूर किताब से लिया गया है?

प्रश्न,, ज़मीन पहले कैसी थी?

प्रश्न,, आतिश फ़शां से क्या निकलता है?

क्रमांक 43 के उत्तर

(1) अच्छे बच्चे फ़रमां बरदार और मेहनती होते हैं।(2)

ख़ुदा ने।(3) ख़ुदा से

निर्माण - तस्लीम रज़ा खां



مشق

الفاظ = معنی

عام فہم = آسانی سے سمجھ میں آنے والی

اختصار = چھوٹا کر کے

ساکت = بے حرکت

آتش فشاں = جو آلا مکھی

اشیاء = چیزیں

ساخت = بناوٹ

سوال۔ اس سبق کے مصنف کا نام بتائیں۔

سوال۔ آدمی کی کہانی پروفیسر محمد مجیب صاحب کی کس مشہور کتاب سے لیا گیا ہے؟

سوال۔ زمین پہلے کیسی تھی؟

سوال۔ آتش فشاں سے کیا نکلتا ہے؟

ترتیب 43 کے جواب

[1] اچھے بچے فرمانبردار اور محنتی ہوتے ہیں۔

[2] خدا نے۔ [3] خدا سے



मिशन शिक्षण संवाद



कक्षा- 7th
विषय- उर्दू

पाठ- आदमी की पाठ्य क्रमांक -
कहानी

45

प्रकरण-

मज़मून

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچوں کل ہم نے آپ کو بہت اختصار سے آدمی کی کہانی بتائی تھی۔ آج ہم آپ کو آگے بڑھاتے ہوئے مزید معلومات حاصل کریں گے۔ مصنف آگے لکھتا ہے کہ زندگی کا بیج سمندر سے پیدا ہوا اور سب سے قبل نباتات وجود میں آئیں۔ رفتہ رفتہ یہ نباتات خشکی کی جانب بڑھنے لگیں اور ہوا میں سانس لینا شروع کیا کچھ کیڑے تھے جو سمندر سے نکل کر اٹھلے پانی سے ہوتے ہوئے خشکی کی جانب بڑھنے لگے۔ سب جانور بڑے بڑے اور خوفناک شکل کے ہوتے تھے یہاں زمین کی تہوں سے ان کے ٹھانچے نکلنے پر پتہ چلا ہے پھر اپنی جسامت کی وجہ سے یہ جانور بھی غائب ہو گئے پھر جو جانور پیدا ہوئے وہ دنیا کی آب و ہوا کے مطابق تھے اس وجہ سے زندہ رہ گئے۔ مصنف شاید ڈارون کا نظریہ پیش کر رہا ہے جو سائنس نے غلط ثابت کر دیا ہے مصنف کا کہنا ہے کہ کوئی جانور کچھ عرصے کے بعد دو پیروں پر چلنے لگے اور انسان بننے کی ابتدا ہو گئی جبکہ یہ بات غلط ہے کچھ عرصہ قبل یہ تحقیق سامنے آئی کہ انسان موجودہ شکل میں ہی دنیا میں آیا انسان کا پہلا نام عربی میں آدم اور سنسکرت میں منو کہا گیا ہے جن سے انسانی نسل کا وجود ہوا اور رفتہ رفتہ انسان اس مقام پر پہنچا۔

بچوں کمال ہم نے آپ کو بہت چھوٹے تہیکے سے آادمی کی کہانی بتائی تھی۔ آج ہم آپ کو آاگے بڑھاتے ہوں اور جاننا چاہوں گے۔ لےکھک آاگے لےکھتا ہے کیکہ جیندگی کا بیک سمندر سے پیدا ہوا اور سب سے پہلے کھاس پہیڈ پوئھے کجڑد میں آاے کھیرے-کھیرے کھ نیباتات کھیرکی کی طرف بکڑنے لگی اور کھوا میں سانس لینا شورو کیکیا۔ ککھ کیکڈے تھے جو سمندر سے نیکل کر کھتھے پانی سے ہوتے ہوں کھیرکی کی طرف بکڑنے لگے تب جانور بکڑے-بکڑے اور کھوئفناک کھاکل کے ہوتے تھے۔ کھ آاگے جمنی کی تھوں سے انکے کھانچے نیکلنے پر پتا کھلا ہے۔ کھیر آپنی شریر کی کھجھ سے کھ جانور بھی گایب ہو گے کھیر جو جانور پیدا ہوں کھ کھ دنییا کی آابوہوا کے موتاکیک تھے کھس کھجھ سے کھیدا رھے لےکھک شاکھد ڈاروین کا کھٹیکوئو کھش کر رھا ہے جو آاگے ساڈنس نے گالک ساکیت کر دیکیا ہے۔ ککھ سمنپ پہلے کھ جانکاری سامنے آاڈ کیک کھسان ورتمان روظ میں کھ دنییا میں آاگیا۔

آرکبی میں آادم اور سنسکرت میں منو کہا گیا ہے جین سے کھسانی نسل کا کھجڑد کھ آا اور رپتا رپتا کھسان کھس ماکام پر پہنچا۔

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

मज़ीद = अधिक

क़ब्ल = पहले

नबातात = घास, पेड़ पौधे

जानिब = तरफ़

डार्विन = वैज्ञानिक

इब्तिदा = शुरूआत

प्रश्न,, ज़िन्दगी का बीज कहां पैदा हुआ?

प्रश्न,, कीड़े समुद्र से निकल कर किधर बढ़े?

प्रश्न,, इंसान को अरबी भाषा में क्या कहते हैं?

प्रश्न,, क्या इंसान पहले जानवर था?



आदमी की कहानी

مشق

الفاظ = معنی

مزید = زیادہ

قبل = پہلے

نباتات = گھاس پیڑ پودے

جانب = طرف

ڈارون = سائنس دان

ابتدا = شروعات

سوال.. زندگی کا بیج کہاں پیدا ہوا؟

سوال.. کیڑے سمندر سے نکل کر کدھر بڑھے؟

سوال.. انسان کا نام عربی زبان میں کیا ہے؟

سوال.. کیا انسان پہلے جانور تھا؟

ترتیب ۱، ۲، ۳ کے جواب

(۱) پروفیسر محمد مجیب

(۲) دنیا کی کہانی

(۳) آگ کا گولا

(۴) لوہا، تانبا، بیتل اور

بہت سی اشیاء



आदमी
पाठ-
की
कहानी

मिशन शिक्षण संवाद



विषय-

कक्षा-

पाठ्य क्रमांक -

46

प्रकरण-

मज़मून

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچوں کل تک ہم نے آپ کو مصنف کے خیالات انسانی زندگی کی نمو کے بارے میں بتائے۔ آج ہم اگے سبق پڑھاتے ہیں کہ مصنف کیا عرض کر رہا ہے۔ زندگی جب سمندر سے نکل کر خشکی میں قیام پذیر ہوئی دنیا جب بارش سے سرد ہوئی تو ایسے سرد ہوئی کہ برف ہی برف چہار جانب بھر گئی۔ پھر گرمی آہستہ آہستہ بڑھی اور برف پگھل کر برفستان سمندر میں سما گئے اور زندگی پھر ابھری پھر سے لاکھوں برس پہلے جو جانور آباد تھے یا انسان وہ سب برف کے نیچے دب کر رہ گئے انسان نے پھر آگ جلانا سیکھی اور وہ جانوروں کو بھون کر کھانے لگے۔ اب ایک مشکل بحث یہ ہے کہ سائنسدان جو آدمی کو بن مانس کا ہی ایک روپ بتاتے ہیں اور جو مذہب انسان کی ابتداء آدم سے بتاتے ہیں دونوں میں ایک غلط اور ایک صحیح ہے۔ یہ خود آپ سمجھ سکتے ہیں کہ انسانی برادری کو ایک قدیمی انسان کی اولاد بتانا زیادہ صحیح ہے کیونکہ سائنس یقین کے ساتھ کچھ بھی نہیں بتا سکتی سچ یہ ہے کہ ہم سب آدم کی اولاد ہیں اور آدم ہماری طرح انسان ہی تھے۔

بچوں کال تک ہم نے آپ کو مصنف کے خیالات انسانی زندگی کے بارے میں بتائے۔ آج ہم آگے سبق پڑھاتے ہیں کہ مصنف کیا عرض کر رہا ہے۔ زندگی جب سمندر سے نکل کر خشکی میں قیام پذیر ہوئی دنیا جب بارش سے سرد ہوئی تو ایسے سرد ہوئی کہ برف ہی برف چہاروں طرف بڑھ گئی پھر گرمی آہستہ آہستہ بڑھی اور برف پگھل کر برفستان سمندر میں سما گئے اور زندگی پھر ابھری پھر سے لاکھوں برس پہلے جو جانور آباد تھے یا انسان وہ سب برف کے نیچے دب کر رہ گئے انسان نے پھر آگ جلانا سیکھی اور وہ جانوروں کو بھون کر کھانے لگے۔ اب ایک مشکل بحث یہ ہے کہ سائنسدان جو آدمی کو بن مانس کا ہی ایک روپ بتاتے ہیں اور جو مذہب انسان کی ابتداء آدم سے بتاتے ہیں دونوں میں ایک غلط اور ایک صحیح ہے۔ یہ خود آپ سمجھ سکتے ہیں کہ انسانی برادری کو ایک قدیمی انسان کی اولاد بتانا زیادہ صحیح ہے کیونکہ سائنس یقین کے ساتھ کچھ بھی نہیں بتا سکتی سچ یہ ہے کہ ہم سب آدم کی اولاد ہیں اور آدم ہماری طرح انسان ہی تھے۔

अभ्यास कार्य



शब्द = अर्थ

नमू = बढना

चहार जानिब = चारों ओर

इब्तिदा = शुरुआत

क़दीमी = पुरानी

निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग

करो

भेस बदलना। बे डौल होना। रिश्ता जोड़ना।

खाली स्थान भरो:-

दुनिया जब.....पड़ गई तो कहीं से.....की तह में

ज़िन्दगी का.....पहुंच गया। वहां वह फटा और.....

लाखों करोड़ों बरस में तरह तरह के.....बदले।

आहिस्ता आहिस्ता यानी वहां लाखों करोड़ों.....में

उसने.....की सूरत में.....की तरफ क़दम बढ़ाया।



مشق

الفاظ = معنی

چہار جانب = چاروں

طرف

نمو = بڑھنا

ابتداء = شروعات

قدیمی = پرانا

مندرجہ ذیل الفاظ اپنے جملوں میں استعمال کیجئے۔

بھیس بدلنا۔ بے ڈول ہونا۔ رشتہ جوڑنا

خالی جگہ پر کیجئے

دنیا جب.....پڑ گئی تو کہیں سے.....کی تہ

میں زندگی کا.....پہنچ گیا۔ وہاں وہ پھٹا

اور.....لاکھوں کروڑوں سال میں طرح طرح

کے.....بدلے۔ آہستہ آہستہ یعنی وہاں لاکھوں

کروڑوں.....میں اس نے.....کی صورت

میں.....کی طرف قدم بڑھایا۔



पाठ- मेरी साइकिल
पाठ्य क्रमांक -

47 प्रकरण- मज़मून

लेखक परिचय एवं सबक परिचय **مصنف کا تعارف و سبق کے بارے میں**

پطرس بخاری کا اصل نام احمد شاہ بخاری تھا لیکن وہ اپنے ادبی نام پطرس بخاری سے زیادہ مشہور تھے انہوں نے اردو میں بڑے دلچسپ اور مزاحیہ مضامین لکھے ہیں ان کے مضامین کا مجموعہ پطرس کے مضامین کے نام سے چھپ چکا ہے یہ سبق پطرس کے مضمون مرحوم کی یاد میں سے تلخیص کر کے میری سائیکل کے نام سے دیا جا رہا ہے ان کا انتقال 1958ء میں ہوا۔ اس سبق میں بخاری صاحب ایک پرانی سائیکل کا مزاحیہ تذکرہ کرتے ہوئے مالک اور ملازم کی گفتگو تحریر کر رہے ہیں نوکر سے پوچھتے ہیں کہ وہ سائیکل جو مرزا صاحب نے انہیں بھجوائی تھی وہ کہاں ہے کیونکہ انہیں یقین ہی نہیں تھا کہ جو سائیکل تحفہ میں بھجوائی ہے وہ اتنی پرانی اور بوسیدہ ہو گی اسی لیے انہوں نے نوکر سے کہا کہ اسے صاف کیوں نہیں کیا نوکر نے کہا کہ دو تین دفعہ صاف کر چکا ہوں پھر نوکر تیل لے کر آیا اور اس کے پہیوں وغیرہ میں ڈالنے لگا کیونکہ وہ پہلے ہی آواز کر رہے تھے سائیکل اتنی پرانی تھی کہ تیل ڈالنے والے سوراخ زنگ کی وجہ سے کہیں دفن کر رہ گئے تھے اور دکھائی بھی نہیں دے رہے تھے تیل ڈالنے پر تیل سوراخ میں نہ جا کر ادھر ادھر پھیلنے لگا مالک نے کہا کہ تیل اوپر ہی ڈال دو شاید رفتہ رفتہ سوراخ میں چلا جائے۔

بچوں پیترس بخاری کا اصل نام احمد شاہ بخاری تھا لیکن وہ اپنے ادبی نام پیترس بخاری سے زیادہ مشہور تھے انہوں نے اردو میں بڑے دلچسپ اور مزاحیہ مضامین لکھے ہیں ان کے مضامین کا مجموعہ پیترس کے مضامین کے نام سے چھپ چکا ہے یہ سبق پیترس کے مضمون مرحوم کی یاد میں سے تلخیص کر کے میری سائیکل کے نام سے دیا جا رہا ہے ان کا انتقال 1958ء میں ہوا۔ اس سبق میں بخاری صاحب ایک پرانی سائیکل کا مزاحیہ تذکرہ کرتے ہوئے مالک اور ملازم کی گفتگو تحریر کر رہے ہیں نوکر سے پوچھتے ہیں کہ وہ سائیکل جو مرزا صاحب نے انہیں بھجوائی تھی وہ کہاں ہے کیونکہ انہیں یقین ہی نہیں تھا کہ جو سائیکل تحفہ میں بھجوائی ہے وہ اتنی پرانی اور بوسیدہ ہو گی اسی لیے انہوں نے نوکر سے کہا کہ اسے صاف کیوں نہیں کیا نوکر نے کہا کہ دو تین دفعہ صاف کر چکا ہوں پھر نوکر تیل لے کر آیا اور اس کے پہیوں وغیرہ میں ڈالنے لگا کیونکہ وہ پہلے ہی آواز کر رہے تھے سائیکل اتنی پرانی تھی کہ تیل ڈالنے والے سوراخ زنگ کی وجہ سے کہیں دفن کر رہ گئے تھے اور دکھائی بھی نہیں دے رہے تھے تیل ڈالنے پر تیل سوراخ میں نہ جا کر ادھر ادھر پھیلنے لگا مالک نے کہا کہ تیل اوپر ہی ڈال دو شاید رفتہ رفتہ سوراخ میں چلا جائے۔

अभ्यास कार्य



शब्द = अर्थ
पितरस = हज़रत ईसा का एक साथी जो मछुआरा था।
मज़ाहि़या = हंसी मज़ाक़
मजमूआ = ज़खीरा
तलखीस = खुलासा
तज़करा = ज़िक्र
बोसीदा = कमजोर



مشق

الفاظ = معنی

پطرس = حضرت عیسیٰ کا ایک حواری جو ماہی گیر تھا۔
مزاحیہ = ہنسی مذاق
مجموعہ = ذخیرہ
تلخیص = خلاصہ
تذکرہ = ذکر

प्रश्न,, पितरस बुखारी का असली नाम

क्या था?

प्रश्न,, पितरस बुखारी का इंतकाल कब

हुआ?

प्रश्न,, पितरस को साइकिल किसने

भेजी?

प्रश्न,, सूराखों में तेल क्यों नहीं जा रहा

था?

بوسیدہ = کمزور
سوال.. پطرس بخاری کا اصل نام کیا تھا؟

سوال.. پطرس بخاری کا انتقال کب ہوا؟

سوال.. پطرس بخاری کو سائیکل کس نے بھیجی؟

سوال.. تیل سوراخ میں ڈالنے پر ادھر ادھر کیوں پھیلنے لگا؟



सबक़ का खुलासा
(पाठ का सारांश)

سبق کا خلاصہ

بجو کل میں نے آپ کو بتایا کہ کس طرح پرانی سائیکل کے بارے میں مالک اور ملازم دونوں گفتگو کر رہے تھے۔ مالک جب سائیکل لیکر چلنے لگے تو سائیکل سے مختلف قسم کی آوازیں آنے لگیں۔ جیس جیس چوں چوں اور سائیکل کا پیچھلا پہیہ تو چلنے کے ساتھ ساتھ لہرا بھی رہا تھا۔ گدی نیچے بیٹھ رہی تھی جین بار بار اتر رہی تھی جسے رک رک کر چڑھانا پڑ رہا تھا۔ ہینڈل ایک جانب گھوم رہا تھا اور ہینڈل بھی اپنی مستی میں آوازیں کر رہے تھے۔ پھر میں رک گیا اور اوزار نکال کر ہینڈل کو سیدھا کیا اور دوبارہ سوار ہو گیا۔ کچھ دور بھی نہ چل پایا تھا کہ اچانک ہینڈل نیچے بیٹھ گیا اور میں گرتے گرتے بجا۔ مشکل سے ہی اگے گیا ہونگا کہ سائیکل کا اگلا پہیہ الگ ہو کر جھومتا ہوا سڑک کے دوسرے کنارے پر جا پہنچا۔ میری حالت کا آپ تصور کریں تو آپ کو معلوم ہوگا دور سے میں ایسا لگ رہا تھا جیسے کوئی عورت انا گوندھ رہی ہے۔ میں نے فوراً اپنے آپ کو سنبھالا اور جو پہیہ الگ ہو گیا تھا اسکو ہاتھ میں لیا اور باقی دوسرا سامان دوسرے ہاتھ میں پکڑ کر گھر کی جانب روانہ ہو گیا۔

बच्चो कल मैंने आपको बताया कि किस तरह पुरानी साइकिल के बारे में मालिक और मुलाजिम दोनों बात चीत कर रहे थे। मालिक जब साइकिल लेकर चलने लगे तो साइकिल से भिन्न भिन्न प्रकार की आवाज़ें आने लगीं। चीं चीं चुं चुं और साइकिल का पिछला पहिया तो चलने के साथ साथ लहरा भी रहा था गद्दी नीचे बैठ रही थी। चैन बार बार उतर रही थी जिसे रुक रुक कर चढ़ाना पड़ रहा था। हैंडिल एक जानिब घूम रहा था। पैडिल भी अपनी मस्ती में आवाज़ें कर रहे थे। फिर मैं रुक गया और औज़ार निकाल कर हैंडिल को सीधा किया और दोबारा सवार हो गया, कुछ दूर भी न चल पाया था कि अचानक हैंडिल नीचे बैठ गया और मैं गिरते गिरते बचा, मुश्किल से ही आगे गया होंगा कि साइकिल का अगला पहिया अलग होकर सड़क के दूसरे किनारे पर जा पहुंचा। मेरी हालत का आप ध्यान करें तो आप को मालूम होगा दूर से मैं ऐसा लग रहा था जैसे कोई औरत आटा गूंध रही हो। मैंने फ़ौरन अपने आप को संभाला और जो पहिया अलग हो गया था उसको हाथ में लिया और बाक़ी सामान दूसरे हाथ में पकड़ कर घर की ओर चल दिया।

अभ्यास कार्य

प्रश्न,, साइकिल चलाते चलाते साइकिल सवार ज़मीन पर क्यों गिर गया?

प्रश्न,, आखिर में साइकिल सवार की क्या हालत हुई?

प्रश्न,, यह सबक पढ़कर आप को हंसी क्यों आती है?

व्याकरण:- नीचे लिखे वाक्य ध्यान से पढ़ो और इस्म, ज़मीर, सिफ़त, फ़ेल हरफ़ चुनकर अपनी कापी में लिखिए।

कुत्ता रोटी ले गया। कौवा पेड़ पर बोल रहा है। मैं तुमसे बात नहीं करता। अच्छी किताब पढ़ा करो। ताज महल खूबसूरत इमारत है। लखनऊ बड़ा शहर है।

निर्माण - तस्लीम रज़ा खां

مشق

سوال.. سائیکل چلاتے چلاتے سائیکل سوار زمین پر کیوں گر گیا؟

سوال.. آخر میں سائیکل سوار کی کیا حالت ہوئی؟

سوال.. یہ سبق پڑھکر آپ کو ہنسی کیوں آتی ہے؟

قواعد:- نیچے لکھے جملے غور سے پڑھو اور اسم، ضمیر، صفت، فعل، حرف، چنکر اپنی کاپی میں لکھو۔

کتاب پڑھا کرو۔ تاج محل خوبصورت عمارت ہے۔ لکھنؤ بڑا شہر ہے۔



मिशन शिक्षण संवाद



कक्षा- 7th
विषय- उर्दू

पाठ- देश सिंगार
पाठ्य क्रमांक - 50

प्रकरण-

नज़्म

कविता

देश का हुस्न ज़माने को दिखाना है अभी
चांद तारों को भी हैरान बनाना है अभी
मांग चोटी से हिमालय को सजाना है अभी
शम्मा कैलाश के पर्वत पर जलाना है अभी
शम्मा वह शम्मा जो हर घर में उजाला कर दे
सारी दुनिया का अंधेरा तहोबाला कर दे

सारांश

इन इशआर में शायर कहता है कि हमें अपने देश की सुंदरता जमाने के सामने दिखानी है जिस सुंदरता से चांद सितारे भी हैरान हो जाएं। हिमालय की चोटी को भी सजाना है। ऐसी शमा रोशन करना है जो हर घर में खुशियां लेकर आए और सारे जहां के अंधेरे को हमेशा के लिए खत्म कर

शब्द=अर्थ

परबत=पहाड़

तहोबाला=उलट

पुलट



الفاظ=معنی

پریت=پہاڑ

تہ و بالا=الت

پلٹ

نوٹ ➡ ان اشعار میں تمثیل آئی ہیں جیسے تہ و بالا کرنا ہمالہ کو سجانا گھر میں اجالا کرنا ایسے ہی اور تمثیل اپنے استاد سے معلوم کر کے اپنی کاپی میں لکھو اور اپنے جملوں میں استعمال کرو۔

نوٹ ➡ इन अशआर में तमसील आई है जैसे तहो बाला करना, हिमालय को सजाना, घर में उजाला करना, ऐसी ही और तमसील अपने उस्ताद से मालूम करके अपनी कॉपी में लिखो और अपने जुमलो में इस्तेमाल करो।

क्रमांक 49 के उत्तर (1) नज़ीर बनारसी

(2) देश वासियों से (3) खुदा की

ترتیب 49 کے جواب (1) نذیر بنارسی

(2) ہم وطنوں سے۔ (3) خدا کی



नज़्म (कविता)

نظم

एक दिन किस्मत हर अहले वफा बदलेगी
दिल बुझे जाते हैं जिससे वह हवा बदलेगी
जिससे शर्मिदा वतन है वह अदा बदलेगी
ऐ नजीर एक ना एक रोज फ़ज़ा बदलेगी
सबके चेहरे पर हंसी आएगी नूर आएगा
आएगा आएगा वह दिन भी जरूर आएगा

ایک دن قسمت ہر اہل وفا بدلے گی
دل بجھے جاتے ہیں جس سے وہ ہوا بدلے گی
جس سے شرمندہ وطن ہے وہ ادا بدلے گی
اے نظیر ایک نہ ایک روز فضا بدلے گی
سب کے چہرے پہ ہنسی آئے گی نور آئے گا
آئے گا آئے گا وہ دن بھی ضرور آئے گا

نظم کے اس آخری بند میں نذیر اہل وطن سے بہت پر امید ہیں وہ کہتے ہیں کہ یہ جو تاریکی کے حالات ہیں وہ ضرور بدلیں گے سب کے چہروں پر خوشیوں کا نور آئے گا ایک دن ضرور آئے گا کہ وطن کا ہر باشندہ پرمسرت ہوگا اور ہمارا ملک آسمان میں چاند اور سورج کی طرح چمکے گا۔

تشریح

سारांश

कविता के इस अंतिम बंद में नजीर वतन के लोगों से बहुत आशा रखते हैं वह कहते हैं कि यह जो तारीक (अंधेरा) के हालात हैं वह जरूर बदलेंगे सबके चेहरों पर खुशियों का नूर आएगा ऐसा एक दिन जरूर आएगा कि वतन का हर बाशिंदा खुश होगा और हमारा देश आसमान में चांद सूरज की तरह चमकेगा।

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

अहले वफ़ा = वफ़ा

करने वाले

फ़ज़ा = माहौल

तारीकी = अंधेरा

बाशिंदा = रहने वाला

मसरत = खुशी

प्रश्न,, इन अशआर में नज़ीर किससे उम्मीद रखे हुए हैं?

प्रश्न,, नज़ीर को किस दिन का इंतज़ार है?



مشق

الفاظ = معنی

اہل وفا = وفا کرنے والے

فضا = ماحول

تاریکی = اندھیرا

باشندہ = رہنے والا

مسرّت = خوشی

سوال.. ان اشعار میں نذیر

کس سے پر امید ہیں؟

سوال.. نذیر کو کس دن کا

انتظار ہے؟



संक्षिप्त जीवन परिचय

مختصر تعارف سوانح

بچو ہمارے ملک ہندوستان پر جان قربان کرنے والے کن بہادر اس ملک کی حفاظت کرتے ہوئے شہید ہوئے ہیں۔ یہ فوج ہی کی جواں مردی اور ہمت ہے کہ وہ پرخطر حالات میں بھی پہرا دے کر ہماری جانوں کی حفاظت کرتی ہے۔ ایسے ہی ایک بہادر شہید ویر عبدالحمید کے بارے میں ہم آج آپ کو بتانے جا رہے ہیں۔ شہید عبدالحمید مادر ہند کے ایک جیالے سپوت تھے جنہوں نے وطن کی حفاظت کو اپنی زندگی کا مقصد بنایا اور اسی راہ پر چلتے ہوئے اپنی جان قربان کر دی۔ عبدالحمید اترپردیش کے ضلع غازی پور کے ایک گاؤں دھام پور میں یکم جولائی 1933ء کو پیدا ہوئے یہ گاؤں اب حمید دھام کے نام سے مشہور ہے۔ ان کے والد محمد عثمان پہلوان تھے۔ حمید کو نشانہ بازی کا بہت شوق تھا۔ عبدالحمید نے ابتدائی درجے تک ہی تعلیم حاصل کی تھی ان کی یہ آرزو تھی کہ وہ ملک کی خدمت کریں اور اس کے لیے انہوں نے فوج میں جانے کا ارادہ کیا 1954ء عیسوی میں عبدالحمید ہندوستانی فوج میں شامل ہوئے۔

بچو ہمارے देश भारत पर जान कुर्बान करने वाले कई बहादुर इस देश की सुरक्षा करते हुए शहीद हुए हैं। यह फौज ही की जवां मरदी और हिम्मत है कि वह खतरनाक हालात में भी पहरा देखकर हमारी जानों की हिफाजत करती है। ऐसे ही एक बहादुर शहीद वीर अब्दुल हमीद के बारे में हम आज आपको बताने जा रहे हैं। शहीद अब्दुल हमीद मादर ए हिंद के एक जियाले सपूत थे जिन्होंने वतन की सुरक्षा को अपनी जिंदगी का मकसद बनाया और उसी राह पर चलते हुए अपनी जान कुर्बान कर दी अब्दुल हमीद उत्तर प्रदेश के जिला गाजीपुर के एक गांव धामपुर में 1 जुलाई 1933 को पैदा हुए यह गांव अब हमीद धाम के नाम से मशहूर है। उनके पिता मोहम्मद उस्मान पहलवान थे। हमीद को निशानेबाजी का बहुत शौक था अब्दुल हमीद ने शुरू दर्जे तक ही तालीम हासिल की थी उनकी आरजू थी कि वह देश की खिदमत करें और उसके लिए उन्होंने फौज में जाने का इरादा किया 1954 में अब्दुल हमीद हिंदुस्तानी फौज में शामिल हो गए।

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

पुर खतर = मुश्किल रास्ते

मादर ए वतन = भारत माता

जियाले = बहादुर



مشق

الفاظ = معنی

پر خطر = مشکل راستہ

مادر وطن = بھارت ماتا

جیالے = بہادر

سوال.. ہمارے ملک کی سرحدوں کی حفاظت کون کرتا ہے؟

سوال.. ویر عبدالحمید کس صوبہ میں اور کب پیدا کرتا ہے؟

سوال.. دھام پور اب کس نام سے مشہور ہے؟

سوال.. ویر عبدالحمید کس چیز کا شوق تھا؟

سوال.. دھام پور اب کس نام سے مشہور ہے؟

سوال.. عبدالحمید کو کس چیز کا شوق تھا؟

سوال.. عبدالحمید فوج میں کب شامل ہوئے؟

سوال.. دھام پور اب کس نام سے مشہور ہے؟

سوال.. عبدالحمید کو کس چیز کا شوق تھا؟

سوال.. عبدالحمید فوج میں کب شامل ہوئے؟

ترتیب 5 کے جواب

(1) اہل وطن سے (2) اہل وطن کے جہدوں پر خوشی آنے کا اور یکجہتی کا



मिशन शिक्षण संवाद



कक्षा- 7th
विषय- उर्दू

पाठ- वीर अब्दुल हमीद
पाठ्य क्रमांक -

53

प्रकरण-

मज़मून

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچو کل ہم نے آپ کو عبدالحمید کے بارے میں مختصر بتایا تھا۔ آج ہم آپ کو ان کی زندگی کی مزید داستان سنا رہے ہیں۔ 1965ء میں جب چین نے بھارت پر حملہ کیا تو عبدالحمید کو بھی اس جنگ میں اپنے جوہر دکھانے کا موقع ملا اس جوانمردی سے بھارتی فوج کو ان کے بہادری کا احساس ہو چکا تھا۔ 1965 ستمبر میں جب ہندو پاک کی جنگ ہوئی جنگ اپنے شباب پر تھی اور عبدالحمید بڑی بہادری سے ان کا مقابلہ کر رہے تھے اچانک ان کی نگاہ دشمن کے ٹینکوں پر پڑی جو ان کی طرف بڑھ رہے تھے عبدالحمید نے خطرے کو سمجھ لیا اور اپنی جیپ کو ایک جگہ آڑ میں لے جا کر حملہ شروع کر دیا عبدالحمید کے حملے سے دشمن کے حلقے میں بھگدڑ مچ گئی عبدالحمید کے اندر بلا کی پھرتی آ گئی اور وہ دشمن کے جدید ٹیکنالوجی کے ٹینکوں کے خلاف بھارتی فوج کے بہادری کا ایک اور نمونہ بن گئے۔

بچو کل ہم نے آپ کو عبدالحمید کے بارے میں کچھ بتایا تھا آج ہم آپ کو ان کی زندگی کی اور داستان سنا رہے ہیں۔ 1962 میں جب چین نے بھارت پر حملہ کیا تو عبدالحمید کو بھی اس جنگ میں اپنے جوہر دکھانے کا موقع ملا اس جوانمردی سے بھارتی فوج کو ان کے بہادری کا احساس ہو چکا تھا۔ 1965 ستمبر میں جب ہندو پاک کی جنگ ہوئی جنگ اپنے شباب پر تھی اور عبدالحمید بڑی بہادری سے ان کا مقابلہ کر رہے تھے اچانک ان کی نگاہ دشمن کے ٹینکوں پر پڑی جو ان کی طرف بڑھ رہے تھے عبدالحمید نے خطرے کو سمجھ لیا اور اپنی جیپ کو ایک جگہ آڑ میں لے جا کر حملہ شروع کر دیا عبدالحمید کے حملے سے دشمن کے حلقے میں بھگدڑ مچ گئی عبدالحمید کے اندر بلا کی پھرتی آ گئی اور وہ دشمن کے جدید ٹیکنالوجی کے ٹینکوں کے خلاف بھارتی فوج کے بہادری کا ایک اور نمونہ بن گئے۔



سوال--- چین نے بھارت پر حملہ کب کیا؟

سوال-- چین اور بھارت کی جنگ میں کس کی جیت ہوئی؟

سوال-- ہند و پاک کی جنگ کب ہوئی؟

ترتیب 52 کے جوابات
(1) فوج (2) اترپردیش کے غازی پور میں۔ یکم جولائی 1933ء کو۔ (3) حمید دھام۔ (4) پرندوں کے شکار کرنے کا۔ (5) 1954ء میں



मिशन शिक्षण संवाद



कक्षा- 7th
विषय- उर्दू

पाठ-

पाठ्य क्रमांक -

वीर अब्दुल हमीद

54

प्रकरण-

मज़मून

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچوں کل تک ہم نے آپ کو بتایا ہے کہ ویر عبدالحمید کس طرح فوج میں شامل ہوئے اور چین و پاک کی جنگ میں کس بہادری کا مظاہرہ کیا تھا۔ آپ نے کل پڑھا ہے کہ عبدالحمید پاکستان کے ٹینکوں کو تباہ کرنے لگے ان کے اچانک حملے سے پاکستان کی فوج میں بھگدڑ مچ گئی اسی درمیان دشمن نے عبدالحمید کو حملہ کرتے ہوئے دیکھ لیا اور ٹینکوں کے رخ عبدالحمید کی جانب موڑ کر بموں کی بارش کر دی دفعتاً ایک گولہ ان کی جیب پر گرا اور وہ شہید ہو گئے۔ تب تک وہ دشمن کے کن ٹینک تباہ کر چکے تھے۔ آخر کار ہندوستان کی فتح ہوئی۔ اس عظیم کارنامہ پر انکی شہادت کے بعد ہندوستان کے سب سے بڑے فوجی اعزاز پریم ویر چکر سے نوازا گیا۔ تو بچو آپ بھی وطن کی محبت میں ایسے ہی جاں نثاری کے جذبے کو اپنے اندر پیدا کریں۔ تاکہ کوئی دشمن ہمارے ملک کی جانب کبھی بھی آنکھ اٹھانے کی جرأت نہ کر سکے۔ ہمیں اپنے ملک کی حفاظت اپنی جان دیکر بھی کرنی پڑے تو ہم کریں گے، یہی عہد آج ہم کرتے ہیں۔

بچوں کل تک ہم نے آپ کو بتایا ہے کہ ویر عبدالحمید کس طرح فوج میں شامل ہوئے اور چین و پاک کی جنگ میں کس بہادری کا مظاہرہ کیا تھا۔ آپ نے کل پڑھا ہے کہ عبدالحمید پاکستان کے ٹینکوں کو تباہ کرنے لگے ان کے اچانک حملے سے پاکستان کی فوج میں بھگدڑ مچ گئی اسی درمیان دشمن نے عبدالحمید کو حملہ کرتے ہوئے دیکھ لیا اور ٹینکوں کے رخ عبدالحمید کی جانب موڑ کر بموں کی بارش کر دی دفعتاً ایک گولہ ان کی جیب پر گرا اور وہ شہید ہو گئے۔ تب تک وہ دشمن کے کن ٹینک تباہ کر چکے تھے۔ آخر کار ہندوستان کی فتح ہوئی۔ اس عظیم کارنامہ پر انکی شہادت کے بعد ہندوستان کے سب سے بڑے فوجی اعزاز پریم ویر چکر سے نوازا گیا۔ تو بچو آپ بھی وطن کی محبت میں ایسے ہی جاں نثاری کے جذبے کو اپنے اندر پیدا کریں۔ تاکہ کوئی دشمن ہمارے ملک کی جانب کبھی بھی آنکھ اٹھانے کی جرأت نہ کر سکے۔ ہمیں اپنے ملک کی حفاظت اپنی جان دیکر بھی کرنی پڑے تو ہم کریں گے، یہی عہد آج ہم کرتے ہیں۔

بچوں کل تک ہم نے آپ کو بتایا ہے کہ ویر عبدالحمید کس طرح فوج میں شامل ہوئے اور چین و پاک کی جنگ میں کس بہادری کا مظاہرہ کیا تھا۔ آپ نے کل پڑھا ہے کہ عبدالحمید پاکستان کے ٹینکوں کو تباہ کرنے لگے ان کے اچانک حملے سے پاکستان کی فوج میں بھگدڑ مچ گئی اسی درمیان دشمن نے عبدالحمید کو حملہ کرتے ہوئے دیکھ لیا اور ٹینکوں کے رخ عبدالحمید کی جانب موڑ کر بموں کی بارش کر دی دفعتاً ایک گولہ ان کی جیب پر گرا اور وہ شہید ہو گئے۔ تب تک وہ دشمن کے کن ٹینک تباہ کر چکے تھے۔ آخر کار ہندوستان کی فتح ہوئی۔ اس عظیم کارنامہ پر انکی شہادت کے بعد ہندوستان کے سب سے بڑے فوجی اعزاز پریم ویر چکر سے نوازا گیا۔ تو بچو آپ بھی وطن کی محبت میں ایسے ہی جاں نثاری کے جذبے کو اپنے اندر پیدا کریں۔ تاکہ کوئی دشمن ہمارے ملک کی جانب کبھی بھی آنکھ اٹھانے کی جرأت نہ کر سکے۔ ہمیں اپنے ملک کی حفاظت اپنی جان دیکر بھی کرنی پڑے تو ہم کریں گے، یہی عہد آج ہم کرتے ہیں۔

پارمवीर चक्र हमीद धाम

پریم ویر چکر حمید دھام

پੈٹن ٹینکوں کا کبیرستان अबدول हमीद

یہٹن ٹینکوں کا قبرستان عبدالحمید

धामपुर खेमकरण

ترتیب 53 کے جواب

गन माउंटेड जीप हिंदुस्तान

(1) 1962ء میں (2)

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

چین کی

کھیم کرن

دھام پور

जवां मरदी, तथ्यीनात, घमासान, टूट पड़ना, पांसा

ہندوستان

کن ماونٹیڈ جیب۔

पलटना।

درج ذیل الفاظ کے معنی واضح کرتے ہوئے اپنے

क्रमांक 53 के उत्तर

جملوں میں استعمال کیجیے۔

(1) 1962 ई० में (2) चीन की (3) 1965 ई० में

جوانمردی، تعینات، گھمسان، ان نوٹ پڑنا، پانسہ پلٹنا۔



मिशन शिक्षण संवाद



कक्षा- 7th
विषय- उर्दू

पाठ- बचपन की याद
पाठ्य क्रमांक -

55

प्रकरण-

नज़्म

कविता का सारांश

نظم کا خلاصہ

بچو آپ سب کوئی نہ کوئی کھیل روز کھیلتے ہیں اور نئے نئے طریقوں سے اپنی زندگی خوشگوار بناتے ہیں۔ ہم نے بھی بچپن میں بہت سے کھیل کھیلے جو کھیل آپ لوگ آج کل کھیلتے ہیں وہ ہم نے نہیں کھیلے۔ اس نظم میں شاعر نے اپنی بچپن کی یادوں کو ہم سے سجا کیا ہے۔ منشی درگا سہانے سرور جہاں آبادی اردو کے مشہور شاعر ہیں انہوں نے اس نظم میں اپنے بچپن کا زمانہ یاد کیا ہے اپنے بچپن کے زمانے کو یاد کرتے ہوئے منشی جی کہتے ہیں کہ بارش کے پانی میں کاغذ کی کشتی بنا کر کھیلوں بچپن کے کھلونوں سے کھیلوں اور باجا بجا لوں۔ کس طرح سے بارش کو ہمارے کھیل دلنشین بناتے تھے بجلی چمکتی تھی اور ٹھنڈی ٹھنڈی پانی کی پھوار ہمارے چہروں پر پڑتی تھی۔ کبھی ہم کیچڑ میں پھسلتے تھے اور ماں کبھی ناراض ہوتی اور کبھی مسکرا دیتی تھی کتنی خوبصورت یادیں ہیں بچپن کی جوانی اسی خوبصورت بچپن کے دور میں لے چل میرا بچپن آخر کہاں کھو گیا آج میں ماں کی آغوش سے بھی جدا ہو گیا سڑکوں کی خاک اڑاتا گھر کو لوٹتا ہوں۔ اے میرے بچپن کی آرزو میں تم سے جدا ہو گیا ہوں۔

تو بچو جب آپ بڑے ہو جائیں گے تو آپ کو بھی یہ دن بہت یاد آئیں گے۔ آئیں گے نا۔ جس طرح منشی جی کو یاد آ رہے ہیں۔

بچوں آپ سب کوئی نہ کوئی خیل رोज खेलते हैं और नए-नए तरीकों से अपनी जिंदगी खुशगवार बनाते हैं। हमने भी बचपन में बहुत से खेल खेले। जो खेल आप लोग आज खेलते हैं वह हमने नहीं खेले। इस कविता में शायर ने अपने बचपन की यादों को हम सब से साझा किया है मुंशी दुर्गा सहाय सरवर जहानाबाद उर्दू के मशहूर शायर हैं उन्होंने इस नज़्म में अपने बचपन का जमाना याद किया है। अपने बचपन के समाने को याद करते हुए मुंशी जी कहते हैं कि बारिश के पानी में कागज की कشتी बनाकर खेलूं बचपन के खिलौनों से खेलूं और बाजा बजा लूं किसी तरह से बारिश को हमारे खेल दिनदर्शी बनाते थे बिजली चमकती थी और ठंडी ठंडी पानी की फुहार हमारे चेहरों पर पड़ती थी कभी हम कीचड़ में चलते थे और गंदगी में पूरे लिपट जाते थे मां यह देखकर कभी नाराज होती और कभी मुस्कुरा देती थी। कितनी खूबसूरत यादें हैं बचपन की आह मेरी जवानी मुझे इस खूबसूरत बचपन के दौर में ले चल मेरा बचपन आखिर कहाँ खो गया आज मैं मां की गोद से भी जुदा हो गया सड़कों की धूल उड़ता घर को लौटता हूँ आह मेरे बचपन की आरजूओ मैं तुमसे जुदा हो गया हूँ।

तो बच्चों जब आप बड़े हो जाएंगे तो आपको भी यह दिन बहुत याद आएंगे, आएंगे ना जिस तरह मुंशी जी को याद आ रहे हैं और वो अफसोस कर रहे हैं।

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

उम्र रफ़ता = गुज़री हुई उम्र

तिफ़ली = बचपन

रआद = गड़गड़ाहट

शबाब = जवानी

दोश = कन्धा

क्रमरी = एक क्रिस्म का परिंदा

प्रश्न,, कविता में शायर अपनी उम्र की किस दौर की बातें कर रहा

है?

प्रश्न,, इस नज़्म के शायर कौन हैं?

प्रश्न,, नज़्म में शायर किस बात की तमन्ना कर रहा है?



مشق

الفاظ = معنی

عمر رفتہ = گزرتی ہوئی عمر

طفلی = بچپن

رعد = گزگڑاہٹ

شباب = جوانی

دوش = کندھا

قمری = ایک قسم کا پرندہ

سوال.. نظم میں شاعر اپنی عمر کی کس دور کی

باتیں کر رہا ہے؟

سوال... اس نظم کے شاعر کون ہیں؟

سوال.. نظم میں شاعر کس بات کی تمنا کر رہا



بجو آج ہم آپ کو ایک اناٹھ لڑکی کی کہانی سنا رہے ہیں، اناٹھ اس بچے کو کہتے ہیں جس کے باپ کا سایہ اس کے سر سے بھگوان اٹھا لیتا ہے یعنی جس کا باپ مر جاتا ہے۔ یہ کہانی منشی پریم چند کے افسانے کا اختصار ہے پریم چند کے بارے میں تو ہم آپ کو پہلے ہی بتا چکے ہیں کہ وہ ہندی اردو دونوں زبانوں کے مشہور افسانہ نگار ہیں ان کے افسانے معاشرے کی بد حالی کو بخوبی بیان کرتے ہیں۔ ایک سیٹ جی اسکول کا معائنہ کرنے گئے تھے جب وہ واپس چلنے لگے تو ایک معصوم سی بچی نے ان کا دامن پکڑ لیا اسکول کے افسر نے اس بچی کے بارے میں بتایا کہ یہ بچی یتیم ہے اس کی والدہ دوسروں کے کپڑے سی کر اپنا گزارا کرتی ہیں۔ سینھ جی آنکھوں میں آنسو آگئے۔ انہوں نے سوچا کہ اس معصوم بچی کے دل میں کتنے ارمان ہوں گے ساتھ کی بچیاں اپنے کھلونے دکھاتی ہونگی تو اس کے دل پر کتنا درد ہوتا ہوگا کہ کاش میرا بھی باپ ہوتا باپ کی محبت میں خوشی اور شوق ہوتا ہے جس سے بچے خوب سمجھتے ہیں سینھ جی نے روہنی کو پیار سے گلے لگایا اور بولے یتیم میں آپ کو اپنی بیٹی بناؤں گا چلو اب چھٹی کا وقت ہو گیا ہے میں آپ کو گھر چھوڑ دوں۔ روحانی نے بڑے فخر سے اپنی سہیلیوں کی جانب ایسے دیکھا جیسے وہ انہیں جڑا رہی ہے۔

بच्चों आज हम आपको एक अनाथ लड़की की कहानी सुना रहे हैं। अनाथ उस बच्चे को कहते हैं जिसके बाप का साया उसके सर से भगवान उठा लेता है यानी जिसका बाप मर जाता है यह कहानी मुंशी प्रेमचंद के अफसाने का निचोड़ है प्रेमचंद के बारे में तो हम आपको पहले ही बता चुके हैं कि वह हिंदी उर्दू दोनों भाषाओं के मशहूर अफसाना निगार हैं उनके अफसाने समाज की बदहाली को अच्छी तरह से बयान करते हैं।

एक सेठ जी स्कूल का निरीक्षण करने के गए थे जब वह वापस चलने लगे तो एक मासूम सी बच्ची ने उनका दामन पकड़ लिया स्कूल के अफसर ने इस बच्ची के बारे में बताया कि यह बच्ची यतीम है उसकी वाल्दा दूसरों के कपड़े सी कर अपना गुजारा करती है सेठ जी की आंखों में आंसू आ गए उन्होंने सोचा कि इस मासूम बच्ची के दिल में कितने अरमान होंगे साथ की बच्चियां अपने खिलौने दिखाती होंगी तो उसके दिल पर कितना दर्द होता होगा कि काश मेरा भी बाप होता बाप की मोहब्बत में खुशी और शौक होता है जिसे बच्चे खूब समझते हैं सेठ जी ने रोहनी को प्यार से गले लगाया और बोले बेटी मैं आपको अपनी बेटी बना लूंगा चलो अब छुट्टी का वक्त हो गया है मैं आपको घर छोड़ दूँ। रोहनी ने बड़े गर्व से अपनी सहेलियों की तरफ ऐसे देखा जैसे वह उन्हें चिड़ा रही

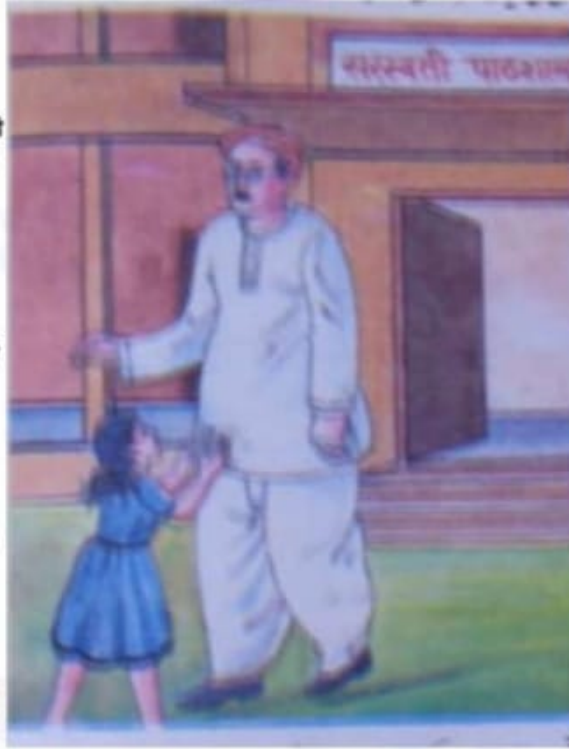


- سوال.. بچوں اس کہانی کے مصنف کون ہیں؟
سوال.. یتیم کسے کہتے ہیں؟
سوال.. سینھ جی اسکول میں کیوں آئے تھے؟
سوال... اس یتیم بچی کا کیا نام تھا؟
سوال.. روہنی کی ماں کیا کام کرتی تھی؟
سوال.. بच्चों इस कहानी के लेखक कौन है?
सवाल.. अनाथ किसे कहते हैं?
सवाल.. सेठ जी स्कूल में क्यों आए थे?
सवाल.. इस अनाथ बच्ची का क्या नाम था?
सवाल.. रोहनी की महक क्या काम करती थी?



पाठ

बच्चों कल तक हमने आपको बताया कि रोहिणी सेठ जी से कितनी मानूस(परिचित) हो गई थी सेठ जी उसे लेकर अपनी कार में बाजार गए और उसको बाजार की सैर कराने लगे। रोहिणी सेठ जी से बातें करते करते थक सी गई थी। सेठ जी ने रोहिणी को बहुत से खिलौने और चीजें लेकर दी सेठजी उसे शाम तक सैर कराते रहे और शाम होने पर उसके घर गए। रोहिणी की मां घर पर नहीं थी वह कपड़े देने किसी के यहां गई हुई थी जब घर वापस आई तो रोहिणी को देख कर खुशी से मुस्कुरा कर बोली के कहां रह गई थी?? रोहिणी ने अपने खिलौने और चीजें अपनी मां को दिखाना शुरू की और कहा के देखो सामने कौन खड़ा है रोहिणी की मां ने जैसी नजर उठाई तो देखा कि वह देवता खड़ा है जिसका जिक्र उसका शीहर अक्सर किया करता था मगर उसने शर्म से सर झुका लिया रोहिणी मां की गोद से उतरकर बरामदे में सेठ जी के पास गई और मासूमियत से बोली क्या तुम मेरे बाप हो सेठ जी ने उसे प्यार करते हुए कहा कि हूं तुम मेरी बेटी हो सेठ जी ने रोहिणी की मां को यकीन दिलाया कि आज से मैं उसका वजीफा बांध रहा हूं और पर्स निकालते हुए कुछ रुपए देकर कहा कि यह उसकी पहली क्रिस्त है रोहिणी की मां की आंखों में आंसू आ गए रोहिणी की मां ने दुआ देते हुए कहा कि आपने जो एहसान किया है भगवान आपको उसका बदला



سبق

بجو کل تک ہم نے آپ کو بتایا کہ روہنی سیٹھ جی سے کتنی مانوس ہو گئی تھی۔ سیٹھ جی اسے لے کر اپنی کار میں بازار گئے اور اس کو بازار کی سیر کرائے گئے۔ روہنی سیٹھ جی سے باتیں کرتے کرتے تھک سی گئی تھی۔ روہنی کو بہت سے کھلونے اور چیزیں لے کر دیں۔ سیٹھ جی اسے شام تک سیر کراتے رہے اور شام ہونے پر اس کے گھر گئے۔ روہنی کی ماں گھر پر نہیں تھی وہ کپڑے دینے کسی کے ہاں گئی ہوئی تھی۔ جب گھر واپس آئیں تو روہنی کو دیکھ کر خوشی سے مسکرا کر بولی کہاں رہ گئی تھی؟؟ روہنی نے اپنے کھلونے اور چیزیں اپنی ماں کو دکھانا شروع کیا اور کہا کہ دیکھو سامنے کون کھڑا ہے۔ روہنی کی ماں نے جیسے ہی نظر اٹھائی تو دیکھا کہ وہ دیوتا کھڑا ہے جس کا ذکر اس کا شوہر اکثر کیا کرتا تھا مگر اس نے شرم سے سر جھکا لیا روہنی اپنی ماں کی گود سے اتر کر برآمدے میں سیٹھ جی کے پاس گئی اور معصومیت سے بولی کیا تم میرے باپ ہو سیٹھ جی نے اسے کہا کہ تم میری بیٹی ہو یقین دلایا کہ آج سے میں اس کا وظیفہ باندھ رہا ہوں اور پرس نکالتے ہوئے کچھ روپے دے کر کہا کہ اس کی پہلی قسط ہے روہنی کی ماں کی آنکھوں میں آنسو آگئے۔ روہنی کی ماں نے دعا دیتے ہوئے کہا کہ آپ نے جو احسان کیا ہے بھگوان آپ کو اس کا اجر ضرور دے گا۔

- سوال.. سیٹھ جی روہنی کو لیکر کہاں گئے؟
سوال.. سیٹھ جی نے روہنی کو کیا خریداری کرائی؟
سوال.. روہنی کی ماں سیٹھ جی کو کیسے پہچان گئی؟
سوال.. سیٹھ جی نے روہنی کے لئے کیا انتظام کیا؟
- ترتیب 56 کے جواب
- (1) منشی پریم چند (2) جسکا باپ مر جاتا ہے۔
(3) معائنہ کرنے (4) روہنی (5) دوسروں کے کیڑے
سیتی تھی۔
- سوال.. سیٹھ جی نے روہنی کو لے کر کہاں لے گیا؟
سوال.. سیٹھ جی نے روہنی کو کیا خریداری کرائی؟
سوال.. روہنی کی ماں سیٹھ جی کو کیسے پہچان گئی؟
سوال.. سیٹھ جی نے روہنی کے لئے کیا انتظام کیا؟



पाठ

سبق

بچوں کل تک آپ نے دیکھا کہ ایک مخلص سے لڑکی کی محبت نے روہنی کے دل میں محبت پیدا کر دی۔ اور وہ ان سے بہت مانوس ہو گئی۔ دوسرے دن جب روہنی اسکول گئی تو اپنی سہیلیوں سے بڑے فخر سے ملی اور انہیں اپنی تمام چیزوں کو دکھانے لگی وہ خوشی سے پھولے نہیں سما رہی تھی بس اپنی سیر کی داستانیں سنانے میں لگی تھی کبھی موٹر کے تیز چلنے کبھی بازار کی رونق اور دکانوں کا تذکرہ کرتی نہ تھکتی تھی۔ ادھر سینھ جی کے بڑے بیٹے امریکہ اور جرمنی سے انجینئر کی ڈگری لے کر واپس آ رہے تھے تو اسکول کی جانب سے بھی ان کے خیر مقدم کی تیاریاں شروع ہو گئیں روہنی نے بھی بڑے دلنشین کپڑے بنوائے اور وہ خوشی سے جھوم رہی تھی۔ سب لوگ اسٹیشن پر ان کے لڑکے کو خیر مقدم کرنے کے لیے پہنچے۔ سینھانی کوشلیا دیوی نے روہنی کو گلے لگا لیا اور بولی تم میری بیٹی ہی تو ہو سینھ جی کے لڑکے کو لے کر سب لوگ اس کو لائے، اور پروگرام شروع کیا۔ سینھ جی نے آخر میں تقریر کی اور بیٹھ گئے لڑکے کے گلے میں ہار کون ڈالے تو سب کی نگاہیں روہنی کی جانب اٹھ گئیں روہنی نے فخر اور گھبراہٹ سے پرشوتم داس کے گلے میں ہار ڈالا سب لوگ رخصت ہوئے مگر روہنی کو وداع کرنے کا دل نہیں کر رہا تھا روہنی جب ہوئی تو سب کی آنکھوں

میں آنسو آ گئے۔
بچوں کل تک آپ نے دیکھا کہ ایک مخلص سے لڑکی کی محبت نے روہنی کے دل میں محبت پیدا کر دی اور وہ ان سے بہت مانوس ہو گئی۔ دوسرے دن جب روہنی اسکول گئی تو اپنی سہیلیوں سے بڑے فخر سے ملی اور انہیں اپنی تمام چیزوں کو دکھانے لگی وہ خوشی سے پھولے نہیں سما رہی تھی بس اپنی سیر کی کہانی ہی سنانے میں لگی تھی کبھی موٹر تیز چلی کبھی بازار کی رونق اور دکانوں کا بیان کرتی نا تھک رہی تھی۔ ادھر سےٹ جی کے بڑے بیٹے امریکہ اور جرمنی سے انجینئر کی ڈگری لے کر واپس آ رہے تھے تو اسکول کی طرف سے بھی ان کے स्वागत کی تیاریاں شروع ہو گئی روہنی نے بھی بڑے دلکش کپڑے بنوائے اور وہ خوشی سے جھوم رہی تھی سب لوگ سٹیشن پر ان کے لڑکے کو خیر مقدم (स्वागत) کرنے کے لیے پہنچے سینھانی کوشلیا دیوی نے روہنی کو گلے لگا لیا اور بولی تم میری بیٹی ہی تو ہو۔

سےٹ جی کے لڑکے کو لے کر سب لوگ اسکول آئے اور پروگرام شروع کیا۔ آخر میں تقریر کی اور بیٹھ گئے لڑکے کے گلے میں ہار ڈالا سب لوگ رخصت ہوئے مگر روہنی کو وداع کرنے کا دل نہیں کر رہا تھا روہنی جب رخصت ہوئی تو سب کی آنکھوں میں آنسو آ گیا۔

प्रश्न,, सेठ जी के बेटे ने कहाँ शिक्षा पाई?

प्रश्न,, सेठ जी के बेटे के गले में किसने हार डाला? प्रश्न,, रोहिणी अपने दोस्तों से क्या बातें कर रही थी?

प्रश्न,, सेठानी का क्या नाम था?

क्रमांक 57 के उत्तर

- (1) बाज़ार (2) खिलौने कपड़े और खाने की चीजें
- (3) रोहिणी का पिता सेठ जी का ज़िक्र करता था वज़ीफ़ा बांध दिया।

سوال.. سینھ جی کے بیٹے نے کہاں تعلیم حاصل کی؟

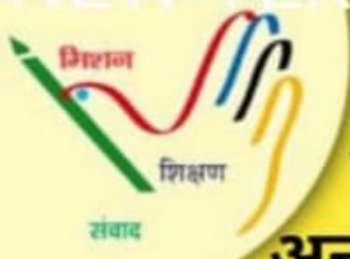
سوال.. سینھ جی کے بیٹے کے گلے میں کس نے ہار ڈالا؟

سوال.. روہنی اپنے دوستوں سے کیا باتیں کر رہی تھی؟

ترتیب 57 کے جواب

- (1) بازار (2) کھلونے کپڑے اور کھانے کی اشیاء۔
- (3) روہنی کا باپ سینھ جی کا ذکر اکثر کرتا تھا
- (4) وظیفہ مقرر کیا۔

سوال.. سینھانی کا کیا نام تھا؟



पाठ

بجو کل تک ہم نے آپ کو بتایا کہ کس طرح روہنی نے سینہ جی اور ان کی بیوی کے دل میں اپنے لیے ایک عظیم مقام پیدا کر لیا تھا۔ جب روہنی ہمیلی سے واپس آئی تو اس کی شادی کے چرچے بولے لگے کئی رشتے آئے مگر اس کی والدہ کو پسند نہیں آئے ایک دن اچانک جب روہنی گھر واپس آئی تو اس نے ایک خط بستر پر پڑا دیکھا جسے پڑھ کر اس کی خوشی کا ٹھکانہ نہیں رہا روہنی کی ماں بھی خوش تھی اور آخر وہ مبارک دن بھی آگیا جب سینہ جی ہارات لیکر روہنی کے گھر آگئے۔ رسموں کو ادا کرنے کے بعد روہنی نے پیر چھوئے اور سینہ جی نے اسے گلے لگاتے ہوئے کہا کہ دیکھو اب بن گئی نہ تم میری بیٹی۔

تو بچو اس طویل کہانی سے ہمیں یہ سبق ملتا ہے کہ ہم یتیموں غریبوں اور مسکینوں کے ساتھ کیسا سلوک کریں جس طرح سینہ جی نے اپنے اخلاق کا مظاہرہ کیا اور ایک یتیم بچی کو اپنے خلوص اپنی محبت سے ایک سرپرست عطا کر دیا اور وہ محبت عطا کی جس کا تصور بھی مشکل ہے۔ اسی طرح ہمیں بھی شفقت و محبت سے غریب کا خیال رکھنا چاہیے۔ تا کہ ہمارے معاشرے میں کوئی اپنے آپ کو غریب یا یتیم محسوس نہ کر سکے۔ آئیے ہم سب عہد کریں کہ ہم اس سجاج سے غریبی کو اپنی محبت سے ہمیشہ کے لیے مٹا دیں گے۔

بच्चों हमने कल तक आपको बताया कि किस तरह रोहिणी ने सेठ जी और उनकी बीवी के दिल में अपने लिए एक अज़ीम जगह बना ली थी। जब रोहनी मुंबई से वापस आई तो उसकी शादी के चर्चे होने लगे। कई रिश्ते आए मगर उसकी वाल्दा को पसंद नहीं आए एक दिन अचानक जब रोहनी घर वापस आई तो उसने एक खत बिस्तर पर पड़ा देखा जिसे पढ़कर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। रोहिणी की मां भी खुश थी और आखिर वह मुबारक दिन भी आ गया जब सेठ जी बारात लेकर उनके घर आ गए। शादी की रस्मों को अदा करने के बाद रोहिणी ने उनके पैर छुए और सेठ जी ने उसे गले लगाते हुए कहा कि देखो अब बन गई तुम मेरी बेटी।

तो बच्चों इस लंबी कहानी से हमें यह सबक मिलता है कि हम यतीमों गरीबों और मिस्कीनों के साथ कैसा व्यवहार करें जिस तरह सेठ जी ने अपने व्यवहार का प्रदर्शन किया और एक यतीम बच्ची को अपने खुलूस अपनी मोहब्बत से एक अभिभावक अता कर दिया और वह मोहब्बत अता कि जिस का ख्याल भी आज के जमाने में मुश्किल है। इसी तरह हमें भी शफ़क़त व मोहब्बत से गरीबों का ख्याल रखना चाहिए ताकि हमारे समाज में कोई अपने आप को गरीब या यतीम महसूस ना कर सके आइए हम सब वायदा करें कि हम इस समाज से गरीबी को अपनी मोहब्बत से हमेशा के लिए मिटा देंगे।

अभ्यास कार्य

- शब्द=अर्थ
- मतानत=ख्यालात की दुरुस्तगी
- गुलकारी=बेल बूटे का काम
- फ़य्याज़ी=दरिया दिली
- क्लिस्त=किसी चीज़ का हिस्सा
- फ़िक्रे मुआश=रोजगार की फ़िक्र
- एज़ाज़=इज़ज़त
- नवीद=खुशखबरी
- शगुफ़्तगी=फूल जैसा खिलना



रोहिणी का विवाह समारोह

مشق

- الفاظ=معنی
- متانت=خیالات کی درستگی
- گلکاری=بیل بوئے کا کام
- فیاضی=دریا دلی
- قسط=کسی چیز کا حصہ
- فکر معاش=روزگار کی فکر
- اعزاز=عزت
- نوید=خوشخبری
- شگفتگی=پھول جیسا کھلنا

प्रश्न,, आपकी नजर में रुक्मणी को इज्जत और शोहरत कैसे हासिल हुई? **سوال.. آپ کی نظر میں رکنی کو عزت اور شہرت کیسے حاصل ہوئی؟**

प्रश्न,, आप पढ़ लिख कर क्या करना चाहते हैं? **سوال.. آپ پڑھ لکھ کر کیا کرنا چاہتے ہیں؟**

क्रमांक 58 के उत्तर
(1) अमेरिका और जर्मनी (2) रोहिणी ने
(3)सेर और सेठ जी की बातें (4) कौशल्या देवी



मिशन शिक्षण संवाद



विषय- उर्दू

कक्षा- 7th

पाठ- रात और रेल पाठ्य क्रमांक -

60

प्रकरण-

नज़म

बचो आج ہم ریل کو خوبصورت نظم کی شکل میں پڑھیں گے۔ آپ سب ہاتھ اٹھا کر بتائیں کہ ریل کس کس نے دیکھی ہے، اچھا سب نے دیکھی ہے، تب تو آپ سب نے سفر بھی کیا ہوگا، کیا ہے نا؟
بच्चों आज हम रेल को खूबसूरत नज़म की شکل में पढ़ेंगे। आप सब हाथ उठाकर बताएं कि रेल किस-किस ने देखी है अच्छा सबने देखी है, तब तो आप सब ने सफर भी किया होगा, किया है



اسرار الحق مجاز اردو کے مشہور شاعر تھے انہوں نے زیادہ تر نظمیں لکھی ہیں جو اردو شاعری کی شاہکار ہیں اور ریل ان کی ایک بہت اچھی نظم ہے جس کے چند اشعار آپ کے سبق میں دیے جا رہے ہیں۔

इसरार उल हक मिजाज उर्दू کے مشہور شاعر تھے انہوں نے زیادہ تر نظمیں لکھی ہیں جو اردو شاعری کی شاہکار ہیں اور ریل ان کی ایک بہت اچھی نظم ہے جس کے چند اشعار آپ کے سبق میں دیے جا رہے ہیں۔

نظم

क्रमांक 59 के उत्तर

(1) उसके व्यवहार और

शिक्षा की वजह से

(2) हम अच्छे इंसान

बनकर गरीबों की मदद

करना चाहते हैं।

ترتیب 59 کے جواب

(1) اسکے اخلاق اور تعلیم کی

وجہ سے

(2) ہم پڑھ لکھ کر ایک اچھے

انسان بننے کی کوشش کریں گے

اور غریبوں کی مدد کریں گے۔

پھر چلی ہے ریل اسٹیشن سے لہراتی ہوئی
نیند شب کی خاموشی میں زیر لب گاتی ہوئی
ڈگمگاتی، جھومتی، سینی بجاتی، کھیلتی
وادی کو بسا رہا کی ٹھنڈی ہوا کھاتی ہوئی
جیسے موجوں کا ترنم جیسے جل پریوں کے
گیت

ایک اک لے میں ہزاروں زمزمے گاتی ہوئی وی

مشق

الفاظ = معنی

نیم شب = آدھی رات

زیر لب = آہستہ

کو بسا رہا = پہاڑی علاقہ

ترنم = گانا

زمزمے = نغمے

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

नीम शब = आधी रात

ज़ेर ए लब = आहिस्ता

कोहसार = पहाड़ी इलाका

तरनुम = गाना

ज़मज़मे = नगमे

प्रश्न,, इस नज़म के शायर कौन हैं?

प्रश्न,, शायर रेल की रफ़्तार को कैसे बयान कर रहा है?

سوال.. اس نظم کے شاعر کون ہیں؟

سوال.. شاعر ریل کی رفتار کو کیسے بیان کر رہا ہے؟



नज़्म (कविता)

نظم

रात की तारीकियों में झिलमिलाती
कांपती
मुंतशिर करके फिज़ा में जा ब जा
चिंगारियां
एक सितारा टूटकर जैसे रवां हो
अर्श पर
एक बगोले की तरह बढ़ती हुई
मैदान में

पटरियों पर दूर तक सीमाब
झलकाती हुई
दामन ए मौज ए हवा में फूल
बरसाती हुई
रफ़अत ए कोहसार से मैदान में
आती हुई
जंगलों में आंधियों का जोर
दिखलाती हुई

पट्टियों پر دور تک سیماب
جھلکاتی ہوئی
دامن موج ہوا میں پھول برساتی
ہوئی
رفتہ کوہسار سے میدان میں آتی
ہوئی
جنگلوں میں آندھیوں کا زور
دکھلاتی ہوئی

رات کی تاریکیوں میں
جھلملاتی کانپتی
منتشر کر کے فضا میں جا بہ جا
چنگاریاں
اک ستارہ ٹوٹ کر جیسے رواں
ہو عرش پر
ایک بگولے کی طرح بڑھتی
ہوئی میدان میں

سाराংশ

شاعر کہتا ہے کہ رات کے اंधیروں میں چمک رہی ہے، پٹریوں پر دूर तक चांदी की तरह झलक रही है।
ट्रेन पहले कोयले की आग से चला करती थी। शायर इसी दौर की रेल का जिक्र कर रहा है जिसमें से चिंगारियां निकलती
थیں। ऐसा महसूस हो रहा है जैसे हवा में फूल बरसा रही है ऐसा लगता है जैसे एक सितारा जमीन पर टूट कर बिखर गया
है। पहाड़ों की बुलंदियों से मैदान में आ रही है। मैदान में बगोले की तरह चल रही है। जंगलों से आंधियों की तरह गुजर रही

شاعر کہتا ہے کہ رات کے اندھیروں میں چمک رہی ہے۔ پٹریوں پر دور تک چاندی کی طرح جھلک رہی ہے۔ بچو ریل پہلے
کوئلے کی آگ سے چلا کرتی تھی۔ شاعر اسی دور کی ریل کا ذکر کر رہا ہے جس میں سے چنگاریاں نکلتی تھیں۔ ایسا محسوس ہو رہا ہے
جیسے ہوا میں پھول برسا رہی ہے، ایسا لگتا ہے جیسے ایک ستارہ ٹوٹ کر زمین پر بکھر گیا ہے۔ پہاڑوں کی بلندیوں سے میدان میں آ رہی
ہے۔ میدان میں بگولے کی طرح چل رہی ہے۔ جنگلوں سے آندھیوں کی طرح گزر رہی ہے۔

تشریح

अभ्यास कार्य

- शब्द = अर्थ
- तारीकी = अंधेरा
- सीमाब = पारह
- मुंतशिर = बिखरना
- मौज ए हवा = हवा का झोंका
- रफ़अत = बुलन्दी
- अर्श = आसमान
- बगोला = गर्द बाद



مشق

- الفاظ = معنی
- تاریکی = اندھیرا
- سیماب = پارہ
- منتشر = بکھرنا
- موج ہوا = ہوا کا جھونکا
- عرش = آسمان
- رفتہ = بلندی
- بگولا = گرد باد

प्रश्न,, रात की तारीकियों में रेल कैसी लग
रही है?

प्रश्न,, फ़ज़ा में रेल क्या बिखेरती नजर
आ रही है?

प्रश्न,, रेल मैदान में आती हुई कैसी लग
रही है?

ترتیب 60 کے جواب
(1) اسرارالحق مجاز (2) جیسے رات کی تاریکیوں
میں کوئی ستارہ ٹوٹ کر بکھر گیا ہے۔
سوال.. رات کی تاریکی میں ریل کیسی لگ رہی ہے؟
سوال.. فضا میں ریل کیا بکھیرتی جا رہی ہے؟
سوال.. ریل میدان میں آتی ہوئی کیا ازا رہی ہے؟



नज़्म (कविता)

نظم

एक पहाड़ी पर दिखाती आबशारों की झलक
जुस्तजू में मंजिल मकसूद की दीवाना वार
रेंगती, मुड़ती, मचलती, तिलमिलाती
हांफती
पुल पर दरिया के दमादम कौंधती
ललकारती
पेश करती बीच नदी में चिरागों का समां

एक बयाबां में चराग तूर
दिखलाती हुई
अपना सर धुंती फ़ज़ा में बाल
बिखराती हुई
अपने दिल की आतिश पिनहां
को भड़का ती हुई
अपनी इस तूफ़ान अंगेजी पर
इतराती हुई
साहिलों पर रेत के ज़रों को
चमकाती हुई

ایک بیابان میں چراغ کے طور
دکھلاتی ہوئی
اپنا سر دھنتی فضا میں بال
بکھراتی ہوئی
اپنے دل کی آتش پنہاں کو
بھڑکاتی ہوئی
اپنی اس طوفان انگیزی پہ اتراتی
ہوئی
ساحلوں پر ریت کے ذروں کو
چمکاتی ہوئی

ایک پہاڑی پر دکھاتی آبشاروں
کی جھلک
جستجو میں منزل مقصود کی
دیوانہ وار
رینگتی، مڑتی، مچلتی،
تلملتی، بانپتی
پل پہ دریا کے دما دم کوندتی
للكارتی
پیش کرتی بیچ ندی میں
چراغوں کا سماں

سारांश

शायर इन पंक्तियों में कहता है कि पहाड़ी पर पानी की चादर की तरह झलक दिखा रही है और बयाबां में कोहे तूर का जैसा चिराग रोशन कर रही है। अपनी मंजिल की तलाश में ऐसे चल रही है जैसे कोई दीवाना वार बाल बिखरा कर दौड़ा चला जा रहा हो। पुल पर जब चलती है तो एक तूफान की तरह धन-धन आती है नदी में ऐसा लगता है जैसे हजारों चराग रोशन हो गए हो जब साहिलों पर चलती है तो इसकी रेत के ज़रें चमकने लगते हैं।

شاعران اشعار میں کہتا ہے کہ پہاڑی پر پانی کی چادر کی طرح جھلک دکھا رہی ہے اور بیابان میں کوہ طور کا جیسے چراغ روشن کر رہی ہو۔ اپنی منزل کی تلاش میں ایسے چل رہی ہے جیسے کوئی دیوانہ وار بال بکھرا کر دوڑا چلا جا رہا ہو۔ پل پہ جب چڑھتی ہے تو ایک طوفان کی طرح دندناتی ہے ندی میں ایسا لگتا ہے جیسے ہزاروں چراغ روشن ہو گئے ہوں۔ جب ساحلوں پر چلتی ہے تو اس کی ریت کے ذرے چمکتے لگتے ہیں۔

تشریح

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ
आबशार = पानी की चादर
चराग ए तूर = वह नूर जो तूर पर दिखा
आतिश = आग
पिनहां = छुपा हुआ

प्रश्न,, रेल पुल पर कैसी चलती है?

प्रश्न,, रेल जब नदी से गुज़रती है तो कैसा समां होता है?

ترتیب 6 کے جواب

(1) رات کے اندھیروں میں
جگنوؤں کی طرح چمکتی
ہوئی۔ (2) فضا میں ریل
چنگاریاں بکھیر رہی ہے
(3) جیسے آسمان سے ایک
ستارہ ٹوٹ کر زمین پر آ
رہا ہو۔

مشق

الفاظ = معنی
آبشار = پانی کی چادر
چراغ طور = وہ نور جو
طور پر دکھا
آتش = آگ
پنہاں = چھپا ہوا

سوال -- ریل پل پر کیسے چلتی ہے؟

سوال -- ریل جب ندی سے گزرتی ہے تو کیسا سماں ہوتا ہے؟



मसनोई चांद 64 प्रकरण- मज़मून

سبق

بجو آپ اپنے والد سے معلوم کریں کہ بھارت سرکار نے ۱۹ اپریل ۱۹75ء کو ایک ڈاک ٹکٹ جاری کیا تھا جس پر ایک مصنوعی چاند کی تصویر شائع کی تھی کیونکہ بھارت ۱۹ اپریل ۱۹75ء کو ہی اپنا پہلا مصنوعی چاند خلا میں بھیجا تھا۔ اس کا نام ایک مشہور ریاضی دان آرہ بھٹ کے نام سے منسوب کیا گیا۔ اس سے قبل جرمنی، چین، جاپان دیگر ملکوں نے مصنوعی چاند آسمان پر بھیج چکے تھے۔ مصنوعی چاند دھات کا بنا ایک ڈبہ ہوتا ہے جس میں مختلف قسم کے سائنسی آلات ہوتے ہیں۔ یہ تو تم جانتے ہی ہو کہ زمین میں قوت کشش ہوتی ہے جو ہر چیز کو اپنی جانب کھینچ لیتی ہے اگر یہ کشش نہ ہوتی تو کوئی بھی زندہ نہیں رہ پاتا۔ جو طاقت کسی چیز کو گردش کے مرکز سے باہر کی طرف لے جانا چاہتی ہے اسے مرکز گریز قوت کہتے ہیں۔ اسی پیمانے پر ان کو خلا میں بھیجا جاتا ہے مصنوعی چاند کو خلا میں بھیجنے کے لیے راکٹ کا استعمال کیا جاتا ہے یہ راکٹ تین منزلہ ہوتا ہے اس میں اتنا ایندھن ہوتا ہے کہ وہ مصنوعی چاند خلا تک چھوڑ دیتا ہے۔ پہلی منزل کا ایندھن جب جل جاتا ہے تو وہ نیچے گر کر ختم ہو جاتا ہے پھر دوسری منزل کا ایندھن اسے اگے اوپر کی جانب دھکیلتا ہوا آگے بڑھتا ہے پھر وہ بھی جل کر ختم ہو جاتا ہے اسی طرح تیسری منزل کا ایندھن اسے اوزون کی پرت سے اوپر پہنچا دیتا ہے جہاں مصنوعی چاند اپنی منزل کی طرف جاتا ہے۔

بچے آپ اپنے پیتا سے مألوم کرے کہ 19 اپریل 1975 کو ایک ڈاک ٹکٹ جاری کیا گیا تھا جس پر ایک ماسنوی چاند (نکلی) چاند کی تصویر لپی پی کیونکہ بھارت نے 19 اپریل 1975 کو ہی اپنا پہلا ماسنوی چاند خلیا میں بھیجا تھا اسکا نام ایک مشاہر گنیتنا آریہ بھٹ کے نام سے منسوب کیا گیا۔ اس سے پہلے جرمنی، چین، جاپان اور دیشوں نے ماسنوی چاند آاسمان پر بھیج چکے تھے۔ ماسنوی چاند خات کا بنا ایک ڈبھا ہوتا ہے جس میں مختلف قسم کے سائنسی آلات ہوتے ہیں۔ یہ تو تم جانتے ہی ہو کہ زمین میں قوت کشش ہوتی ہے جو ہر چیز کو اپنی طرف کھیچ لیتی ہے اگر یہ قوت کشش نہ ہوتی تو کوئی بھی زندہ نہیں رہ پاتا۔ جو طاقت کسی چیز کو گردش کے مرکز سے باہر کی طرف لے جانا چاہتی ہے اسے مرکز گریز قوت کہتے ہیں۔ اسی پیمانے پر ان کو خلا میں بھیجا جاتا ہے ماسنوی چاند کو خلیا میں بھیجنے کے لیے راکٹ کا استعمال کیا جاتا ہے یہ راکٹ تین منزلہ ہوتا ہے اس میں اتنا ایندھن ہوتا ہے کہ وہ مصنوعی چاند خلا تک چھوڑ دیتا ہے۔ پہلی منزل کا ایندھن جب جل جاتا ہے تو وہ نیچے گر کر ختم ہو جاتا ہے پھر دوسری منزل کا ایندھن اسے اگے اوپر کی جانب دھکیلتا ہوا آگے بڑھتا ہے پھر وہ بھی جل کر ختم ہو جاتا ہے اسی طرح تیسری منزل کا ایندھن اسے اوزون کی پرت سے اوپر پہنچا دیتا ہے جہاں ماسنوی چاند اپنی منزل کی طرف جاتا ہے۔

पाठ

अभ्यास कार्य

- शब्द = अर्थ
- मसनोई = मशीन का खुद तैयार किया हुआ।
- रियाज़ी दां = गणितज्ञ
- खला = ज़मीन से बाहर, आसमान
- क्रमांक 63 के उत्तर
- (1) दनदनाती, चीखती, चिंघाड़ती।
- (2) अंधेरे का नकाब



مشق

- الفاظ = معنی
- مصنوعی = مشین کا خود تیار کیا ہوا
- ریاضی دان = ریاضی کا ماہر
- خلا = زمین سے باہر
- ترتیب 63 کے جواب
- (1) دندناٹی، چیختی، چڑا
- گھاڑتی۔
- (2) اندھیرے کا نقاب

سوال،، بھارت میں سب سے پہلے ماسنوی چاند خلیا میں کب بھیجا؟
 سوال،، ماسنوی چاند کا نام کس کے نام پر رکھا؟
 سوال،، ماسنوی چاند کو کس کے ذریعے خلیا میں بھیجا گیا؟
 سوال،، ماسنوی چاند میں کیا ہوتا ہے؟
 سوال،، ماسنوی چاند کو خلیا میں بھیجنے کے لیے کس کی ضرورت ہوتی ہے؟
 سوال،، جو طاقت کسی چیز کو گردش کے مرکز سے باہر کی طرف لے جاتی ہے اسے کیا کہتے ہیں؟

سوال.. بھارت نے سب سے پہلے مصنوعی چاند خلا میں کب بھیجا؟
 سوال.. مصنوعی چاند کا نام کس کے نام پر رکھا گیا؟
 سوال.. مصنوعی چاند کو کس کے ذریعے چھوڑا جاتا ہے؟
 سوال.. مصنوعی چاند میں کیا ہوتا ہے؟
 سوال.. مصنوعی چاند کو خلا میں بھیجنے کے لیے کس کی ضرورت ہوتی ہے؟
 سوال.. جو طاقت کسی چیز کو گردش کے مرکز سے باہر کی طرف لے جاتی ہے اسے کیا کہتے ہیں؟



मसनोई चांद 65 प्रकरण- मज़मून

بجو دنیا کا پہلا مصنوعی چاند روس نے ۱۹ اکٹوبر ۱۹۵۷ء کو چھوڑا تھا۔ روس نے اسکا نام اسپوٹنک رکھا تھا جسکے معنی ہیں ہم سفر۔ امریکہ نے اپنا پہلا مصنوعی چاند یکم فروری ۱۹۵۸ء کو چھوڑا اسکا نام تھا ایکسیلورر جسکے معنی ہیں تلاش کرنے والا۔ ہمارے مصنوعی چاند کا وزن چونکہ ۳۶۰ کلو تھا اور اتنے وزن کو لے جانے کے لئے ہمارے ملک کے پاس کوئی انتظام نہ تھا اس وجہ سے اسے روس لے جا کر چھوڑا گیا۔

اب ہم آپ کو بتاتے ہیں کہ یہ چاند کیوں چھوڑے جاتے ہیں اور ان سے کیا فائدہ ہیں۔ مصنوعی چاند زمین سے صرف اتنی دور ہوتا ہے کہ وہاں سے پورے پورے بحر اعظم اور بحر اعظم نظر آتے ہیں۔ اسکے کیمرے سے زمین کی مختلف حصوں کی تصاویر لی جاتی ہیں ان تصاویر کی مدد سے دنیا کا صحیح صحیح نقشہ بنایا جاتا ہے۔ مصنوعی چاند کی مدد سے آنے والے موسم کا حال بھی معلوم کیا جاتا ہے کہاں بارش ہوگی کہاں سوکھا رہیگا یہ تمام معلومات اس میں موجود کیمرے سے دریافت ہوتی رہتی ہیں۔ یہ مصنوعی چاند اپنے ساتھ مختلف قسم کے سائنسی آلات لے جاتے ہیں جن سے لیلی ویژن، ریڈیو اور اب تو موبائل کا سارا نیت ورک انہیں مصنوعی چاندوں سے چلتا ہے۔ تو بچو آپ نے دیکھا کہ یہ مصنوعی چاند کتنے کارگر ہوتے ہیں۔

سبق

پاٹھ

بच्चों दुनिया का पहला मसनोई चांद रूस ने 14 अक्टूबर 1957 को छोड़ा था। रूस ने इसका नाम इसपोतंक रखा था जिसका अर्थ होता है हमसफर।अमेरिका ने अपना पहला मसनोई चांद 1 फरवरी 1958 को छोड़ा इसका नाम था एक्सप्लोरर जिसका अर्थ है तलाश करने वाला। हमारा मसनोई चांद का वजन क्योंकि 360 किलो था और इतने वजन को ले जाने के लिए हमारे पास कोई जरिया नहीं था इसलिए इसे रूस ले जा कर छोड़ा गया। अब हम आपको बताते हैं कि यह चांद क्यों छोड़े जाते हैं और उनसे क्या फायदे हैं मसनोई चांद जमीन से सिर्फ इतनी दूर होता है कि वहां से पूरे पूरे महाद्वीप और समुंदर नजर आते हैं इसके कैमरे से जमीन की भिन्न-भिन्न हिस्सों की तस्वीरें ली जाती हैं इन तस्वीरों की मदद से दुनिया का सही-सही नक्शा बनाया जाता है। मसनोई चांद की मदद से आने वाले मौसम का हाल भी मालूम किया जाता है कहां बारिश होगी कहां सूखा रहेगा। यह तमाम ज्ञान इसमें मौजूद कैमरे से हासिल होती रहती हैं यह मसनोई चांद भिन्न भिन्न प्रकार के वैज्ञानिक सामान अपने अंदर ले जाते हैं जिनसे टेलीविजन, रेडियो, और अब तो मोबाइल का सारा नेटवर्क इन्हीं मसनोई चांदों से चलता है। तो बच्चों आपने देखा के मसनोई चांद कितने कारगर होते हैं।

مشق

अभ्यास कार्य
शब्द = अर्थ
बरें आजम = महाद्वीप
बहर ए आजम = सबसे बड़ा समुंदर
क्रमांक 64 के उत्तर

الفاظ = معنی
بر اعظم = مہا دیپ
بحر اعظم = سب سے بڑا سمندر
ترتیب 64 کے جواب
(1) ۱۹ اپریل
(2) ۱۹۵۷ء آریہ بھٹ
(3) راکٹ کے ذریعے (4)
مختلف قسم کے سائنسی
آلات (5) ایندھن کی (6)

(1) 19 اپریل 1957 (2) آریہ بھٹ
(3) راکٹ کے ذریعے (4) भिन्न भिन्न प्रकार के औजार (5) ईंधन की (6) मरकज़ गुरेज़ ताक़त।
प्रश्न,, रूस ने मसनोई चांद कब छोड़ा?
प्रश्न,, इसपोतंक का क्या अर्थ है?
प्रश्न,, ऐक्सपिलोरर का अर्थ बताएं।
प्रश्न,, भारत के मसनोई चांद का भार कितना था?
प्रश्न,, मसनोई चांद के किस आले के द्वारा तस्वीरें ज़मीन पर भेजी जाती हैं?
प्रश्न,, आने वाले मौसम का हाल किस के द्वारा मालूम किया जाता है?

سوال۔ روس نے پہلا مصنوعی چاند کب چھوڑا؟
سوال۔ اسپوٹنک کے کیا معنی ہیں؟
سوال۔ ایکسیلورر کے معنی بتائیں؟
سوال۔ بھارت کے مصنوعی چاند کا وزن کتنا تھا؟
سوال۔ مصنوعی چاند میں کس آلے کی مدد سے سے تصاویر زمین پر بھیجی جاتی ہیں؟
سوال۔ آنے والے موسم کا حال کس سے معلوم کیا جاتا ہے؟



पाठ-
मुर्गा ए असीर की
नसीहत

पाठ्य क्रमांक -

66

प्रकरण-

नज़्म

नज़्म

नظم

एक मुर्गा हुआ असीर ए
सय्याद
बोला जब उसने बंधे बाजू
बेचा तो टके का जानवर हूँ
पाला तो मफ़ारक़त है
अंजाम
बाजू में न तू मेरे गिरह बांध
सुन कोई हज़ार कुछ सुनाए

दाना था वह ताइर ए चमन
ज़ार
खुलता नहीं किस तमआ पे है
तू
गर ज़िबह किया तो मुश्त पे हूँ
दाना हो तो मुझसे ले मेरे दाम
समझाऊँ जो पिंदा से गिरह
बांध
कीजिए वही जो समझ में
आये

दाने तها وه طائر چمن زار
كھلتا نہیں كس تمع پہ ہے تو
گر ذبح كیا تو مشت ہے بوں
دانا ہو تو مجھ سے لے میرے
دام
سمجھاؤں جو پندہ سے گرہ
بانده
کیجئے وہی جو سمجھ میں آئے

اک مرغ ہوا اسیر صیاد
بولا جب اس نے بندھے بازو
بیچا تو تکیے کا جانور ہوں
پالا تو مفارقت ہے انجام
بازو میں نہ تو میرے گرہ
بانده
سن کوئی ہزار کچھ سنائے

کھابو ہو تو کیجیے ن ماف़لت
آجیجّ ہو تو ہارिए ن हिम्मत

قabo ہو تو کیجئے نہ غفلت
عاجز ہو تو ہارئے نہ ہمت

تشریح

بچوں مندرجہ بالا نظم کے یہ اشعار جناب پنڈت دیا شنکر نسیم کی نظم کے کہے ہوئے ہیں یہ اشعار ان کی مشہور مثنوی گلزار نسیم سے لے گئے ہیں۔ اٹھارہ سو گیارہ میں وہ لکھنؤ میں پیدا ہوئے اور صرف 32 سال کی عمر میں 1885ء میں انتقال کر گئے۔

ان اشعار میں وہ ایک دانہ مرغ کی کہانی کو بیان کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ ایک مرغ صیاد کی قید میں تھا جو عقلمند چمن کا باسی تھا وہ صیاد سے کہتا ہے اپنے بازوؤں کو بندھے ہوئے ہے کہ اگر تم نے مجھے بیچ دیا تو چند سکہ ہی ہاتھ آئیں گے اور اگر ذبح کر دیا تو ایک مٹھی گوشت ہی ملے گا۔ اگر تم عقل مند ہو تو مجھے میرا کام لے سکتے ہو کوئی تمہیں کچھ بھی سمجھائے مگر وہی کیجئے جو تمہاری سمجھ میں آئے اگر کسی کام سے عاجز ہو تو ہمت کبھی مت ہارو

ساراংশ

بچوں کے لیے اس کھانی کو بیان کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ ایک مرغ صیاد کی قید میں تھا جو عقلمند چمن کا باسی تھا وہ صیاد سے کہتا ہے اپنے بازوؤں کو بندھے ہوئے ہے کہ اگر تم نے مجھے بیچ دیا تو چند سکہ ہی ہاتھ آئیں گے اور اگر ذبح کر دیا تو ایک مٹھی گوشت ہی ملے گا۔ اگر تم عقل مند ہو تو مجھے میرا کام لے سکتے ہو کوئی تمہیں کچھ بھی سمجھائے مگر وہی کیجئے جو تمہاری سمجھ میں آئے اگر کسی کام سے عاجز ہو تو ہمت کبھی مت ہارو

بچوں کے لیے اس کھانی کو بیان کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ ایک مرغ صیاد کی قید میں تھا جو عقلمند چمن کا باسی تھا وہ صیاد سے کہتا ہے اپنے بازوؤں کو بندھے ہوئے ہے کہ اگر تم نے مجھے بیچ دیا تو چند سکہ ہی ہاتھ آئیں گے اور اگر ذبح کر دیا تو ایک مٹھی گوشت ہی ملے گا۔ اگر تم عقل مند ہو تو مجھے میرا کام لے سکتے ہو کوئی تمہیں کچھ بھی سمجھائے مگر وہی کیجئے جو تمہاری سمجھ میں آئے اگر کسی کام سے عاجز ہو تو ہمت کبھی مت ہارو

अभ्यास कार्य

क्रमांक 65 के

مشق

शब्द = अर्थ

उत्तर

الفاظ = معنی

सय्याद = शिकारी

(1) हमसफ़र (2)

صیاد = شکاری

दाना = बुद्धिमान

(3) 360 किलो (4)

दानا = عقل مند

ताइर ए चमन = बाग़ का परिन्दा

(5) 360 किलो (6)

طائر چمن = باغ़ کا پرندہ

तमआ = लालच

कैमरे से

طمع = لالچ

मुश्त = मुट्ठी

मौजूद कैमरे से

مشت = مٹھی

मफ़ारक़त = जुदाई

आजिज़ = परेशान

مفارقت = جدائی

عاجز = پریشان



ترتیب 65 کے جواب
(1) ہم سفر (2) تلاش کرنے والا
(3) 360 کلو۔
(4) کیمرے سے (5) اس میں موجود
کیمرے سے (6) 360/360/360 کو



पाठ-
मुर्गा ए असीर की
नसीहत

पाठ्य क्रमांक -

67

प्रकरण-

नज़्म

नज़्म

نظم

आता हो तो हाथ से ना दीजिए
तायर से यह सुन कलाम
सय्याद
बाजू के जो बंद खोल डाले
दौलत न नसीब में थी तेरे
देकर सय्याद ने दिलासा
बोला वह के देख कर गया
जआल

जाता है तो उसका गम ना
कीजिए
बिन दामों हुआ अगलाम
सय्याद
ताइर ने तड़प के पर निकाले
था लआल निहां शिकम में मेरे
चाहा फिर कुछ लगाए लासा
ताइर भी कहीं निकलते हैं
लआल

جاتا ہے تو اس کا غم نہ
کیجئے
بن داموں ہوا اغلام صیاد
طائر نے تڑپ کے پر نکالے
تھا لعل نہاں شکم میں
میرے
چاہا پھر کچھ لگانے لاسا
طائر بھی کہیں نکلتے ہیں
لعل

آتا ہو تو ہاتھ سے نہ
دیجئے
طائر سے یہ سن کلام صیاد
بازو کے جو بند کھول ڈالے
دولت نہ نصیب میں تھی
تیرے
دے کر صیاد نے دلاسا
بولا وہ کہ دیکھ کر گیا
جعل

अरबाब गरज़ की बात सुनकर
कर लीजिए एक ब एक न बाबर

اریاب غرض کی بات سن کر
کر لیجئے یک بہ یک نہ باور

बच्चों इन पंक्तियों में अब मुर्गा नसीहत कर रहा है। अगर कुछ हाथ आ रहा है तो उसे किसी भी हाल में ना जाने दें और अगर चला गया तो उसका गम भी ना करें मुर्गा की ऐसी बातें सुनकर शिकारी कमजोर हो गया और मुर्गा के बंद खोल दिए मुर्गा ने कहा कि तेरी किस्मत में दौलत नहीं थी मेरे पेट में कीमती पत्थर था अगर तू मुझे मार देता तो पत्थर तेरा हो जाता और तू बहुत अमीर हो जाता शिकारी को अफसोस हुआ और वह दोबारा उसे अपनी गिरफ्त में लेना चाहता था शिकारी को फिर खयाल आया कि मुर्गा ने मुझे बेवकूफ बनाया भला परिंदों के पेट में भी कहीं कीमती पत्थर होते हैं। इससे हमें यह नसीहत मिलती है कि गर्ज मंद लोगों की बातें सुनकर एकदम यकीन नहीं कर लेना चाहिए जिस तरह मुर्गा कैद से आजाद होने के लिए बातें बना रहा था इसी तरह लोग अपना मकसद पूरा करने के लिए फरेबी बातें करते रहते हैं हमें ऐसे लोगों से होशियार रहना चाहिए।

सारांश

تشریح

بچوں ان اشعار میں اب مرغ نصیحت کر رہا ہے اسے اگر کچھ ہاتھ آ رہا ہے تو اسے کسی بھی حال میں نہ جانے دیں اور اگر چلا گیا تو اس کا غم بھی نہ کرے مرغ کی ایسی باتیں سن کر صیاد کمزور ہو گیا اور مرغ کے بند کھول دیے۔ مرغ نے کہا کہ تیری قسمت میں دولت نہیں تھی میرے پیٹ میں قیمتی پتھر تھا اگر تو مجھے مار دیتا تو وہ پتھر تیرا ہو جاتا اور تو بہت امیر ہو جاتا۔ صیاد کو افسوس ہوا اور وہ دوبارہ اسے اپنی گرفت میں لینا چاہتا تھا صیاد کو پھر خیال آیا کہ مرغ نے مجھے بیوقوف بنایا بھلا پرندوں کے پیٹ میں بھی کہیں لعل ہوتے ہیں۔ اس سے ہمیں یہ نصیحت ملتی ہے کہ غرض مند لوگوں کی باتیں سن کر ایک دم یقین نہیں کر لینا چاہیے جس طرح مرغ قید سے آزاد ہونے کے لئے باتیں بنا رہا تھا اس طرح لوگ اپنا مقصد پورا کرنے کے لئے فریبی باتیں کرتے رہتے ہیں۔ ہمیں ایسے لوگوں سے ہوشیار رہنا چاہیے۔

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ
अगलाम = कमजोर
लआल = लाल कीमती पत्थर
निहां = छुपा हुआ
शिकम = पेट
लासा = पानी, शोरबा
जआल = गोबर का कीड़ा
अरबाब = लोग, साहब
बाबर = विश्वास



الفاظ = معنی
اغلام = کمزور
لعل = ایک سرخ قیمتی پتھر
نہاں = چھپا ہوا
شکم = پیٹ
لاسا = پانی، شوربہ
جعل = گوبر کا کیڑا
اریاب = صاحب، لوگ
باور = یقین

مشق



मिशन शिक्षण संवाद



कक्षा-

विषय-

पाठ-
बढ़ती आबादी
और हमारे शहर

पाठ्य क्रमांक -

68

प्रकरण-

मज़मून

पाठ का सारांश

سبق کا خلاصہ

بچوں ہمارے ملک میں 15 اگست 1947ء سے پہلے انگریزوں کی حکومت تھی۔ اب ہم آزاد ہیں۔ ہمارے ملک کی آبادی میں حیرت انگیز اضافہ ہو رہا ہے۔ 1901ء میں ہمارے ملک کی آبادی تقریباً 24 کروڑ تھی۔ ہر دسویں سال ہمارے ملک میں مردم شماری کی جاتی ہے 2011ء کی مردم شماری کے مطابق ہمارے ملک کی آبادی لگ بھگ 121.193,422 تھی۔ ہمارے ملک کی زیادہ تر آبادی گاؤں میں رہتی ہے۔ پھر بھی آبادی کا ایک حصہ شہروں میں بھی رہتا ہے۔ جن گاؤں میں روزگار کے ذرائع نہیں ہیں وہاں کے باشندے شہروں کی جانب روزگار کی تلاش میں آتے ہیں جس سے شہروں کی آبادی روز بروز بڑھتی جا رہی ہے۔ نئے مکان بن رہے ہیں مگر پھر بھی کرائے پر مکان ملنا دشوار ہوتا جا رہا ہے۔ ہمارے ملک کی حکومت اپنی عوام کے لئے بہت سی سہولیات مہیا کراتی رہتی ہے۔ تعلیم کے لیے اسکول کالجوں کا انتظام، بیماری کے لیے ہسپتال سواری کے لئے ریل اور بسوں کا انتظام کر آتی ہے پھر بھی آبادی کو مکمل قابو کرنا مشکل ہی نہیں ناممکن نظر آتا ہے۔ شہر والوں کو اکثر گندگی کا سامنا کرنا پڑتا ہے آبادی کے بڑھنے سے قدرتی سہولتوں میں بھی کمی آجاتی ہے۔ اس سے نجات کا صرف ایک ہی ذریعہ ہے اور وہ یہ ہے کہ ہم عقلمند شہری بنے اور تعلیم پر زیادہ زور دیں تاکہ ہم صحیح حکومت کا انتخاب کر سکیں جو عوام کی بہبود کے لیے کام کرے اور حکومت کی کوتاہیوں سے اسے ہم آگاہ کرتے رہیں تاکہ وہ عوام کی دشواریوں کا خیال کر کے سہولیات مہیا کر سکے۔

بچوں ہمارے ملک میں 15 اگست 1947 سے پہلے انگریزوں کی حکومت تھی۔ اب ہم آزاد ہیں۔ ہمارے ملک کی آبادی میں حیرت انگیز اضافہ ہو رہا ہے۔ 1901 میں ہمارے ملک کی آبادی تقریباً 24 کروڑ تھی۔ ہر دسویں سال ہمارے ملک میں مردم شماری کی جاتی ہے 2011 میں ہمارے ملک کی آبادی تقریباً 121.193,422 کروڑ تھی۔

ہمارے ملک کی زیادہ تر آبادی گاؤں میں رہتی ہے۔ پھر بھی آبادی کا ایک حصہ شہروں میں بھی رہتا ہے۔ جن گاؤں میں روزگار کے ذرائع نہیں ہیں وہاں کے باشندے شہروں کی تلاش میں آتے ہیں جس سے شہروں کی آبادی روز بروز بڑھتی جا رہی ہے۔ نئے مکان بن رہے ہیں مگر پھر بھی کرائے پر مکان ملنا دشوار ہوتا جا رہا ہے۔ ہمارے ملک کی حکومت اپنی عوام کے لئے بہت سی سہولیات مہیا کراتی رہتی ہے۔ تعلیم کے لیے اسکول کالجوں کا انتظام، بیماری کے لیے ہسپتال سواری کے لئے ریل اور بسوں کا انتظام کر آتی ہے پھر بھی آبادی کو مکمل قابو کرنا مشکل ہی نہیں ناممکن نظر آتا ہے۔ شہر والوں کو اکثر گندگی کا سامنا کرنا پڑتا ہے آبادی کے بڑھنے سے قدرتی سہولتوں میں بھی کمی آجاتی ہے۔ اس سے نجات کا صرف ایک ہی ذریعہ ہے اور وہ یہ ہے کہ ہم عقلمند شہری بنے اور تعلیم پر زیادہ زور دیں تاکہ ہم صحیح حکومت کا انتخاب کر سکیں جو عوام کی بہبود کے لیے کام کرے اور حکومت کی کوتاہیوں سے اسے ہم آگاہ کرتے رہیں تاکہ وہ عوام کی دشواریوں کا خیال کر کے سہولیات مہیا کر سکے۔

अभ्यास कार्य



शब्द = अर्थ

मरदम शुमारी = जनगणना

ज़राए = ज़रिए

बाशिंदे = रहने वाले

निजात = आज़ादी

प्रश्न,, 15 अगस्त 1947 ई से पहले किसकी हुकूमत थी?

प्रश्न,, अब हमारे मुल्क की आबादी कितनी है?

प्रश्न,, हमें अपने देश की खुशहाली के लिए किस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिए?

प्रश्न,, 1901 ई में हमारे देश की आबादी कितनी थी?

प्रश्न,, जनगणना कितने वर्षों के उपरांत होती है?



مشق

الفاظ = معنی

مردم شماری = عوام کی

گنتی

ذرائع = ذریعہ

باشندے = رہنے والے

نجات = آزادی

سوال.. 15 اگست 1947ء سے پہلے کس کی حکومت تھی؟

سوال.. 1901ء میں ہمارے ملک کی آبادی کتنی تھی؟

سوال.. اب ہمارے ملک کی آبادی کتنی ہے؟

سوال... مردم شماری کتنے سال بعد ہوتی ہے؟

سوال.. ہمیں اپنے ملک کی خوشحالی کے لیے کس بات پر زیادہ زور دینا چاہیے؟



पाठ-
अज्ज व इन्किसार
(झुककर अभिवादन)

पाठ्य क्रमांक -

70

प्रकरण-

नज़म

नज़म

نظم

خورشید کو کچھ کچھ حاجت زیور نہیں زنہار پھول پر کوئی عطر لگائے تو بے بیکار
اعلیٰ بے اگر جنس تو کیا حاجت اظہار خود مشک بو خوش بو نہ کہ خوشبو کہے عطار
جو بد بے سو بد بے جو نکو بے وہ نکو بے

خوشیاد کو कुछ حاجت ज़ेवर नहीं जनहार

فूलوں پر کوئی इत्र लगाए तो है बेकार

आला है अगर जिन्स तो क्या हाजत ए इज़हार

खुद मुश्क हो खुशबू न कि खुशबू कहे अत्तार

जो बद है सो बद है जो निकु है वह निकु है

छुपने की नहीं आप अगर ऊद में बू है

تشریح

सारांश

ان اشعار میں شاعر تمثیل کے ذریعے بیان کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ سورج کو برگز زیور سے سجنے کی ضرورت نہیں کیونکہ وہ خود ہی چمک رہا ہے۔ جس طرح اگر کوئی پھولوں پر عطر لگائے تو بے کار ہے۔ اگر انسان کی قسم خود میں عظیم ہے تو اسے بیان کرنے کی ضرورت نہیں۔ مشک میں تو خوشبو ہوتی ہے عطار کے کہنے سے کوئی فرق نہیں پڑتا کیونکہ جو انسان برا ہے وہ برا ہی رہے گا اور جو نیک ہے وہ نیک ہی نظر آئے گا اچھائی کبھی نہیں چھیتی جس طرح برائی چھپانے سے کبھی نہیں چھیتی۔ اس لیے انسان کو اپنی اوقات میں رہ کر ہی بات کرنی چاہیے جو جیسا ہے ویسا ضرور نظر آ جاتا ہے بڑائی کرنے سے کوئی بڑا نہیں ہوتا۔

इन पंक्तियों में शायर मिसाल के द्वारा बयान करते हुए कहता है के सूरज को कभी भी जेवर से सजने की जरूरत नहीं क्योंकि वह खुद ही चमक रहा है। जिस तरह अगर कोई फूलों पर इत्र लगाए तो बेकार है। अगर इंसान की किस्मत खुद में अज़ीम है तो उसे बयान करने की जरूरत नहीं मुश्क में तो खुद खुशबू होती है अत्तार के कहने से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि जो इंसान बुरा है वह बुरा ही रहेगा और जो नेक है वह नेक ही नजर आएगा। अच्छाई कभी नहीं छुपती जिस तरह बुराई छुपाने से कभी नहीं छुपती। इसलिए इंसान को अपनी औकात में रहकर ही बात करनी चाहिए जो जैसा है वैसा जरूर नजर आ जाता है खुद की बड़ाई करने से कोई बड़ा नहीं होता।

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

दावा = अपने को दूसरों से अच्छा समझना

सुखन = कलाम

ज़र्फ़ = बर्तन

कम माया = तुच्छ

शेवा = काम

इनफ़िरादियत = सबसे अलग

उरूज = बुलन्दी

खुशीद = सूरज

हाजत = ज़रूरत

ज़नहार = हरगिज़

आला = ऊंचा

जिन्स = प्रकार

अत्तार = इत्र बेचने वाला

निकु = नेक

ऊद = चुन्दन

خورشید = سورج

دعویٰ = اپنے آپ کو دوسروں سے

حاجت = ضرورت

زنہار = برگز

اعلیٰ = اونچا

جنس = قسم

عطار = عطر فروش

نکو = نیک

عود = چندن

مشق

الفاظ = معنی

بہتر سمجھنا

سخن = کلام

ظرف = برتن

کم مایہ = بے حیثیت

شیوا = کام

انفرادیت = سب سے الگ ہونا

عروج = بلندی

प्रश्न,, मीर अनीस कब पैदा हुए?

प्रश्न,, मीर अनीस के मरसियों में किस बात की शिक्षा मिलती है?

प्रश्न,, मीर अनीस का इंतकाल कब हुआ?

سوال.. میر انیس کب پیدا ہوئے؟

سوال.. میر انیس کے مرثیوں میں کس بات کی

تعلیم ملتی ہے؟

سوال.. میر انیس کا انتقال کب ہوا؟



پاٹن-
اآآآ و ائکسار
(شوکر ائبوااا)

پاٹآ کراماآ -

71

پراکران-

نآآ

نآآ

نآآ

اے آانا انا میں ہر ائک ہر و آواں ضعیف
آارآ اے اصالت سے وہ کستی نہیں آو سیف
آفاق میں یوں فیض نگیں عام نہ ہوتا
ہوتا نہ فروتن تو کبھی نام نہ ہوتا

انسان کے لئے عآآ ہی لازم اے بہر کیف
آر صاحب آو ہر نہ آلے آھک کے تو صا آیف
آفاق میں یوں فیض نگیں عام نہ ہوتا
ہوتا نہ فروتن تو کبھی نام نہ ہوتا

انسان کے لئے اآآ ہی لاآآم اے باھر کئف
آر ساآب آو ہر ن آلے شوک کے تو صا آھف

اے آانا اے انا میں ہر ائک ہر و آواں ضعیف
آارآ اے اصالت سے وہ کستی نہیں آو سیف

ساراآشا

آافراکآ میں یوں فئآآ نرآآ آام ن ہوتا
ہوتا ن فآرتن تو کبھی نام ن ہوتا

آشراح

شاعر نے ان اشعار میں نصیحت کرتے ہوئے کھتا اے کہ انسان کے لئے عآآ ہی ہر حال میں بہتر اے کیونکہ
اس انا میں ہر بوآھا اور آواں کمآور ہیں اگر کوئی آھک کر ااآ سے نہ آلے تو اس پر افسوس اے۔
اصل پن سے الگ اے آو آلوار میان میں نہیں اے۔ آسمان کا فائا آیسے سورآ کی روشنی آانآ کی
آانآنی بارش ہوا یہ عام سب کے لئے نہ ہوتا تو آاکساری میں نام نہیں ہوتا اس لئے انسان کو آفاق
کی طرح عآآ سے آانآ آارنا آاہے۔

شآار ان پآکٹیوں میں نسیاا کرتے آو کھتا اے کہ انسان کے لئے اآآ ہی ہر حال میں بہتر اے کیونکہ
بآا اور آوان کمآور اے۔ اگر کوئی شوکر ااآ سے نا آلے تو اس پر افسوس اے۔ ااسلپن سے انا آو آو آلوار مآان
میں نہیں اے۔ آاسمان کا فایا آیسے سورآ کی روشنی آانآ کی آانآنی بارش ہوا یہ عام سب کے لئے نہ ہوتا تو آاکساری میں
نام نہیں ہوتا۔ اسلئے انسان کو آاسمان کی اراآ شوکر آانآ آانآ آاآا آاآا۔

اآآا آارآ

مشق

شآآ = اراآ
اآآ = آے باسی
باھر کئف = ہر حال میں
آآآ = کمآور
ہر = بآا
آارآ = انا
ااسالآ = ااسلپن
سئف = آلوار
آافراکآ = آاسمان
فئآآ نرآآ = سب پر آیا آانے والا فایا
فآرتن = آاکسار

کراماآ 70 کے
اآآ
(1)1801آ میں (2)
اآآاآاآاآ
آاآ (3)1874آ میں

آرآآ 70 کے
آواآ
(1)1801آ
میں (2)
اآآاآاآاآ
(3)1874آ میں

الفاظ = معنی
عآآ = عآآ، اے باسی
بہر کیف = ہر حال میں
ضعیف = کمآور
ہر = بوآھا
آارآ = الگ
اصالت = اصل پن
سیف = آلوار
آفاق = آسمان
فیض نگیں = عام فائا
فروتن = آاکسار



ग़ज़ल

غزل

फकीराना आए सदा कर चले
जो तुझ बिन न जीने को कहते
थे हम
शिफा अपनी तकदीर ही में न
थी
ना देखा ग़म दोस्तां शुक्र है

मियां खुश रहो हम दुआ कर
चले
सो इस अहद को अब वफा
कर चले
के मक़दूर तक तो दवा कर
चले
हमें दाग़ अपना दिखा कर चले

میاں خوش رہو ہم دعا کر
چلے
سو اس عہد کو اب وفا کر
چلے
کہ مقدور تک تو دوا کر چلے
ہمیں داغ اپنا دکھا کر چلے
کہیں کیا جو پوچھے کوئی ہم سے میر

فقیرانہ آئے صدا کر چلے
جو تجھ بن نہ جینے کو کہتے
تھے ہم
شفا اپنی تقدیر ہی میں نہ تھی
نہ دیکھا غم دوستان شکر ہے
کہیں کیا جو پوچھے کوئی ہم سے میر

कहें क्या जो पूछे कोई हमसे अमीर
जहां में तुम आए थे क्या कर चले

شاعر کا تعارف

بچو آج ہم آپ کو ہندوستان کے ایک عظیم شاعر جناب میر تقی میر کا تعارف کرانیں گے۔ جن کی غزل آپ کے سبق میں دی گئی ہے۔ میر تقی میر اردو اور فارسی کے مایہ ناز شاعر تھے میر کی پیدائش 28 مئی 1723ء کو آگرہ میں ہوئی۔ انکے والد محمد علی متقی تھے جو درویش صفت انسان تھے۔ میر کی شاعری اردو ادب کے ایک عظیم تر شاعری میں شمار ہوتی ہے ہندوستانی شعرا نے انہیں خدائے سخن کا خطاب بھی دیا تھا۔ مغلیہ سلطنت کے دور میں ان کی شہرت آفتاب کو چھو رہی تھی۔ میر شاعر تو تھے ہی، وہ کئی کتب کے مصنف اور نثر نگار بھی تھے۔ عہد طفلی میں ہی یہ آگرہ سے دہلی آ گئے اور جب دلی اجڑی تو یہ لکھنؤ چلے گئے۔ 12 ستمبر 1810ء کو اس دار فانی سے کوچ کر گئے۔ انکی شاعری میں امیدیں بھی ہیں حسن و جمال کی رنگینی بھی اور حالات کا تذکرہ بھی ان کے مایہ ناز شاعری سے مرغوب ہو کر غالب نے کہا تھا کہ ریختہ کے تم ہی استاد نہیں ہو غالب :-
کہتے ہیں اگلے زمانے میں کوئی میر بھی تھا۔

شاعر کا परिچہ

بچوں! آج ہم آپکو ہندوستان کے اعلیٰ شاعر جناب میر تقی میر کا परिچہ کراؤں گے۔ جن کی غزل آپ کے سبق میں دی گئی ہے۔ میر تقی میر اردو اور فارسی کے مایہ ناز شاعر تھے میر کی پیدائش 28 مئی 1723ء کو آگرہ میں ہوئی۔ انکے والد محمد علی متقی تھے جو درویش صفت انسان تھے۔ میر کی شاعری اردو ادب کے ایک عظیم تر شاعری میں شمار ہوتی ہے ہندوستانی شعرا نے انہیں خدائے سخن کا خطاب بھی دیا تھا۔ مغلیہ سلطنت کے دور میں ان کی شہرت آفتاب کو چھو رہی تھی۔ میر شاعر تو تھے ہی، وہ کئی کتب کے مصنف اور نثر نگار بھی تھے۔ عہد طفلی میں ہی یہ آگرہ سے دہلی آ گئے اور جب دلی اجڑی تو یہ لکھنؤ چلے گئے۔ 12 ستمبر 1810ء کو اس دار فانی سے کوچ کر گئے۔ انکی شاعری میں امیدیں بھی ہیں حسن و جمال کی رنگینی بھی اور حالات کا تذکرہ بھی ان کے مایہ ناز شاعری سے مرغوب ہو کر غالب نے کہا تھا کہ ریختہ کے تم ہی استاد نہیں ہو غالب :-
کہتے ہیں اگلے زمانے میں کوئی میر بھی تھا۔

ساراংশ

تشریح

شاعر کہتا ہے کہ ہم نے غربت میں آ کر آوازیں دیں اور گزر گئے۔ آپ خوش رہیں یہی دعا دے کر جا رہے ہیں ہم (محبوبہ سے مخاطب) تیرے بنا جینے کو نہیں کہتے تھے ہم نے یہ وعدہ پورا کر دیا اور اب ہم اس دارفانی سے جا رہے ہیں۔ دوا کو بہت کی مگر بیماری تقدیر میں صحتیابی ہی نہیں تھی تو کیا کرتے (یہ اشارہ محبوب کے وصل کی جانب ہے) کہ وصل کی کوشش تو بہت کی مگر افسوس یہ بیماری قسمت میں نہیں تھا کہ وصال یار ہوتا یہ خدا کا شکر ہے کہ ہم نے محبوب کا غم نہیں دیکھا ہم اپنی تحریروں میں اپنا داغ دکھاتے رہے اور آخر میں ہم سے کوئی پوچھے گا تو تم اس جہاں میں کیوں آئے تو ہم پھر کیا جواب دیں گے۔

شاعر کہتا ہے کہ ہم گریبی میں آکر آوازیں دیتے رہے اور چلے گئے۔ آپ خوش رہیں یہی دعا دے کر جا رہے ہیں ہم (محبوبہ سے مخاطب) تیرے بنا جینے کو نہیں کہتے تھے ہم نے یہ وعدہ پورا کر دیا اور اب ہم اس دارفانی سے جا رہے ہیں۔ دوا تو بہت کی مگر ہماری تکدیر میں سہت یابی ہی نہیں تھی تو کیا کرتے، یہ اشارہ محبوب کے ملاقات کی جانب ہے کہ ملاقات کی کوشش تو بہت کی مگر افسوس یہ بیماری قسمت میں نہیں تھی کہ وصال یار ہوتا یہ خدا کا شکر ہے کہ ہم نے محبوب کا غم نہیں دیکھا ہم اپنی تحریروں میں اپنا داغ دکھاتے رہے اور آخر میں ہم سے کوئی پوچھے گا تو تم اس جہاں میں کیوں آئے تو ہم پھر کیا جواب دیں گے۔

دیکھتے رہے اگر آخیر میں ہم سے کوئی پوچھے گا کہ تو اس
پر مشق
سوال۔۔ میر تقی میر کب اور کہاں پیدا ہوئے؟
سوال۔۔ میر کا انتقال کب ہوا؟
سوال۔۔ میر کس سلطنت کے دور میں شاعر ہوئے؟
سوال۔۔ شعراء نے میر تقی میر کو کیا خطاب دیا؟





गीत के बारे में

गीत کی تعریف

بچو اس سے پہلے کہ ہم اس گیت کو پڑھیں میں ضروری سمجھتا ہوں کہ آپ کو گیت کی تعریف بتا دی جائے گیت کیا ہوتا ہے گیت کسے کہتے ہیں۔ لغت میں گیت سے مراد راگ سرور اور نغمہ کے ہیں۔ اس لیے گیت کو گانے کی چیز سمجھا جاتا ہے اس کا گہرا تعلق موسیقی سے ہے اس لیے اس میں سر اور تال کو خاص اہمیت حاصل ہے۔ گیت میں جذبات احساسات اور خاص کر بجز و فراق کو بڑے واضح انداز میں بیان کیا جاتا ہے۔ موسیقی میں سروں کی ایک ایسی لہر ہوتی ہے جس میں انسانی آواز بھی شامل ہو اور وہ گیت کے بول گانے کے بول عام طور شاعری پر مشتمل ہوتے ہیں اور ان کو ادا کرتے ہوئے سر اور تال کا تمام احترام ملحوظ خاطر رکھا جاتا ہے۔ گیت کو یا تو ایک ہی گلوکار گاتا ہے یا پھر مرکزی گلوکار کے ساتھ کئی دوسری آوازیں بھی شامل ہوتی ہیں۔ گیت کے کئی قسمیں ہیں جو کہ شاعری آواز اور خطوں کی بنیاد پر درجہ بندی میں ڈالی جاتی ہیں۔ لطیف گیت، کلاسیکی گیت، یا پھر لوک گیت بھی اس کے علاوہ گیتوں کی درجہ بندی موسیقی اور گیت کے مقصد کے تحت بھی کی جاتی ہے جیسے ریپ، جاز، کنٹری وغیرہ۔

بچوں سے پہلے کہ ہم اس گیت کو پڑھنے میں आवश्यक समझता हूँ कि आपको गीत की बारे में बता दिया जाए। गीत क्या होता है? गीत किसे कहते हैं? शब्दकोश में गीत से मुराद राग, सुरर और नगमे के हैं इसलिए गीत को गाने की चीज समझा जाता है। इसका गहरा संबंध संगीत से है इसलिए इसमें सुर और ताल को खास अहमियत हासिल है। गीत में जज्बात, एहसासात और खासकर फिराक यानी जुदाई को बड़े दर्द भरे अंदाज में बयान किया जाता है। संगीत में सुरों की एक ऐसी लहर होती है जिसमें इंसानी आवाज भी शामिल हो और वह गीत के बोल गाए। गीत के बोल आमतौर पर शायरी पर आधारित होते हैं और उनको अदा करते हुए सुर और ताल का पूरा खयाल और ध्यान रखा जाता है गीत को या तो एक ही गायक गाता है या फिर केंद्रित गायकों के साथ कई दूसरी आवाजें भी शामिल होती हैं गीत की कई प्रकार हैं जो के शायरी आवाज और खतों की बुनियाद पर दर्जा बंदी में डाली जाती हैं बारीक गीत, क्लासिकी गीत, पॉप गीत, या फिर लोकगीत इसके अलावा गीतों की दर्जा बंदी संगीत की तरह और गीत के मकसद के तहत भी की जाती है जैसे नृत्य, रेप, जॉरज़, कंट्री वगैरा।

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

मौसीक़ी = संगीत

नग़मा = गीत

वालिहाना = दर्द भरे अंदाज में

मुशतमिल = शामिल

मलहूज़ = ध्यान में

गुलूकार = गायक

प्रश्न,, शब्द कोष में गीत का क्या अर्थ है?

प्रश्न,, गीत का गहरा संबंध किस से है?

प्रश्न,, गीत कितने प्रकार के होते हैं?



مشق

الفاظ = معنی

موسیقی = سنگیت

نغمہ = گیت

فراق = جدائی

والہانہ = دردمندانہ

مشمول = شامل

ملحوظ خاطر = ذہن نشین رکھنا

گلوکار = گانے والے

سوال.. لغت میں گیت کے کیا معنی ہیں؟

سوال.. گیت کا گہرا تعلق کس سے ہے؟

سوال.. گیت کی کتنی قسمیں ہیں؟



पाठ-
गीत

पाठ्य क्रमांक -

74

प्रकरण-

गीत

بچوں کل میں نے آپ کو گیت کے بارے میں تفصیل سے بتایا تھا کہ گیت کسے کہتے ہیں اور اس کی کتنی قسمیں ہوتی ہیں۔ چلو آج اس گیت کو پڑھتے ہیں اور اسے اپنی آواز میں گانے کی طرح گانے کی کوشش کریں گے۔ یہ بات یاد رکھیں کہ اردو شاعری میں گیت نے دکنی شاعری کے اثرات کے تحت رواج پایا۔ محمد ابراہیم شاہ ثانی جگتگرو نے گیت کو اپنے زمانے میں عام کیا۔ گیت میں ہندوستانی تہذیب اور معاشرے کے اچھے نمونے ملتے ہیں۔ یہ گیت جو آپ کے سبق میں دیا ہے اس کو راجندر کرشن نے لکھا ہے۔

بچوں ویسے آپ آج کل نئے طرز کے گانے سنتے ہیں وہ سب گیت کا ہی روپ ہوتے ہیں۔ آپ نے شادی وغیرہ میں بھی نغمہ سنے ہوں گے انہیں لوک گیت کہتے ہیں جو ہر علاقے کی تہذیب کی نمائندگی کرتے ہیں مختلف جگہوں پر مختلف بولیوں میں خوشی اور غم کے الگ الگ گیت گائے جاتے ہیں تو چلو گیت گاتے ہیں۔



یگلا سونا دور گگن پر:- پھیل رہے ہیں شام کے سائے
خاموشی کچھ بول رہی ہے:- بھید انوکھے کھول رہی ہے۔
سے لے کر

ایک ہی جلوہ شام-سویرے:- بھیس بدل کر سامنے آئے

بच्चों कल मैंने आपको गीत के बारे में विस्तार से बताया था कि गीत किसे कहते हैं और उसकी कितने प्रकार होते हैं चलो आज इस गीत को पढ़ते हैं और उसे अपनी आवाज में गाने की कोशिश करते हैं यह बात याद रखो कि उर्दू शायरी में गीत ने दक्षिणी शायरी के अपराध के तहत भाजपा या मोहम्मद इब्राहिम शाह साहनी जगतगुरु ने गीत को अपने जमाने में आम किया गीत में हिंदुस्तानी तहजीब और समाज के अच्छे नमूने मिलते हैं यह गीत जो आपके पाठ में दिया है उसको राजेंद्र कृष्ण ने लिखा है बच्चों वैसे आप आजकल नए-नए तर्ज के गाने सुनते हैं वह सब गीत का ही रूप होते हैं आपने शादियों वगैरह में भी नगमे सुने होंगे उन्हें लोकगीत कहते हैं जो हर इलाके को की तहजीब को नुमाइंदगी करते हैं भिन्न-भिन्न जब ऊपर मुख्तलिफ भिन्न-भिन्न बोलियों में खुशी और गम के अलग-अलग गीत गाए जाते हैं तो चलो गीत गाते हैं:-

पिघला सोना दूर गगन पर :-
फैल रहे हैं शाम के साए
खामोशी कुछ बोल रही है :-
भेद अनोखे खोल रही है
से लेकर
एक ही जलवा शाम सवेरे :-
भेष बदलकर सामने आए।

بچوں اس گیت میں راجندر کرشن جی شام کا منظر بیان کر رہے ہیں
آپ لوگ بھی روز شام کو ایسا منظر دیکھتے ہونگے اچھے گیت کار کی
تعریف ہی یہ ہوتی ہے کہ وہ اپنے الفاظ سے منظر ایسے بیان کرتا ہے
جیسے ہم وہی ہوں سارے منظر ہماری آنکھوں کے سامنے تیرنے لگتے
ہیں۔ شام کی خاموشی کچھ بول رہی ہے نظارے بادلوں میں چھپ
رہے ہیں آسمان پر رنگین ستارے روشن ہونے جارہے ہیں اس خوبصورت
منظر کو کس نے سجایا کوئی اس بات کو نہیں جانتا روزانہ ایک ہی
منظر مختلف انداز سے سامنے آتا رہتا ہے۔

تشریح

سारांश

बच्चों इस गीत में राजेंद्र कृष्ण जी शाम का मंजर बयान कर रहे हैं आप लोग भी रोज शाम को ऐसा मंजर देखते होंगे अच्छे गीतकार की तारीफ ही यह होती है कि वह अपने शब्दों से मंजर ऐसे बयान करता है जैसे हम वही हूँ सारे मंजर हमारी आंखों के सामने तैरने लगते हैं। शाम की खामोशी कुछ बोल रही है नजारे बादलों में छुप रहे हैं आसमान पर रंगीन सितारे रोशन होने जा रहे हैं इस खूबसूरत मंजर को ترتیب 73 کے جواب کے

(1) राग, सुरूर और नगमा (2) संगीत से।

(3) गीत के कई प्रकार हैं। लतीफ गीत, क्लासिकी गीत, पौप

गीत, लोक गीत आदि

(1) राग, सुरूर اور نغمہ۔ (2) موسیقی سے۔

(3) لطیف گیت، کلاسیکی گیت، پاپ گیت، لوک گیت

وغیرہ



पाठ-

पाठ्य क्रमांक -

साहित्य

76

प्रकरण-

गज़ल

गज़ल परिचय

ग़ज़ल का تعارف

بچوں کل ہم نے آپ کو اشعار کے بارے میں معلومات فراہم کیں۔ آج ہم اردو ادب کی مشہور صنف غزل کے بارے میں گفتگو کریں گے۔

غزل اردو شاعری کی مقبول ترین صنف سخن ہے۔ غزل توازن میں لکھی جاتی ہے اور ہم قافیہ، بحر اور ہم ردیف مصرعوں سے اشعار کا مجموعہ ہوتی ہے، مطلع کے علاوہ غزل کے باقی تمام اشعار کے پہلے مصرع اولیٰ میں قافیہ اور ردیف کی قید نہیں ہوتی جب کہ مصرعہ ثانی میں غزل کا ہم آواز قافیہ ہم ردیف کا استعمال کرنا لازمی ہے۔ غزل کا پہلا شعر مطلع کہلاتا ہے جس کے دونوں مصرعے ہم بحر اور ہم قافیہ ہم ردیف ہوتے ہیں آخری شعر مقطع کہلاتا ہے بشرطیکہ اس میں شاعر اپنا تخلص استعمال کرے ورنہ وہ بھی شعر ہی کہلاتا ہے۔ غزل کے لغوی معنی عورتوں سے باتیں کرنے یا عورتوں کی باتیں کرنے کے ہیں۔ اصطلاحی شاعری میں غزل سے مراد وہ صنف نظم ہے جس کا ہر ایک شعر الگ اور مکمل مضمون کا حامل ہو۔ غزل کا آغاز فارسی زبان سے ہوا غزل کی اردو ادب میں کامیابی اور پسندیدگی کی بنیادی وجہ یہ ہے کہ ہر دور میں اہل اردو کا جذبات و احساسات کا ساتھ نبھانے میں کامیاب رہی ہے آج غزل اپنے عروج پر اس لئے بھی ہے کہ اس میں حسن و عشق وصل و فراق کے علاوہ حالات حاضرہ کو بھی اشعار کے پیرائے میں ڈھالا گیا ہے۔

دिल धड़कने का सबब याद आया
वह तेरी याद थी अब याद आया
दिन गुजारा था बड़ी मुश्किल से
फिर तेरा वादा ए शब अब याद आया
बैठकर साया ए गुल में नासिर
हम बहुत रोए वह जब याद आया



دل دھڑکنے کا سبب یاد آیا
وہ تیری یاد تھی اب یاد آیا
دن گزارا تھا بڑی مشکل سے
پھر تیرا وعدہ شب یاد آیا
بیٹھ کر سایہ گل میں ناصر
ہم بہت روئے وہ جب یاد آیا

बच्चों कल हमने आपको अशआर के बारे में जानकारी दी थी आज हम उर्दू अदब की मशहूर सन्फ गजल के बारे में बातचीत करेंगे।

गजल उर्दू शायरी की प्रसिद्ध सन्फेसुखन है। गज़ल तवाजुन में लिखी जाती है और यह हम काफिया बहर और हम रदीफ़ से बने अशआर का मजमुआ होती है। मतले के अलावा गज़ल के बाकी तमाम अशआर के पहले मिसरे ऊला में काफिया और रदीफ़ की कैद नहीं होती जबकि मिसरे सानी में गज़ल का हम आवाज काफिया हम रदीफ़ का इस्तेमाल करना लाजमी है।

गज़ल का पहला शेर मतला कहलाता है जिसके दोनों मिसरे हम बहर और हम काफिया हम रदीफ़ होते हैं। आखरी शेर मतला कहलाता है बशर्ते के इस में शायर अपना तख़ल्लुस (उपनाम) इस्तेमाल करें वरना वह भी शेर ही कहलाता है। गजल के शब्दकोश में अर्थ होता है औरतों से बातें करने या औरतों की बातें करने के हैं। इसतलाही शायरी में गज़ल से मुराद वह सन्फ़ ए नज़म है जिसका हर एक शेर अलग और मुकम्मल मजमून कहाँ हामिल हो। गजल का आगाज फारसी जुबान से हुआ। गज़ल की उर्दू अदब में कामयाबी और पसंदीदगी की बुनियादी वजह यह है कि हर दौर में उर्दू के जज़्बात व एहसासात का साथ निभाने में कामयाब रही है। आज गज़ल अपने उरूज पर इसलिए भी है कि उसमें हुस्न व इश्क़ वस्ल व फ़िराक़ के अलावा हालाते हजरा को भी अशआर के पैराए में ढाला गया है।

मतला = गज़ल का पहला शेर

काफ़िया = तुकबंदी

रदीफ़ = एक हर्फ़ जो शेर में बार बार आए

ترتیب 75 کے جواب

(1) دو (2) شعر کے

وزن کو (3) پروین

شاکر کا

مطلع = غزل کا پہلا شعر

قافیہ = تک بندی

ردیف = ایک حرف جو

شعر میں بار بار آئے



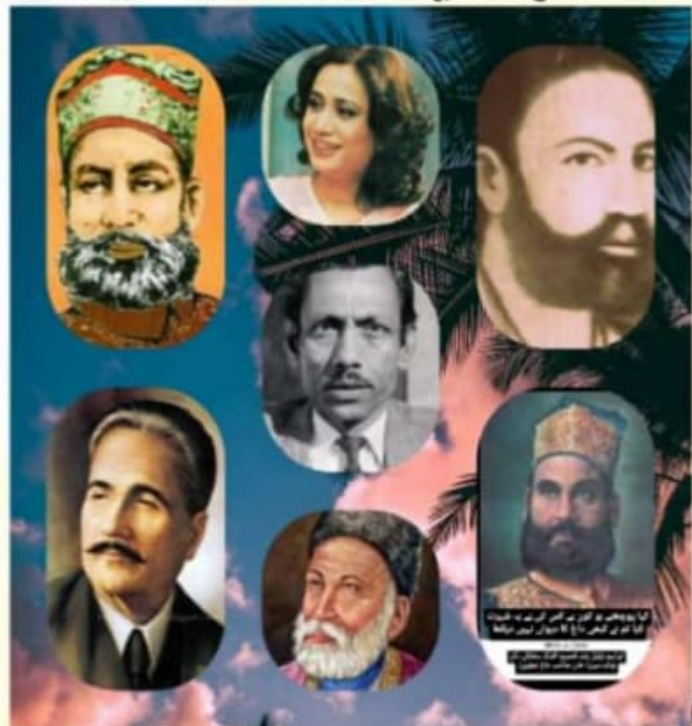
بچوں کل آپ گزل کے بارے میں تو سمجھ ہی گئے ہونگے۔ کل جو چند اشعار گزل کے آپ کو پڑھانے تھے وہ گزل ناصر کاظمی صاحب کی لکھی ہوئی ہے۔ آپ ان اشعار کو غور سے دیکھیے اس کا ہر شعر ایک الگ مضمون لیے ہوئے ہے پہلا شعر ہم قافیہ ہم ردیف ہے جبکہ دوسرے شعر کا مصرع ثانی پہلے شعر کے قافیے سے ملتا ہے آخری شعر میں شاعر نے اپنا تخلص لکھا ہے اس لیے یہ مقطع کہلاتا ہے۔ بند و پاک میں غزلوں کو گلوکار بھی بہت شوق سے گاتے ہیں اور سامعین بھی بڑے غور سے سنتے ہیں اور اس پر داد دیتے ہیں۔ مشاعروں میں زیادہ تر غزلیں پڑھی جاتی ہیں۔ بند و پاک میں عظیم شاعر بھی ہوئے جو اردو ادب میں اپنا منفرد مقام رکھتے ہیں۔ گزل میر تقی میر سے ہوتی ہوئی غالب، داغ، اقبال، پروین شاکر تک اپنا ایک طویل سفر طے کر کے ہم تک پہنچی ہے فلموں میں بھی غزلیں گائی جاتی ہیں۔ آجکل غزلوں میں اس کے علاوہ حالات حاضرہ پر بھی طبع آزمائی کی جا رہی ہے اور کسی حد تک کامیاب بھی ہے۔ گلوکاروں میں معروف نام مہندی حسن، غلام علی، جگجیت سنگھ، چترا سنگھ وغیرہ مشہور گزل گلوکار ہیں۔

بچوں کلا آپ گزل کے بارے میں تو سمجھ ہی گئے ہوںگے۔ کلا جو چند اشعار گزل کے آپکو پڑھاے تھے وہ گزل ناسیر کاسمی ساہب کی لکھی ہوئی ہے آپ اس گزل کے اشعار کو گور سے دیکھیے اسکا ہر شہر اک اलग مضمون لیے ہوا ہے پہلا شہر ہم کافریا ہم ردیف ہے جبکہ دوسرے شہر کا میسا سانی پہلے شہر کے کافریے سے ملتا ہے آخیری شہر میں شایر نے اپنا تخلص لکھا ہے اس لیے یہ مقطع کہلاتا ہے۔ ہند و پاک میں گزلوں کو گایک بہت شوق سے گاتے ہیں اور سوننے والے بھی بڑے دھیان سے سونتے ہیں اس پر واہ واہ بھی کرتے ہیں۔ مشایروں میں جیادا تر گزلوں ہی پڑھی جاتی ہیں۔ ہند و پاک میں کئی اجمی شایر بھی ہواے جو ٲد ادب میں اپنی اलग جگہ رکھتے ہیں۔ گزل میر تکی میر سے ہوتی ہوئی غالب، فیراک، ناسیر، اکبال، پرویں شاکر تک اپنا اک لंबا سفر طے کر کے ہم تک پہنچی ہے۔ فیلموں میں بھی گزلوں گائی جاتی ہیں آجکل گزلوں میں فیراک کے الاوا ہالاکت ہاجرا پر بھی تبا آجمائی کی جا رہی ہے اور کسی حد تک کامیابی ہے۔ گایکوں میں مشاھر نام غلام االی، مہندی حسن،

جگجیت سینگ، چترا سینگ آدی مشاھر گزل گایک ہیں۔

اہیاس کاری

- (1) بچو آپ بھی آج کے شایروں کی تسویروں اکٹھا کیجیے۔
- (2) آپ کس گایک کو پسند کرتے ہیں۔ انکے بارے میں دس لائین لکھیے۔
- (3) اپنے پسندیدا شایر کی گزل یاد کیجیے۔



(1) بچو آپ جدید دور کے شعراء کی تصاویر جمع کریں۔

(2) آپ کس گزل گلوکار کو پسند کرتے ہیں۔

(3) اپنے پسندیدا شاعر کی گزل یاد کریں۔



मिशन शिक्षण संवाद



विषय-

कक्षा- 7th
उर्दू

पाठ-

पाठ्य क्रमांक -

साहित्य

78

प्रकरण-

नज़्म

नज़्म का परिचय

नظم کا تعارف

بجو اردو ادب کی دو اصناف ہیں، اردو نثر اور اردو نظم یعنی اردو شاعری۔ اردو نظم کی کئی قسمیں ہیں جو میں نے آپ کو ادب والے سبق میں بتائی تھیں۔ ان اصناف میں سب سے مشہور صنف غزل ہے جس کے بارے میں ہم پہلے پڑھ چکے ہیں مگر اردو شاعری کی سب سے وسیع قسم اردو نظم ہے اردو نظم میں بہت زیادہ تجربے کیے گئے ہیں اور یہی اس کی وسعت کی دلیل ہے نظیر اکبر آبادی، الطاف حسین حالی، اور اقبال، جوش جیسے مختلف اور عظیم شعرا نے اس پر طبع آزمائی کی ہے۔

تعریف:-

نظم شاعری کی ایک ایسی قسم ہے جو کسی ایک عنوان کے تحت کسی ایک موضوع پر لکھی جاتی ہے نظم کی ایک خاص بات یہ ہے کہ اس بیت کی کوئی قید نہیں ہے یہ غزل کی طرح بحر اور قافیہ کی پابند بھی ہوتی ہے اور اس سے آزاد بھی اس میں مضامین کی وسعت ہوتی ہے۔ نظم زندگی کے کسی بھی موضوع پر کہی جاسکتی ہے جیسے مثال کے طور پر علامہ اقبال کی مشہور نظم شکوہ جواب شکوہ ہے اس نظم میں اقبال نے مسلمانوں کی ابتر حالت کا شکوہ خدا سے کیا ہے اور خدا کی طرف سے اس کا جواب اور حل بتانے کی مکمل کوشش کی ہے۔ ساحر لدھیانوی کی نظم متاع غیر شادی شدہ عورت سے اپنی محبت کا بھرپور اظہار کیا ہے۔ حالی کی مسدس یہ نظم حالی کی معروف نظم ہے جو مسدس کی شکل میں لکھی گئی ہے اس نظم میں حالی نے مسلمانوں میں موجودہ شرک سے بیزاری اختیار کرنے کی ترغیب دی ہے۔

बच्चो उर्दू अदब की दो लिंगे हैं उर्दू गद्यांश और उर्दू पद्यांश। यानी उर्दू शायरी। फिर उर्दू नज्म की कई किस्में हैं जो मैंने आपको अदब वाले पाठ में बताई थीं। इन लिंगों में सबसे मशहूर लिंग गज़ल है जिसके बारे में हम पहले पढ़ चुके हैं। मगर उर्दू शायरी की सबसे व्यापक किस्म उर्दू नज़्म है उर्दू नज़्म में बहुत ज्यादा तजुर्बे किए गए हैं और यही उसके विस्तार की दलील है नजीर अकबराबादी अलताफ हुसैन हाली, और इक़बाल, जोश मलीहाबादी, जैसे मुख्तलिफ और उच्च शायरों ने इस

परिभाषा:-

नज़्म शायरी की एक ऐसी किस्म है जो किसी एक शीर्षक के तहत किसी एक विषय पर लिखी जाती है। नज़्म की एक खास बात यह है कि इस में दिखावटी कोई क़ैद नहीं है यह गज़ल की तरह तुकबंदी और बहर से आजाद भी होती है और पाबंद भी इसमें मज़ामीन की व्यापकता भी होती है नज़्म जिंदगी के किसी भी शीर्षक पर कही जा सकती है जैसे मिसाल के तौर पर इकबाल की मशहूर नज़्म शिकवा जवाब ए शिकवा इस नज़्म में इकबाल ने मुसलमानों की बदतर हालत का शिकवा खुदा से किया है और फिर खुदा की तरफ से उसका जवाब और हल बताने की मुकम्मल कोशिश की है। साहिर लुधियानवी की नज़्म मता ए गौर है इसमें साहिर ने किसी शादीशुदा औरत से अपनी मोहब्बत का भरपूर इजहार किया है। हाली की मसदस यह नज़्म हाली की मशहूर नज़्म है जो मसदस की शकल में लिखी गई है इसमें हाली ने मुसलमानों में वर्तमान में शिरक (अनेकश्वरवाद) से बेचारी अख्तियार करने की तरगीब (प्रेरणा) दी है।



इरतका (क्रयांगत उन्नति)

ارتقاء

بچو اب ہم آپ کو بتاتے ہیں کہ اس صنف کا ارتقاء کب سے ہوا۔ اردو نظم کی ابتدائی مثالیں قلی قطب شاہ کے دیوان میں مل جاتی ہیں بلکہ اردو ادب کا سب سے پہلا شہ پارہ قدم راؤ یدم راؤ دراصل اردو نظم کی ہی ایک قسم ہے۔ نظیر اکبر آبادی نے نظم کو بام عروج عطا کیا انہوں نے مختلف موضوعات پر بیشتر نظمیں لکھی ہیں۔ محمد حسین آزاد اور حالی نے اردو نظم میں مغربیت کا تعارف کرایا اور یوں اردو نظم میں جدت پسندی کی ابتدا ہوئی۔ جس سے موضوعات میں وسعت پیدا ہوئی اور اب ملکی حالات اجتماعی خیالات احساسات پر نظمیں لکھی جانے لگیں۔ اکبر الہ آبادی اور چکبست کا دور آیا تو انہوں نے اردو نظم کے ارتقاء میں نمایاں کردار ادا کیا، مگر اردو نظم کی ہیئت ابھی تک تبدیل نہیں ہوئی تھی۔ اردو نظم کی پہلی کوشش عبدالحمید شرر کے ذریعے ہوئی جنہوں نے نظم معرا کو رائج کرنے کی کوشش کی۔

پابند نظم

اقسام:- ہیئت کی بنیاد پر اردو نظم کی اقسام مندرجہ ذیل ہیں۔
 پابند نظم، طویل نظم، معرا نظم، آزاد نظم، پابند نظم غزل کی طرح بحر و قافیہ کی پابند ہوتی ہے۔
 نثری نظم، طویل نظم، قصیدہ مرثیہ یا مثنوی طویل نظم کی مثالیں ہیں جیسے اقبال کی شکوہ جواب شکوہ، ساحر کی اے شریف انسانوں وغیرہ۔

معرا نظم

معرا نظم کسی مخصوص بحر میں کہی جاتی ہے مگر اس میں قافیہ نہیں ہوتا ہے اس کو انگریزی میں (Blank verse) کہتے ہیں۔

آزاد نظم

آزاد نظم کو انگریزی میں (free verse) کہتے ہیں۔ پہلی مرتبہ فرانس غیرمساوی مصرعوں پر لکھی گئی ایک نظم تھی۔

نثری نظم

یہ صنف مکمل آزاد صنف ہے اور اس میں وزن ردیف اور قافیہ کی پابندی نہیں کی جاتی ہے لیکن شعریت کا عنصر ضرور موجود ہوتا ہے اسی لئے اسے نظم کے درجے میں لکھا جاتا ہے۔

بچو اب ہم آپ کو بتاتے ہیں کہ اس صنف کا ارتقاء کب سے ہوا۔ اردو نظم کی ابتدائی مثالیں قلی قطب شاہ کے دیوان میں مل جاتی ہیں بلکہ اردو ادب کا سب سے پہلا شہ پارہ قدم راؤ یدم راؤ دراصل اردو نظم کی ہی ایک قسم ہے۔ نظیر اکبر آبادی نے نظم کو بام عروج عطا کیا انہوں نے مختلف موضوعات پر بیشتر نظمیں لکھی ہیں۔ محمد حسین آزاد اور حالی نے اردو نظم میں مغربیت کا تعارف کرایا اور یوں اردو نظم میں جدت پسندی کی ابتدا ہوئی۔ جس سے موضوعات میں وسعت پیدا ہوئی اور اب ملکی حالات اجتماعی خیالات احساسات پر نظمیں لکھی جانے لگیں۔ اکبر الہ آبادی اور چکبست کا دور آیا تو انہوں نے اردو نظم کے ارتقاء میں نمایاں کردار ادا کیا، مگر اردو نظم کی ہیئت ابھی تک تبدیل نہیں ہوئی تھی۔ اردو نظم کی پہلی کوشش عبدالحمید شرر کے ذریعے ہوئی جنہوں نے نظم معرا کو رائج کرنے کی کوشش کی۔

پابند نّژم، تّوّل نّژم، مآرا نّژم، آآآاد نّژم، نّسری نّژم

پابند نّژم:- پابند نّژم گّآل کی तरह بھر و کّافیا کی پابند ہوتی ہے۔

تّوّل نّژم:- کّسیدا، مّسیا، یا مّسنوی تّوّل نّژم کی میسالے ہّے۔ جےسے اّکبال کی شیکوا جوا ب

ا شیکوا، ساہیر کی اے شریف اّسانوں آاد۔

مآرا نّژم:- مآرا نّژم کی آاس بھر مّ کھی جاتی ہے مگر اّسم مّ کّافیا نّھی ہوتا۔ اّسکو اّگری میں (blank verse) کھتے ہّے

آآآاد نّژم:- آآآاد نّژم کو اّگری میں (free verse) کھتے ہّے اور پہلی بار فرانس اور برباری میسرّوں پر لکھی گئی اّک نّژم تھی۔

نّسری نّژم:- یھ لینگ پوری آآآاد لینگ ہے اور اّسم مّ وّآن، ردیف اور کّافیا کی پابندی نّھی کی جاتی، لکین شریعت

کا مّآا اّوآی ہوتا ہے اّسیلئے اّسے نّژم کی شری میں لکھا جاتا ہے۔



पाठ-

पाठ्य क्रमांक -

साहित्य

80

प्रकरण-

अभ्यास

بچو آج ہم پچھلے سبق کی مشق کریں گے۔

बच्चो आज हम अभ्यास कार्य करेंगे।

مندرجہ ذیل شاعروں کو پہچان کر ان کے نام ان کی تصویر کے آگے لکھیے
निम्नलिखित शायरों को पहचान कर उनके नाम उनकी तस्वीर के आगे लिखिए।



بچو ان شاعروں میں سے زیادہ آپ کو کس کی نظمیں اچھی لگتی ہیں۔

बच्चों इन शायरों में सबसे ज्यादा आपको किसकी नज़में अच्छी लगती हैं।

سوال.. اردو نظم کی ابتدائی مثالیں کس کے دیوان سے ملتی ہیں؟

سوال.. نظم کو بام عروج پر کس نے پہنچایا؟

سوال.. اردو نظم کی ہیئت بدلنے کی کوشش سب سے پہلے کس نے کی؟

سوال.. اردو نظم کی کتنی اقسام ہیں ان کے نام لکھیے۔

سوال.. معرا نظم کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟

سوال.. آزاد نظم کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟

پرسن,, उर्दू नज़म की शुरुआती मिसालें किसके दीवान से मिलती हैं?

پرسن,, नज़म को उन्नति के पथ पर किसने पहुंचाया?

پرسن,, उर्दू नज़म की दिखावट बदलने की कोशिश सबसे पहले किसने की?

پرسن,, उर्दू नज़म कितने प्रकार की होती है उनके नाम लिखिए।

پرسن,, मअरा नज़म को انگریزی में क्या کہتے ہیں?

پرسن,, آज़اد نज़م کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں?



बچो کل میں نے آپ کو قصیدے کے بارے میں بتایا تھا کہ اردو ادب میں شاعری کی صنف قصیدہ بھی ایک بہت اہم مقام رکھتا ہے۔ کل غالب کا جو قصیدہ میں نے پڑھ کر آپ کو سنایا اس کے مشکل الفاظ کے معنی بھی میں نے بتائے تھے جس سے آپ کو قصیدے کے اشعار سمجھ میں آ گئے ہوں گے۔ آگے آج میں آپ کو قصیدے کی اقسام کے بارے میں تفصیل سے بتاؤں گا۔ تو قصیدے کی قسمیں مندرجہ ذیل ہیں۔

बच्चों कल मैंने आपको क़सीदे के बारे में बताया था के उर्दू अदब में शायरी की लिंग कसीदा भी एक बहुत अहम दर्जा रखता है। कल ग़ालिब का जो क़सीदा मैंने पढ़कर आपको सुनाया उसके मुश्किल शब्दों के मायने भी मैंने बताए थे जिससे आपको कसीदे के यह शेर समझ में आ गए होंगे।

आज मैं आपको कसीदे के प्रकार के बारे में विस्तार से बताऊंगा तो कसीदे के प्रकार निम्नलिखित हैं:-

قصیدے کا پہلا حصہ تشبیب کہلاتا ہے اس میں شاعر عشق وعاشقی کی باتیں شباب وجوانی کے قصے اور فضا کی رنگینی کا حل بیان کرتا ہے۔

تشبیب ترمیم

تشبیب کے بعد قصیدے میں گریز کی منزل آتی ہے گریز کی یہ خوبی قرار دی گئی ہے کہ تشبیب کے بعد ممدوح کا ذکر نہایت کی فطری اور موضوع طریقے سے کیا جائے یعنی بیان میں ایک فطری مناسبت تسلسل اور ربط قائم رہے۔

گریز ترمیم

قصیدے کا سب سے ضروری جزو مدح سرائی ہے اور اسی پر قصیدے کی بنیاد ہوتی ہے فارسی اردو میں مدح کا معیار خیال آفرینی اور مبالغہ ہوتا ہے۔

مدح ترمیم

اس حصہ میں شاعر اپنا مقصد بیان کرتا ہے اس کے لیے شاعر کو ایسی سحر بیانی سے کام لینا پڑتا ہے کہ ممدوح کی طبیعت پر گراں نہ گزرے۔

حسن طلب ترمیم

قصیدے کا آخری حصہ دعائیہ ہوتا ہے اس میں ممدوح کو بلند اقبال اور درازئی عمر کی دعا دی جاتی ہے۔ دعا قصیدے میں نازک مقام ہے اور قصیدے کی کامیابی کا

دعائیہ ترمیم

انحصار زیادہ تر دعا پر ہی ہوتا ہے۔

تشبیہ ترمیم

क़सीदे का पहला हिस्सा तशबीब कहलाता है इसमें शायर इश्क आशिकी की बातें

गुरेज़ तرمیم

शबाब जवानी के किस्से और फ़िज़ा की रंगिनी का हाल बयान करता।

मद्दह तرمیم

तशबीब के बाद क़सीदे में गुरेज की मंजिल आती है। गुरेज की यह खूबी करार दी गई है कि तशबीब के बाद ममदूह (जिसकी प्रशंसा की जा रही है) का जिक्र निहायत ही फित्री (प्राकृतिक मन) और मौजू तरीके से किया जाए यानी बयान में एक फित्री मुनासबत तसलसुल (निरंतरता) और रब्त (सम्पर्क) कायम रहे।

हुस्न तलब तرمیم

कसीदे का सबसे जरूरी अंश मद्दह सराई है। और इसी पर कसीदे की बुनियाद होती है फारसी उर्दू में मद्दह की गुणवत्ता खयाल रचनात्मक अतिशयोक्ति होता है।

दुआइया तرمیم

इस हिस्से में शायर अपना मकसद बयान करता है। इसके लिए शायर को ऐसी जादूगरी से काम लेना पड़ता है के मद्दह की तबीयत पर गिरां ना गुजरे।

कसीदे का आखिरी हिस्सा दुआइया होता है। इसमें मद्दह को ऊंचे पद और लंबी उम्र की दुआ दी जाती है दुआ कसीदे में नाजुक मक़ाम है और कसीदे की कामयाबी का दार व मदार ज्यादातर दुआ पर ही होता है।



मर्सिए की परिभाषा

مرثیہ کی تعریف

بچو اپنے محرم کے مہینے میں مرثیے تو ضرور سنیں ہوں گے جو لوگ مجلس میں واقع کربلا کو نظم کی شکل میں گاتے ہیں۔ آج میں آپ کو اس کے بارے میں بتا رہا ہوں۔ یہ لفظ مرثیہ عربی لفظ رثاء سے نکلا ہے جس کے معنی میت پر رونے کے ہیں۔ دراصل مرثیہ ایسی نظم کو کہتے ہیں جس میں رونے رلانے کا ہنر ہو۔ مرثیے میں اگر کسی خاص شخص کا تذکرہ نہ ہو اور وہ واقعات کربلا سے متعلق نہ ہو تو اسے تعزیتی نظم کہتے ہیں۔ واقعہ کربلا 61 ہجری میں ہوا جس میں امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت ہوئی۔ مرثیہ کے اجزاء:- مرثیہ کے آٹھ اجزاء ہیں چہرہ، سراپا، رخصت، آمد، رجز، رزم شہادت اور بین، رونا اشرف بیابانی کی نوسر بار کو مرثیے کا آغاز سمجھا جاتا ہے۔ شمالی ہند میں مرثیہ نگاری کا آغاز روشن علی کے عاشور نامے سے ہوتا ہے اس کے بعد فضل علی کی کربل کتھا کا نام آتا ہے۔ محمد رفیع سودا نے مرثیہ کو مسدس کی ہیئت عطا کی۔ دکن میں مرثیہ کی ابتدا شاہ اشرف بیابانی کے مرثیے نو سر بار سے ہوئی جب کہ شمالی ہند میں مرثیہ نگاری کا آغاز روشن علی کے عاشور نامے سے ہوتا ہے۔ مہینے میں مرثیہ نگاری کے عظیم شاعر مانے جاتے ہیں انہوں نے واقعہ کربلا کو آنکھوں کے سامنے پیش کر دیا ہے۔

بچو آپ نے موہرم کے مہینے میں مرثیہ تو جکرر سنے ہوں گے جو لوگ مجلس میں کربلا کے واقعات (محدثا) کو نظم کی شکل میں گاتے ہیں۔ آج میں آپ کو اس کے بارے میں بتا رہا ہوں۔ یہ لفظ مرثیہ عربی لفظ رثاء سے نکلا ہے جس کا معنی میت پر رونے کے ہیں۔ دراصل مرثیہ ایسی نظم کو کہتے ہیں جس میں رونے رلانے کا ہنر ہو۔ مرثیے میں اگر کسی خاص شخص کا تذکرہ نہ ہو اور وہ واقعات کربلا سے متعلق نہ ہو تو اسے تعزیتی نظم کہتے ہیں۔ واقعہ کربلا 61 ہجری میں ہوا جس میں امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت ہوئی۔ مرثیہ کے اجزاء:- مرثیہ کے آٹھ اجزاء ہیں چہرہ، سراپا، رخصت، آمد، رجز، رزم شہادت اور بین، رونا اشرف بیابانی کی نوسر بار کو مرثیے کا آغاز سمجھا جاتا ہے۔ شمالی ہند میں مرثیہ نگاری کا آغاز روشن علی کے عاشور نامے سے ہوتا ہے اس کے بعد فضل علی کی کربل کتھا کا نام آتا ہے۔ محمد رفیع سودا نے مرثیہ کو مسدس کی ہیئت عطا کی۔ دکن میں مرثیہ کی ابتدا شاہ اشرف بیابانی کے مرثیے نو سر بار سے ہوئی جب کہ شمالی ہند میں مرثیہ نگاری کا آغاز روشن علی کے عاشور نامے سے ہوتا ہے۔ مہینے میں مرثیہ نگاری کے عظیم شاعر مانے جاتے ہیں انہوں نے واقعہ کربلا کو آنکھوں کے سامنے پیش کر دیا ہے۔

अभ्यास कार्य
प्रश्न,, मर्सिए का क्या अर्थ है?
प्रश्न,, मर्सिए में कितनी सामग्री होती है?
प्रश्न,, उत्तरी हिंद में मर्सिए की शुरुआत किससे होती है?
प्रश्न,, मोहम्मद रफी सौदा ने मर्सिए को किसकी दिखावट दी?

نرتیب 80 کے جواب
(1) قلی قطب شاہ (2)
نظیر اکبر آبادی نے
(3) عبدالحلیم شرر
نے (4) پانچ:- پابند
نظم، طویل نظم،
معرا نظم، آزاد نظم،
نثری نظم- (5) Blank
verse (6) Free
verse

مشق
سوال.. مرثیے کے کیا معنی ہیں؟
سوال.. مرثیے کے کتنے اجزاء ہیں؟
سوال.. شمالی ہند میں مرثیہ کا آغاز کس سے ہوتا ہے؟
سوال.. محمد رفیع سودا نے مرثیہ کو کس کی ہیئت عطا کی؟



मिशन शिक्षण संवाद



कक्षा- 7th
विषय- उर्दू

पाठ-
साहित्य

पाठ्य क्रमांक -

84

प्रकरण-

मर्सिया

मरثیه چونکہ عربی زبان سے اردو میں داخل ہوا اس لیے اس میں اولیت واقعہ کربلا کو حاصل ہے۔ ہندوستان میں مغلوں کے دور میں شعراء نے بہت دل سوز مرثیے لکھے ہیں جو مرثیے لکھے جارہے ہیں وہ اپنے آپ میں ایک منفرد مقام رکھتے ہیں۔ واقعہ کربلا کا جو مقصد تھا وہ ان مرثیوں میں کہیں نظر نہیں آتا مگر دور جدید کے ایک معروف شاعر جناب فیض احمد فیض نے اس خالی جگہ کو پر کیا اور دور حاضر میں ایسے مرثیے لکھے جس نے نوجوان نسل کے اندر نہ صرف شہادت کا جذبہ پیدا کیا بلکہ ایک نیا انقلاب رونما کر دیا۔ واقعہ کربلا کو مدنظر رکھ کر موجودہ دور میں نیند کے خمار میں سوئی ہوئی قوم کو ان کے مرثیوں نے بیدار کیا اور کربلا کا جو اہم مقصد تھا وہ منظر عام پر لا کر اس خلا کو پر کیا جو سابقہ مرثیوں میں چلا آ رہا تھا۔ اس لیے فیض کو انقلابی شاعر کہا جاتا ہے حالانکہ ان کے مرثیوں کو نظم کے زمرے میں رکھا گیا ہے کیونکہ مرثیہ کہ جو اجزاء ہیں وہ ان کے مرثیوں میں نظر نہیں آتے مگر پھر بھی مرثیے کا ماخذ انہوں نے اپنے مرثیوں میں ادا کر کے ایک انقلاب ضرور برپا کیا ہے۔

مرسیا کیوں کہ اعرابی زبان سے اردو میں داخل ہوا اس لیے اس میں اولیت واقعہ کربلا کو حاصل ہے۔ ہندوستان میں مغلوں کے دور میں شاعروں نے بہت دل سوز مرثیے لکھے ہیں جو مرثیے لکھے جارہے ہیں وہ اپنے آپ میں ایک منفرد مقام رکھتے ہیں۔ واقعہ کربلا کا جو مقصد تھا وہ ان مرثیوں میں کہیں نظر نہیں آتا مگر دور جدید کے ایک معروف شاعر جناب فیض احمد فیض نے اس خالی جگہ کو پر کیا اور دور میں ایسے مرثیے لکھے جس نے نوجوان نسل کے اندر نہ صرف شہادت کا جذبہ پیدا کیا بلکہ ایک نیا انقلاب رونما کر دیا۔ واقعہ کربلا کو مدنظر رکھ کر موجودہ دور میں نیند کے خمار میں سوئی ہوئی قوم کو ان کے مرثیوں نے بیدار کیا اور کربلا کا جو اہم مقصد تھا وہ منظر عام پر لا کر اس خلا کو پر کیا جو سابقہ مرثیوں میں چلا آ رہا تھا۔ اس لیے فیض کو انقلابی شاعر کہا جاتا ہے حالانکہ ان کے مرثیوں کو نظم کے زمرے میں رکھا گیا ہے کیونکہ مرثیہ کہ جو اجزاء ہیں وہ ان کے مرثیوں میں نظر نہیں آتے مگر پھر بھی مرثیے کا ماخذ انہوں نے اپنے مرثیوں میں ادا کر کے ایک انقلاب ضرور برپا کیا ہے۔

अभ्यास कार्य



ترتیب 83 کے جواب

प्रश्न,, मर्सिए किस घटना को विषय बनाकर लिखा जाता है?

(1) मरने वाले पर

रुने के (2) आँ

(3) रोशन علی के

عاشور نامے سے

(4) مسدس کی

प्रश्न,, फ़ैज़ को कैसा शायर कहा जाता है?

प्रश्न,, फ़ैज़ के मर्सियों ने क़ौम में

क्या जज़बा पैदा किया?

क्रमानंक 83 के उत्तर

(1) मरने वाले पर रने

के (2) आठ (3) रोशन

अली के आशूर नामे से

(4) मसदस की

प्रश्न,, फ़ैज़ के मर्सियों को किस श्रेणी में रखा जाता है?



مشق

سوال.. مرثیه میں کس واقعہ کو موضوع بنایا جاتا ہے؟

سوال.. فیض کو کیسا شاعر کہا جاتا ہے؟

سوال.. فیض کے مرثیوں نے

قوم میں کیا جذبہ پیدا کر دیا؟

سوال.. فیض کے مرثیوں کو

کس زمرے میں رکھا جاتا ہے؟



गीत के बारे में

गीत کی تعریف

بچو اس سے پہلے کہ ہم اس گیت کو پڑھیں میں ضروری سمجھتا ہوں کہ آپ کو گیت کی تعریف بتا دی جائے گیت کیا ہوتا ہے گیت کسے کہتے ہیں۔ لغت میں گیت سے مراد راگ سرور اور نغمہ کے ہیں۔ اس لیے گیت کو گانے کی چیز سمجھا جاتا ہے اس کا گہرا تعلق موسیقی سے ہے اس لیے اس میں سر اور تال کو خاص اہمیت حاصل ہے۔ گیت میں جذبات احساسات اور خاص کر بجز و فراق کو بڑے واضح انداز میں بیان کیا جاتا ہے۔ موسیقی میں سروں کی ایک ایسی لہر ہوتی ہے جس میں انسانی آواز بھی شامل ہو اور وہ گیت کے بول گانے کے بول عام طور شاعری پر مشتمل ہوتے ہیں اور ان کو ادا کرتے ہوئے سر اور تال کا تمام احترام ملحوظ خاطر رکھا جاتا ہے۔ گیت کو یا تو ایک ہی گلوکار گاتا ہے یا پھر مرکزی گلوکار کے ساتھ کئی دوسری آوازیں بھی شامل ہوتی ہیں۔ گیت کے کئی قسمیں ہیں جو کہ شاعری آواز اور خطوں کی بنیاد پر درجہ بندی میں ڈالی جاتی ہیں۔ لطیف گیت، کلاسیکی گیت، یا پھر لوک گیت بھی اس کے علاوہ گیتوں کی درجہ بندی موسیقی اور گیت کے مقصد کے تحت بھی کی جاتی ہے جیسے ریپ، جاز، کنٹری وغیرہ۔

بچوں سے پہلے کہ ہم اس گیت کو پڑھنے میں आवश्यक समझता हूँ कि आपको गीत की बारे में बता दिया जाए। गीत क्या होता है? गीत किसे कहते हैं? शब्दकोश में गीत से मुराद राग, सुरर और नगमे के हैं इसलिए गीत को गाने की चीज समझा जाता है। इसका गहरा संबंध संगीत से है इसलिए इसमें सुर और ताल को खास अहमियत हासिल है। गीत में जज्बात, एहसासात और खासकर फिराक यानी जुदाई को बड़े दर्द भरे अंदाज में बयान किया जाता है। संगीत में सुरों की एक ऐसी लहर होती है जिसमें इंसानी आवाज भी शामिल हो और वह गीत के बोल गाए। गीत के बोल आमतौर पर शायरी पर आधारित होते हैं और उनको अदा करते हुए सुर और ताल का पूरा खयाल और ध्यान रखा जाता है गीत को या तो एक ही गायक गाता है या फिर केंद्रित गायकों के साथ कई दूसरी आवाजें भी शामिल होती हैं गीत की कई प्रकार हैं जो के शायरी आवाज और खतों की बुनियाद पर दर्जा बंदी में डाली जाती हैं बारीक गीत, क्लासिकी गीत, पॉप गीत, या फिर लोकगीत इसके अलावा गीतों की दर्जा बंदी संगीत की तरह और गीत के मकसद के तहत भी की जाती है जैसे नृत्य, रेप, जॉरज़, कंट्री वगैरा।

अभ्यास कार्य

शब्द = अर्थ

मौसीक़ी = संगीत

नगमा = गीत

वालिहाना = दर्द भरे अंदाज में

मुशतमिल = शामिल

मलहूज़ = ध्यान में

गुलूकार = गायक

प्रश्न,, शब्द कोष में गीत का क्या अर्थ है?

प्रश्न,, गीत का गहरा संबंध किस से है?

प्रश्न,, गीत कितने प्रकार के होते हैं?



مشق

الفاظ = معنی

موسیقی = سنگیت

نغمہ = گیت

فراق = جدائی

والہانہ = دردمندانہ

مشمول = شامل

ملحوظ خاطر = ذہن نشین رکھنا

گلوکار = گانے والے

سوال.. لغت میں گیت کے کیا معنی ہیں؟

سوال.. گیت کا گہرا تعلق کس سے ہے؟

سوال.. گیت کی کتنی قسمیں ہیں؟



मिशन शिक्षण संवाद



विषय-

कक्षा- 7th
उर्दू

पाठ-
गीत

पाठ्य क्रमांक -

74

प्रकरण-

गीत

بچوں کل میں نے آپ کو گیت کے بارے میں تفصیل سے بتایا تھا کہ گیت کسے کہتے ہیں اور اس کی کتنی قسمیں ہوتی ہیں۔ چلو آج اس گیت کو پڑھتے ہیں اور اسے اپنی آواز میں گانے کی طرح گانے کی کوشش کریں گے۔ یہ بات یاد رکھیں کہ اردو شاعری میں گیت نے دکنی شاعری کے اثرات کے تحت رواج پایا۔ محمد ابراہیم شاہ ثانی جگتگرو نے گیت کو اپنے زمانے میں عام کیا۔ گیت میں ہندوستانی تہذیب اور معاشرے کے اچھے نمونے ملتے ہیں۔ یہ گیت جو آپ کے سبق میں دیا ہے اس کو راجندر کرشن نے لکھا ہے۔

بچوں ویسے آپ آج کل نئے طرز کے گانے سنتے ہیں وہ سب گیت کا ہی روپ ہوتے ہیں۔ آپ نے شادی وغیرہ میں بھی نغمہ سنے ہوں گے انہیں لوک گیت کہتے ہیں جو ہر علاقے کی تہذیب کی نمائندگی کرتے ہیں مختلف جگہوں پر مختلف بولیوں میں خوشی اور غم کے الگ الگ گیت گائے جاتے ہیں تو چلو گیت گاتے ہیں۔



یگلا سونا دور گگن پر:- پھیل رہے ہیں شام کے سائے
خاموشی کچھ بول رہی ہے:- بھید انوکھے کھول رہی ہے۔
سے لے کر

ایک ہی جلوہ شام-سویرے:- بھیس بدل کر سامنے آئے

بچوں کال مینے आपको گیت کے بارے میں ویستار سے بتایا تھا کی گیت کیسے کہتے ہیں اور اسکی کیتنے پرکار ہوتے ہیں چلو آج اس گیت کو پڑھتے ہیں اور اسے اپنی آواز میں گانے کی کوشش کرتے ہیں یہ بات یاد رکھو کی اردو شاعری میں گیت نے دکنی شاعری کے اپراکھ کے تھت ہاآپا یا موھممد ابراھیم شاھ ساھنی آگتگرو نے گیت کو اپنے آمانے میں آام کیا گیت میں ہیندوستانی تھآجیب اور سماآ کے اآھے نمونے میلتے ہیں یہ گیت آو آپکے پاٹ میں دیا ہے اسکو راجندر کھشن نے لیکھا ہے بچوں ویسے آپ آجکل نئے نئے طرز کے گانے سونتے ہیں وہ سب گیت کا ہی روپ ہوتے ہیں آپ نے شادی وغیرہ میں بھی نغمہ سنے ہوں گے انہیں لوک گیت کہتے ہیں جو ہر علاقے کی تہذیب کی نمائندگی کرتے ہیں مختلف جگہوں پر مختلف بولیوں میں خوشی اور غم کے الگ الگ گیت گائے جاتے ہیں تو چلو گیت گاتے ہیں۔

پہلا سونا دور گگن پر :-
پہل رہے ہیں شام کے ساہ
خاموشی کچھ بول رہی ہے :-
بھد انوکھے کھول رہی ہے
سے لیکر
آک ہی آلوا شام سہیرے :-
بھب بادلکر سامنے آآہ

بچوں اس گیت میں راجندر کرشن آی شام کا منظر بیان کر رہے ہیں
آپ لوگ بھی روز شام کو ایسا منظر دیکھتے ہونگے اچھے گیت کار کی
تعریف ہی یہ ہوتی ہے کہ وہ اپنے الفاظ سے منظر ایسے بیان کرتا ہے
آیسے ہم وہی ہوں سارے منظر ہماری آنکھوں کے سامنے تیرنے لگتے
ہیں۔ شام کی خاموشی کچھ بول رہی ہے نظارے بادلوں میں چھپ
رہے ہیں آسمان پر رنگین ستارے روشن ہونے آریے ہیں اس خوبصورت
منظر کو کس نے سجایا کوئی اس بات کو نہیں آانتا روزانہ ایک ہی
منظر مختلف انداز سے سامنے آتا رہتا ہے۔

تشریح

ساراংশ

بچوں اس گیت میں راجندر کرشن آی شام کا منظر بیان کر رہے ہیں آپ لوگ بھی روز شام کو ایسا منظر دیکھتے ہوں گے اچھے گیتکار کی تारीف ہی یہ ہوتی ہے کہ وہ اپنے الفاظ سے منظر ایسے بیان کرتا ہے جیسے ہم وہی ہوں سارے منظر ہماری آنکھوں کے سامنے تیرنے لگتے ہیں۔ شام کی خاموشی کچھ بول رہی ہے نآارے بادلوں میں آھپ رہے ہیں آاسمان پر رنگین سیتارے روشن ہونے آا رہے ہیں اس خوبصورت منظر کو کس نے سجایا کوئی اس بات کو نہیں آانتا روزانہ ایک ہی منظر مختلف انداز سے سامنے آتا رہتا ہے۔

(1) رآگ، سुरूر اور نآاما (2) سآگیت سے

(3) گیت کے کآی پرکار ہیں۔ لآیآ گیت، کلاسیکی گیت، پآپ گیت

گیت، لوک گیت آآدی

(1) رآگ، سرور اور نغمہ۔ (2) موسیقی سے۔

(3) لطیف گیت، کلاسیکی گیت، پآپ گیت، لوک گیت

وغیرہ



بچوں کل آپ گزل کے بارے میں تو سمجھ ہی گئے ہونگے۔ کل جو چند اشعار گزل کے آپ کو پڑھانے تھے وہ گزل ناصر کاظمی صاحب کی لکھی ہوئی ہے۔ آپ ان اشعار کو غور سے دیکھیے اس کا ہر شعر ایک الگ مضمون لیے ہوئے ہے پہلا شعر ہم قافیہ ہم ردیف ہے جبکہ دوسرے شعر کا مصرع ثانی پہلے شعر کے قافیے سے ملتا ہے آخری شعر میں شاعر نے اپنا تخلص لکھا ہے اس لیے یہ مقطع کہلاتا ہے۔ بند و پاک میں غزلوں کو گلوکار بھی بہت شوق سے گاتے ہیں اور سامعین بھی بڑے غور سے سنتے ہیں اور اس پر داد دیتے ہیں۔ مشاعروں میں زیادہ تر غزلیں پڑھی جاتی ہیں۔ بند و پاک میں عظیم شاعر بھی ہوئے جو اردو ادب میں اپنا منفرد مقام رکھتے ہیں۔ گزل میر تقی میر سے ہوتی ہوئی غالب، داغ، اقبال، پروین شاکر تک اپنا ایک طویل سفر طے کر کے ہم تک پہنچی ہے فلموں میں بھی غزلیں گائی جاتی ہیں۔ آجکل غزلوں میں اس کے علاوہ حالات حاضرہ پر بھی طبع آزمائی کی جا رہی ہے اور کسی حد تک کامیاب بھی ہے۔ گلوکاروں میں معروف نام مہندی حسن، غلام علی، جگجیت سنگھ، چترا سنگھ وغیرہ مشہور گزل گلوکار ہیں۔

بچوں کل آپ گزل کے بارے میں تو سمجھ ہی گئے ہوں گے۔ کل جو چند اشعار گزل کے آپ کو پڑھانے تھے وہ گزل ناصر کاظمی صاحب کی لکھی ہوئی ہے۔ آپ ان اشعار کو غور سے دیکھیے اس کا ہر شعر ایک الگ مضمون لیے ہوئے ہے پہلا شعر ہم قافیہ ہم ردیف ہے جبکہ دوسرے شعر کا مصرع ثانی پہلے شعر کے قافیے سے ملتا ہے آخری شعر میں شاعر نے اپنا تخلص لکھا ہے اس لیے یہ مقطع کہلاتا ہے۔ بند و پاک میں غزلوں کو گلوکار بھی بہت شوق سے گاتے ہیں اور سامعین بھی بڑے غور سے سنتے ہیں اور اس پر داد دیتے ہیں۔ مشاعروں میں زیادہ تر غزلیں پڑھی جاتی ہیں۔ بند و پاک میں عظیم شاعر بھی ہوئے جو اردو ادب میں اپنا منفرد مقام رکھتے ہیں۔ گزل میر تقی میر سے ہوتی ہوئی غالب، داغ، اقبال، پروین شاکر تک اپنا ایک طویل سفر طے کر کے ہم تک پہنچی ہے فلموں میں بھی غزلیں گائی جاتی ہیں۔ آجکل غزلوں میں اس کے علاوہ حالات حاضرہ پر بھی طبع آزمائی کی جا رہی ہے اور کسی حد تک کامیاب بھی ہے۔ گلوکاروں میں معروف نام مہندی حسن، غلام علی، جگجیت سنگھ، چترا سنگھ وغیرہ مشہور گزل گلوکار ہیں۔

بچوں کل آپ گزل کے بارے میں تو سمجھ ہی گئے ہوں گے۔ کل جو چند اشعار گزل کے آپ کو پڑھانے تھے وہ گزل ناصر کاظمی صاحب کی لکھی ہوئی ہے۔ آپ ان اشعار کو غور سے دیکھیے اس کا ہر شعر ایک الگ مضمون لیے ہوئے ہے پہلا شعر ہم قافیہ ہم ردیف ہے جبکہ دوسرے شعر کا مصرع ثانی پہلے شعر کے قافیے سے ملتا ہے آخری شعر میں شاعر نے اپنا تخلص لکھا ہے اس لیے یہ مقطع کہلاتا ہے۔ بند و پاک میں غزلوں کو گلوکار بھی بہت شوق سے گاتے ہیں اور سامعین بھی بڑے غور سے سنتے ہیں اور اس پر داد دیتے ہیں۔ مشاعروں میں زیادہ تر غزلیں پڑھی جاتی ہیں۔ بند و پاک میں عظیم شاعر بھی ہوئے جو اردو ادب میں اپنا منفرد مقام رکھتے ہیں۔ گزل میر تقی میر سے ہوتی ہوئی غالب، داغ، اقبال، پروین شاکر تک اپنا ایک طویل سفر طے کر کے ہم تک پہنچی ہے فلموں میں بھی غزلیں گائی جاتی ہیں۔ آجکل غزلوں میں اس کے علاوہ حالات حاضرہ پر بھی طبع آزمائی کی جا رہی ہے اور کسی حد تک کامیاب بھی ہے۔ گلوکاروں میں معروف نام مہندی حسن، غلام علی، جگجیت سنگھ، چترا سنگھ وغیرہ مشہور گزل گلوکار ہیں۔

اہیاس کاری

- (1) بچوں آپ بھی آج کے شاعروں کی تہیوں ڈکھا کیجیے۔
- (2) آپ کس گایک کو پسند کرتے ہیں۔ انکے بارے میں دس لائن لکھیے۔
- (3) اپنے پسندیدا شایر کی گزل یاد کیجیے۔



(1) بچوں آپ جدید دور کے شعراء کی تصاویر جمع کریں۔

(2) آپ کس گزل گلوکار کو پسند کرتے ہیں۔

(3) اپنے پسندیدا شاعر کی گزل یاد کریں۔



मिशन शिक्षण संवाद



विषय-

कक्षा- 7th

उर्दू

पाठ-

पाठ्य क्रमांक -

साहित्य

78

प्रकरण-

नज़्म

नज़्म का परिचय

नظم کا تعارف

بجو اردو ادب کی دو اصناف ہیں، اردو نثر اور اردو نظم یعنی اردو شاعری۔ اردو نظم کی کئی قسمیں ہیں جو میں نے آپ کو ادب والے سبق میں بتائی تھیں۔ ان اصناف میں سب سے مشہور صنف غزل ہے جس کے بارے میں ہم پہلے پڑھ چکے ہیں مگر اردو شاعری کی سب سے وسیع قسم اردو نظم ہے اردو نظم میں بہت زیادہ تجربے کے گئے ہیں اور یہی اس کی وسعت کی دلیل ہے نظیر اکبر آبادی، الطاف حسین حالی، اور اقبال، جوش جیسے مختلف اور عظیم شعرا نے اس پر طبع آزمائی کی ہے۔

تعریف:-

نظم شاعری کی ایک ایسی قسم ہے جو کسی ایک عنوان کے تحت کسی ایک موضوع پر لکھی جاتی ہے نظم کی ایک خاص بات یہ ہے کہ اس بیت کی کوئی قید نہیں ہے یہ غزل کی طرح بحر اور قافیہ کی پابند بھی ہوتی ہے اور اس سے آزاد بھی اس میں مضامین کی وسعت ہوتی ہے۔ نظم زندگی کے کسی بھی موضوع پر کہی جاسکتی ہے جیسے مثال کے طور پر علامہ اقبال کی مشہور نظم شکوہ جواب شکوہ ہے اس نظم میں اقبال نے مسلمانوں کی ابتر حالت کا شکوہ خدا سے کیا ہے اور خدا کی طرف سے اس کا جواب اور حل بتانے کی مکمل کوشش کی ہے۔ ساحر لدھیانوی کی نظم متاع غیر شادی شدہ عورت سے اپنی محبت کا بھرپور اظہار کیا ہے۔ حالی کی مسدس یہ نظم حالی کی معروف نظم ہے جو مسدس کی شکل میں لکھی گئی ہے اس نظم میں حالی نے مسلمانوں میں موجودہ شرک سے بیزاری اختیار کرنے کی ترغیب دی ہے۔

बच्चो उर्दू अदब की दो लिंगे हैं उर्दू गद्यांश और उर्दू पद्यांश। यानी उर्दू शायरी। फिर उर्दू नज्म की कई किस्में हैं जो मैंने आपको अदब वाले पाठ में बताई थीं। इन लिंगों में सबसे मशहूर लिंग गज़ल है जिसके बारे में हम पहले पढ़ चुके हैं। मगर उर्दू शायरी की सबसे व्यापक किस्म उर्दू नज़्म है उर्दू नज़्म में बहुत ज्यादा तजुर्बे किए गए हैं और यही उसके विस्तार की दलील है नजीर अकबराबादी अलताफ हुसैन हाली, और इक़बाल, जोश मलीहाबादी, जैसे मुख्तलिफ और उच्च शायरों ने इस

परिभाषा:-

नज़्म शायरी की एक ऐसी किस्म है जो किसी एक शीर्षक के तहत किसी एक विषय पर लिखी जाती है। नज़्म की एक खास बात यह है कि इस में दिखावटी कोई क़ैद नहीं है यह गज़ल की तरह तुकबंदी और बहर से आजाद भी होती है और पाबंद भी इसमें मज़ामीन की व्यापकता भी होती है नज़्म जिंदगी के किसी भी शीर्षक पर कही जा सकती है जैसे मिसाल के तौर पर इकबाल की मशहूर नज़्म शिकवा जवाब ए शिकवा इस नज़्म में इकबाल ने मुसलमानों की बदतर हालत का शिकवा खुदा से किया है और फिर खुदा की तरफ से उसका जवाब और हल बताने की मुकम्मल कोशिश की है। साहिर लुधियानवी की नज़्म मता ए गौर है इसमें साहिर ने किसी शादीशुदा औरत से अपनी मोहब्बत का भरपूर इजहार किया है। हाली की मसदस यह नज़्म हाली की मशहूर नज़्म है जो मसदस की शकल में लिखी गई है इसमें हाली ने मुसलमानों में वर्तमान में शिरक (अनेकेश्वरवाद) से बेचारी अख्तियार करने की तरगीब (प्रेरणा) दी है।



इरतका (क्रयांगत उन्नति)

ارتقاء

بچو اب ہم آپ کو بتاتے ہیں کہ اس صنف کا ارتقاء کب سے ہوا۔ اردو نظم کی ابتدائی مثالیں قلی قطب شاہ کے دیوان میں مل جاتی ہیں بلکہ اردو ادب کا سب سے پہلا شہ پارہ قدم راؤ یدم راؤ دراصل اردو نظم کی ہی ایک قسم ہے۔ نظیر اکبر آبادی نے نظم کو بام عروج عطا کیا انہوں نے مختلف موضوعات پر بیشتر نظمیں لکھی ہیں۔ محمد حسین آزاد اور حالی نے اردو نظم میں مغربیت کا تعارف کرایا اور یوں اردو نظم میں جدت پسندی کی ابتدا ہوئی۔ جس سے موضوعات میں وسعت پیدا ہوئی اور اب ملکی حالات اجتماعی خیالات احساسات پر نظمیں لکھی جانے لگیں۔ اکبر الہ آبادی اور چکبست کا دور آیا تو انہوں نے اردو نظم کے ارتقاء میں نمایاں کردار ادا کیا، مگر اردو نظم کی ہیئت ابھی تک تبدیل نہیں ہوئی تھی۔ اردو نظم کی پہلی کوشش عبدالحمید شرر کے ذریعے ہوئی جنہوں نے نظم معرا کو رائج کرنے کی کوشش کی۔

پابند نظم

اقسام:- ہیئت کی بنیاد پر اردو نظم کی اقسام مندرجہ ذیل ہیں۔
پابند نظم، طویل نظم، معرا نظم، آزاد نظم، پابند نظم غزل کی طرح بحر و قافیہ کی پابند ہوتی ہے۔
نثری نظم، طویل نظم، قصیدہ مرثیہ یا مثنوی طویل نظم کی مثالیں ہیں جیسے اقبال کی شکوہ جواب شکوہ، ساحر کی اے شریف انسانوں وغیرہ۔

معرا نظم

معرا نظم کسی مخصوص بحر میں کہی جاتی ہے مگر اس میں قافیہ نہیں ہوتا ہے اس کو انگریزی میں (Blank verse) کہتے ہیں۔

آزاد نظم

آزاد نظم کو انگریزی میں (free verse) کہتے ہیں۔ پہلی مرتبہ فرانس غیرمساوی مصرعوں پر لکھی گئی ایک نظم تھی۔

نثری نظم

یہ صنف مکمل آزاد صنف ہے اور اس میں وزن ردیف اور قافیہ کی پابندی نہیں کی جاتی ہے لیکن شعریت کا عنصر ضرور موجود ہوتا ہے اسی لئے اسے نظم کے درجے میں لکھا جاتا ہے۔

بچو اب ہم آپ کو بتاتے ہیں کہ اس صنف کا ارتقاء کب سے ہوا۔ اردو نظم کی ابتدائی مثالیں قلی قطب شاہ کے دیوان میں مل جاتی ہیں بلکہ اردو ادب کا سب سے پہلا شہ پارہ قدم راؤ یدم راؤ دراصل اردو نظم کی ہی ایک قسم ہے۔ نظیر اکبر آبادی نے نظم کو بام عروج عطا کیا انہوں نے مختلف موضوعات پر بیشتر نظمیں لکھی ہیں۔ محمد حسین آزاد اور حالی نے اردو نظم میں مغربیت کا تعارف کرایا اور یوں اردو نظم میں جدت پسندی کی ابتدا ہوئی۔ جس سے موضوعات میں وسعت پیدا ہوئی اور اب ملکی حالات اجتماعی خیالات احساسات پر نظمیں لکھی جانے لگیں۔ اکبر الہ آبادی اور چکبست کا دور آیا تو انہوں نے اردو نظم کے ارتقاء میں نمایاں کردار ادا کیا، مگر اردو نظم کی ہیئت ابھی تک تبدیل نہیں ہوئی تھی۔ اردو نظم کی پہلی کوشش عبدالحمید شرر کے ذریعے ہوئی جنہوں نے نظم معرا کو رائج کرنے کی کوشش کی۔

پابند نّژم، تّویل نّژم، مآرا نّژم، آآآاد نّژم، نآسری نّژم

پابند نّژم:- پابند نّژم گّآل کی तरह بھر و کّافریا کی پابند ہوتی ہے۔

تّویل نّژم:- کّسیدا، مّسییا، یا مّسنوی تّویل نّژم کی میسالے ہّے۔ جےسے اّکبال کی شیکوا جواآ

آ شیکوا، ساآیر کی آ شریف اّسانوں آادید۔

مآرا نّژم:- مآرا نّژم کی آاس بھر مّ کھی آاتی ہے مگر اّسمم کّافریا نّھی ہوتا۔ اّسکو آنگریجی مّم (blank verse) کھتے ہّے

آآآاد نّژم:- آآآاد نّژم کو آنگریجی مّم (free verse) کھتے ہّے اور پہلی بار فرانس اور بربابری میسرّوں پر لیآی گئی اک نّژم آھی۔

نآسری نّژم:- यह लिंग पूरी आज़ाद लिंग है और इसमें वज़न, रदीफ़ और क़ाफ़िया की पابंदी नहीं की जाती, लेकिन शरियत

का मज़ा अवश्य होता है इसीलिए इसे नज़्म की श्रेणी में लिखा जाता है।



بچو آج ہم پچھلے سبق کی مشق کریں گے۔

बच्चो आज हम अभ्यास कार्य करेंगे।

مندرجہ ذیل شاعروں کو پہچان کر ان کے نام ان کی تصویر کے آگے لکھیے
निम्नलिखित शायरों को पहचान कर उनके नाम उनकी तस्वीर के आगे लिखिए।



بچو ان شاعروں میں سب سے زیادہ آپ کو کس کی نظمیں اچھی لگتی ہیں۔

बच्चों इन शायरों में सबसे ज्यादा आपको किसकी नज़में अच्छी लगती हैं।

سوال.. اردو نظم کی ابتدائی مثالیں کس کے دیوان سے ملتی ہیں؟

سوال.. نظم کو بام عروج پر کس نے پہنچایا؟

سوال.. اردو نظم کی ہیئت بدلنے کی کوشش سب سے پہلے کس نے کی؟

سوال.. اردو نظم کی کتنی اقسام ہیں ان کے نام لکھیے۔

سوال.. معرا نظم کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟

سوال.. آزاد نظم کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟

پرسن,, उर्दू नज़म की शुरुआती मिसालें किसके दीवान से मिलती हैं?

پرسن,, नज़म को उन्नति के पथ पर किसने पहुंचाया?

پرسن,, उर्दू नज़म की दिखावट बदलने की कोशिश सबसे पहले किसने की?

پرسن,, उर्दू नज़म कितने प्रकार की होती है उनके नाम लिखिए।

پرسن,, मअरा नज़म को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?

پرسن,, آज़اد نज़م کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟



पाठ-

पाठ्य क्रमांक -

साहित्य

80

प्रकरण-

अभ्यास

بچو آج ہم پچھلے سبق کی مشق کریں گے۔

बच्चो आज हम अभ्यास कार्य करेंगे।

مندرجہ ذیل شاعروں کو پہچان کر ان کے نام ان کی تصویر کے آگے لکھیے
निम्नलिखित शायरों को पहचान कर उनके नाम उनकी तस्वीर के आगे लिखिए।



بچو ان شاعروں میں سے زیادہ آپ کو کس کی نظمیں اچھی لگتی ہیں۔

बच्चों इन शायरों में सबसे ज्यादा आपको किसकी नज़में अच्छी लगती हैं।

سوال.. اردو نظم کی ابتدائی مثالیں کس کے دیوان سے ملتی ہیں؟

سوال.. نظم کو بام عروج پر کس نے پہنچایا؟

سوال.. اردو نظم کی ہیئت بدلنے کی کوشش سب سے پہلے کس نے کی؟

سوال.. اردو نظم کی کتنی اقسام ہیں ان کے نام لکھیے۔

سوال.. معرا نظم کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟

سوال.. آزاد نظم کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟

پرسن,, उर्दू नज़म की शुरुआती मिसालें किसके दीवान से मिलती हैं?

پرسن,, नज़म को उन्नति के पथ पर किसने पहुंचाया?

پرسن,, उर्दू नज़म की दिखावट बदलने की कोशिश सबसे पहले किसने की?

پرسن,, उर्दू नज़म कितने प्रकार की होती है उनके नाम लिखिए।

پرسن,, मअرا नज़म को انگریزی में क्या कहते हैं?

پرسن,, آज़اد نज़م کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں؟



बچो کل میں نے آپ کو قصیدے کے بارے میں بتایا تھا کہ اردو ادب میں شاعری کی صنف قصیدہ بھی ایک بہت اہم مقام رکھتا ہے۔ کل غالب کا جو قصیدہ میں نے پڑھ کر آپ کو سنایا اس کے مشکل الفاظ کے معنی بھی میں نے بتائے تھے جس سے آپ کو قصیدے کے اشعار سمجھ میں آ گئے ہوں گے۔ آگے آج میں آپ کو قصیدے کی اقسام کے بارے میں تفصیل سے بتاؤں گا۔ تو قصیدے کی قسمیں مندرجہ ذیل ہیں۔

बच्चों कल मैंने आपको क़सीदे के बारे में बताया था के उर्दू अदब में शायरी की लिंग कसीदा भी एक बहुत अहम दर्जा रखता है। कल ग़ालिब का जो क़सीदा मैंने पढ़कर आपको सुनाया उसके मुश्किल शब्दों के मायने भी मैंने बताए थे जिससे आपको कसीदे के यह शेर समझ में आ गए होंगे।

आज मैं आपको कसीदे के प्रकार के बारे में विस्तार से बताऊंगा तो कसीदे के प्रकार निम्नलिखित हैं:-

قصیدے کا پہلا حصہ تشبیب کہلاتا ہے اس میں شاعر عشق وعاشقی کی باتیں شباب وجوانی کے قصے اور فضا کی رنگینی کا حل بیان کرتا ہے۔

تشبیب ترمیم

تشبیب کے بعد قصیدے میں گریز کی منزل آتی ہے گریز کی یہ خوبی قرار دی گئی ہے کہ تشبیب کے بعد ممدوح کا ذکر نہایت کی فطری اور موضوع طریقے سے کیا جائے یعنی بیان میں ایک فطری مناسبت تسلسل اور ربط قائم رہے۔

گریز ترمیم

قصیدے کا سب سے ضروری جزو مدح سرائی ہے اور اسی پر قصیدے کی بنیاد ہوتی ہے فارسی اردو میں مدح کا معیار خیال آفرینی اور مبالغہ ہوتا ہے۔

مدح ترمیم

اس حصہ میں شاعر اپنا مقصد بیان کرتا ہے اس کے لیے شاعر کو ایسی سحر بیانی سے کام لینا پڑتا ہے کہ ممدوح کی طبیعت پر گراں نہ گزرے۔

حسن طلب ترمیم

قصیدے کا آخری حصہ دعائیہ ہوتا ہے اس میں ممدوح کو بلند اقبال اور درازئی عمر کی دعا دی جاتی ہے۔ دعا قصیدے میں نازک مقام ہے اور قصیدے کی کامیابی کا

دعائیہ ترمیم

تشبیہ ترمیم

انحصار زیادہ تر دعا پر ہی ہوتا ہے۔
کّسیدے کا پہلا हिस्सा तशबीब कहलाता है इसमें शायर इश्क आशिकी की बातें शबाब جوانی के किस्से और फ़िज़ा की रंगिनी का हाल बयान करता।

गुरेज़ तرمیم

तशबीब के बाद क़सीदे में गुरेज की मंजिल आती है। गुरेज की यह खूबी करार दी गई है कि तशबीब के बाद ममदूह (जिसकी प्रशंसा की जा रही है) का जिक्र निहायत ही फ़ित्री (प्राकृतिक मन) और मौजू तरीके से किया जाए यानी बयान में एक फ़ितरी मुनासबत तसलसुल (निरंतरता) और रब्त (सम्पर्क) कायम रहे।

मदह तرمیم

कसीदे का सबसे जरूरी अंश मदह सराई है। और इसी पर कसीदे की बुनियाद होती है फारसी उर्दू में मदह की गुणवत्ता खयाल रचनात्मक अतिशयोक्ति होता है।

हुस्न तलब तرمیم

इस हिस्से में शायर अपना मकसद बयान करता है। इसके लिए शायर को ऐसी जादूगरी से काम लेना पड़ता है के मदह की तबीयत पर गिरां ना गुजरे।

दुआइया तرمیم

कसीदे का आखिरी हिस्सा दुआइया होता है। इसमें मदह को ऊंचे पद और लंबी उम्र की दुआ दी जाती है दुआ कसीदे में नाजुक मक़ाम है और कसीदे की कामयाबी का दार व मदार ज्यादातर दुआ पर ही होता है।



मर्सिए की परिभाषा

مرثیہ کی تعریف

بچو اپنے محرم کے مہینے میں مرثیے تو ضرور سنیں ہوں گے جو لوگ مجلس میں واقع کربلا کو نظم کی شکل میں گاتے ہیں۔ آج میں آپ کو اس کے بارے میں بتا رہا ہوں۔ یہ لفظ مرثیہ عربی لفظ رثاء سے نکلا ہے جس کے معنی میت پر رونے کے ہیں۔ دراصل مرثیہ ایسی نظم کو کہتے ہیں جس میں رونے رلانے کا ہنر ہو۔ مرثیے میں اگر کسی خاص شخص کا تذکرہ نہ ہو اور وہ واقعات کربلا سے متعلق نہ ہو تو اسے تعزیتی نظم کہتے ہیں۔ واقعہ کربلا 61 ہجری میں ہوا جس میں امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت ہوئی۔ مرثیہ کے اجزاء:- مرثیہ کے آٹھ اجزاء ہیں چہرہ، سراپا، رخصت، آمد، رجز، رزم شہادت اور بین، رونا اشرف بیابانی کی نوسر بار کو مرثیے کا آغاز سمجھا جاتا ہے۔ شمالی ہند میں مرثیہ نگاری کا آغاز روشن علی کے عاشور نامے سے ہوتا ہے اس کے بعد فضل علی کی کربل کتھا کا نام آتا ہے۔ محمد رفیع سودا نے مرثیہ کو مسدس کی ہیئت عطا کی۔ دکن میں مرثیہ کی ابتدا شاہ اشرف بیابانی کے مرثیے نو سر بار سے ہوئی جب کہ شمالی ہند میں مرثیہ نگاری کا آغاز روشن علی کے عاشور نامے سے ہوتا ہے۔ مہینے مرثیہ نگاری کے عظیم شاعر مانے جاتے ہیں انہوں نے واقعہ کربلا کو آنکھوں کے سامنے پیش کر دیا ہے۔

بچو آپ نے موہرم کے مہینے میں مرثیہ تو جکرر سنے ہوں گے جو لوگ مجلس میں کربلا کے واقعات (محدثا) کو نظم کی شکل میں گاتے ہیں۔ آج میں آپ کو اس کے بارے میں بتا رہا ہوں۔ یہ لفظ مرثیہ عربی لفظ رثاء سے نکلا ہے جس کا اর্থ ہے مہینے میں مرثیہ نگاری کے عظیم شاعر مانے جاتے ہیں انہوں نے واقعہ کربلا کو آنکھوں کے سامنے پیش کر دیا ہے۔

अभ्यास कार्य

प्रश्न,, मर्सिए का क्या अर्थ है?

प्रश्न,, मर्सिए में कितनी सामग्री होती है?

प्रश्न,, उत्तरी हिंद में मर्सिए की शुरुआत किससे होती है?

प्रश्न,, मोहम्मद रफी सौदा ने मर्सिए को किसकी दिखावट दी?

نرتیب 80 کے جواب

(1) قلی قطب شاہ (2)

نظیر اکبر آبادی نے

(3) عبدالحلیم شرر

نے (4) پانچ:- پابند

نظم، طویل نظم،

معرا نظم، آزاد نظم،

نثری نظم- (5) Blank

verse (6) Free verse

مشق

سوال.. مرثیے کے کیا معنی ہیں؟

سوال.. مرثیے کے کتنے اجزاء ہیں؟

سوال.. شمالی ہند میں مرثیہ کا آغاز کس سے ہوتا ہے؟

سوال.. محمد رفیع سودا نے مرثیہ کو کس کی ہیئت عطا کی؟



पाठ-
साहित्य

पाठ्य क्रमांक -

84

प्रकरण-

मर्सिया

मरثیه چونکہ عربی زبان سے اردو میں داخل ہوا اس لیے اس میں اولیت واقعہ کربلا کو حاصل ہے۔ ہندوستان میں مغلوں کے دور میں شعراء نے بہت دل سوز مرثیے لکھے ہیں جو مرثیے لکھے جارہے ہیں وہ اپنے آپ میں ایک منفرد مقام رکھتے ہیں۔ واقعہ کربلا کا جو مقصد تھا وہ ان مرثیوں میں کہیں نظر نہیں آتا مگر دور جدید کے ایک معروف شاعر جناب فیض احمد فیض نے اس خالی جگہ کو پر کیا اور دور حاضر میں ایسے مرثیے لکھے جس نے نوجوان نسل کے اندر نہ صرف شہادت کا جذبہ پیدا کیا بلکہ ایک نیا انقلاب رونما کر دیا۔ واقعہ کربلا کو مدنظر رکھ کر موجودہ دور میں نیند کے خمار میں سوئی ہوئی قوم کو ان کے مرثیوں نے بیدار کیا اور کربلا کا جو اہم مقصد تھا وہ منظر عام پر لا کر اس خلا کو پر کیا جو سابقہ مرثیوں میں چلا آ رہا تھا۔ اس لیے فیض کو انقلابی شاعر کہا جاتا ہے حالانکہ ان کے مرثیوں کو نظم کے زمرے میں رکھا گیا ہے کیونکہ مرثیہ کہ جو اجزاء ہیں وہ ان کے مرثیوں میں نظر نہیں آتے مگر پھر بھی مرثیے کا ماخذ انہوں نے اپنے مرثیوں میں ادا کر کے ایک انقلاب ضرور برپا کیا ہے۔

مرسیا کیوں کہ اعرابی زبان سے اردو میں داخل ہوا اس لیے اس میں اولیت واقعہ کربلا کو حاصل ہے۔ ہندوستان میں مغلوں کے دور میں شاعروں نے بہت دل سوز مرثیے لکھے ہیں جو مرثیے لکھے جارہے ہیں وہ اپنے آپ میں ایک منفرد مقام رکھتے ہیں۔ واقعہ کربلا کا جو مقصد تھا وہ ان مرثیوں میں کہیں نظر نہیں آتا مگر دور جدید کے ایک معروف شاعر جناب فیض احمد فیض نے اس خالی جگہ کو پر کیا اور دور میں ایسے مرثیے لکھے جس نے نوجوان نسل کے اندر نہ صرف شہادت کا جذبہ پیدا کیا بلکہ ایک نیا انقلاب رونما کر دیا۔ واقعہ کربلا کو مدنظر رکھ کر موجودہ دور میں نیند کے خمار میں سوئی ہوئی قوم کو ان کے مرثیوں نے بیدار کیا اور کربلا کا جو اہم مقصد تھا وہ منظر عام پر لا کر اس خلا کو پر کیا جو سابقہ مرثیوں میں چلا آ رہا تھا۔ اس لیے فیض کو انقلابی شاعر کہا جاتا ہے حالانکہ ان کے مرثیوں کو نظم کے زمرے میں رکھا گیا ہے کیونکہ مرثیہ کہ جو اجزاء ہیں وہ ان کے مرثیوں میں نظر نہیں آتے مگر پھر بھی مرثیے کا ماخذ انہوں نے اپنے مرثیوں میں ادا کر کے ایک انقلاب ضرور برپا کیا ہے۔

अभ्यास कार्य



ترتیب 83 کے جواب

- प्रश्न,, मर्सिए किस घटना को विषय बनाकर लिखा जाता है?
- प्रश्न,, फ़ैज़ को कैसा शायर कहा जाता है?
- प्रश्न,, फ़ैज़ के मर्सियों ने क़ौम में क्या जज़बा पैदा किया?
- प्रश्न,, फ़ैज़ के मर्सियों को किस श्रेणी में रखा जाता है?

- (1) मرنے والے پر
- (2) رونے کے
- (3) روشن علی کے
- (4) مسدس کی
- (1) मरने वाले पर रोने
- (2) आठ
- (3) रोशन
- (4) मसदस की



مشق

- سوال.. مرثیه میں کس واقعہ کو موضوع بنایا جاتا ہے؟
- سوال.. فیض کو کیسا شاعر کہا جاتا ہے؟
- سوال.. فیض کے مرثیوں نے قوم میں کیا جذبہ پیدا کر دیا؟
- سوال.. فیض کے مرثیوں کو کس زمرے میں رکھا جاتا ہے؟



कसीदे का परिचय

قصيده کا تعارف

بجو آج ہم آپ کو قصیدہ کے بارے میں بتائیں گے۔ اردو صنف میں اس کا کیا مقام ہے؟ لفظ قصیدہ عربی لفظ قصد سے بنا ہے اس کے لغوی معنی یعنی ارادہ کرنے کے ہیں گویا قصیدے میں شاعر کسی خاص موضوع پر اظہار خیال کرنے کا قصد کرتا ہے۔ اس کے دوسرے معنی مغز کے ہیں یعنی قصیدہ اپنے موضوعات کے اعتبار سے دیگر اصناف شاعری میں وہی نمایاں امتیازی حیثیت رکھتا ہے جو انسانی جسم کے اعضاء میں مغز کو حاصل ہوتی ہے اردو میں مرزا اور ابراہیم ذوق نے قصیدے کی صنف کو اعلیٰ مقام تک پہنچایا۔ قصیدہ بینت کے اعتبار سے غزل سے ملتا ہے بحر شروع سے آخر تک ایک ہی ہوتی ہے۔ پہلے شعر کے دونوں مصرعے اور باقی اشعار کے آخری مصرعے ہم قافیہ ہم ردیف ہوتے ہیں مگر قصیدے میں ردیف لازمی نہیں ہے۔ قصیدہ کا آغاز مطلع سے ہوتا ہے بعض اوقات درمیان میں بھی مطلع لائے جاتے ہیں۔ ایک قصیدہ میں اشعار کی تعداد کم سے کم پانچ ہے زیادہ سے زیادہ کی کوئی حد مقرر نہیں ہے۔ جیسے غالب کا یہ قصیدہ جو بہادر شاہ ظفر کی مدح میں لکھا گیا ہے کیا خوبصورت صبح کا منظر پیش کر رہا ہے۔ قصیدے کے اجزائے ترکیبی مندرجہ ذیل ہیں:- تشبیہ ترمیم، گریز ترمیم، مدح ترمیم، حسن طلب ترمیم، دعایہ ترمیم۔

بچو آج ہم آپ کو قصیدہ کے بارے میں بتائیں گے۔ اردو صنف میں اس کا کیا مقام ہے؟ لفظ قصیدہ عربی لفظ قصد سے بنا ہے اس کے لغوی معنی یعنی ارادہ کرنے کے ہیں گویا قصیدے میں شاعر کسی خاص موضوع پر اظہار خیال کرنے کا قصد کرتا ہے۔ اس کے دوسرے معنی مغز کے ہیں یعنی قصیدہ اپنے موضوعات کے اعتبار سے دیگر اصناف شاعری میں وہی نمایاں امتیازی حیثیت رکھتا ہے جو انسانی جسم کے اعضاء میں مغز کو حاصل ہوتی ہے اردو میں مرزا اور ابراہیم ذوق نے قصیدے کی صنف کو اعلیٰ مقام تک پہنچایا۔ قصیدہ بینت کے اعتبار سے غزل سے ملتا ہے بحر شروع سے آخر تک ایک ہی ہوتی ہے۔ پہلے شعر کے دونوں مصرعے اور باقی اشعار کے آخری مصرعے ہم قافیہ ہم ردیف ہوتے ہیں مگر قصیدے میں ردیف لازمی نہیں ہے۔ قصیدہ کا آغاز مطلع سے ہوتا ہے بعض اوقات درمیان میں بھی مطلع لائے جاتے ہیں۔ ایک قصیدہ میں اشعار کی تعداد کم سے کم پانچ ہے زیادہ سے زیادہ کی کوئی حد مقرر نہیں ہے۔ جیسے غالب کا یہ قصیدہ جو بہادر شاہ ظفر کی مدح میں لکھا گیا ہے کیا خوبصورت صبح کا منظر پیش کر رہا ہے۔ قصیدے کے اجزائے ترکیبی مندرجہ ذیل ہیں:- تشبیہ ترمیم، گریز ترمیم، مدح ترمیم، حسن طلب ترمیم، دعایہ ترمیم۔

بچو آج ہم آپ کو قصیدہ کے بارے میں بتائیں گے۔ اردو صنف میں اس کا کیا مقام ہے؟ لفظ قصیدہ عربی لفظ قصد سے بنا ہے اس کے لغوی معنی یعنی ارادہ کرنے کے ہیں گویا قصیدے میں شاعر کسی خاص موضوع پر اظہار خیال کرنے کا قصد کرتا ہے۔ اس کے دوسرے معنی مغز کے ہیں یعنی قصیدہ اپنے موضوعات کے اعتبار سے دیگر اصناف شاعری میں وہی نمایاں امتیازی حیثیت رکھتا ہے جو انسانی جسم کے اعضاء میں مغز کو حاصل ہوتی ہے اردو میں مرزا اور ابراہیم ذوق نے قصیدے کی صنف کو اعلیٰ مقام تک پہنچایا۔ قصیدہ بینت کے اعتبار سے غزل سے ملتا ہے بحر شروع سے آخر تک ایک ہی ہوتی ہے۔ پہلے شعر کے دونوں مصرعے اور باقی اشعار کے آخری مصرعے ہم قافیہ ہم ردیف ہوتے ہیں مگر قصیدے میں ردیف لازمی نہیں ہے۔ قصیدہ کا آغاز مطلع سے ہوتا ہے بعض اوقات درمیان میں بھی مطلع لائے جاتے ہیں۔ ایک قصیدہ میں اشعار کی تعداد کم سے کم پانچ ہے زیادہ سے زیادہ کی کوئی حد مقرر نہیں ہے۔ جیسے غالب کا یہ قصیدہ جو بہادر شاہ ظفر کی مدح میں لکھا گیا ہے کیا خوبصورت صبح کا منظر پیش کر رہا ہے۔ قصیدے کے اجزائے ترکیبی مندرجہ ذیل ہیں:- تشبیہ ترمیم، گریز ترمیم، مدح ترمیم، حسن طلب ترمیم، دعایہ ترمیم۔

گالیب کا کسیدہ

غالب کا قصیدہ

سُبحِ دمِ دروازه خاور کھلا
خسرو انجم کے آیا صرف میں
وہ بھی تھی ایک سیمیا کی
سی نمود
میں کواکب کچھ نظر آتے ہیں
کچھ
سطح گردوں پر پڑا تھا رات
صبح آیا جانب مشرق نظر

مہر عالم تاب کا منظر کھلا
شب کو تھا گنجینہ گوہر
کھلا
صبح کو راز مہ و اختر کھلا
دیتے ہیں یہ دھوکا بازیگر
کھلا
موتیوں کا ہر طرف زیور
کھلا
اک نگار آتشیں رخ سر کھلا

مہر عالم تاب کا منظر کھلا
شب کو تھا گنجینہ گوہر
کھلا
صبح کو راز مہ و اختر کھلا
دیتے ہیں یہ دھوکا بازیگر
کھلا
موتیوں کا ہر طرف زیور
کھلا
اک نگار آتشیں رخ سر کھلا

سُبحِ دمِ دروازه خاور کھلا
خسرو انجم کے آیا صرف میں
وہ بھی تھی ایک سیمیا کی
سی نمود
میں کواکب کچھ نظر آتے ہیں
کچھ
سطح گردوں پر پڑا تھا رات
صبح آیا جانب مشرق نظر

شब्द = अर्थ

अन्जुम = सितारे

सरफ़ = बसर, खत्म

गुन्जीना ए = खज़ाना

गौहर = मोती

सीमिया = कुदरती खूबी

नमूद = नुमाइश

मह व अख़तर = चांद

सितारे

कुआकब = सितारे

गरदू = आसमान

निगार ए

आतिशीं = रंगीन शोले

مہ و اختر = چاند

ستارے

صرف = بسر، ختم، تمام۔ کواکب = ستارے

گنجینہ = خزانہ۔

گوہر = موتی۔۔

سیمیا = قدرتی خوبی شعلے



पाठ-

पाठ्य क्रमांक -

व्याकरण

86

प्रकरण-

शब्द

بچو آپ نے کچھ قواعد اردو زبان کی درجہ ششم اور درجہ ہفتم میں پڑھیں۔ اب میں آپ کو ذرا تفصیل سے قواعد پڑھاؤں گا تاکہ آپ قواعد کو بہتر طریقے سے سمجھ سکیں۔ یہ تو آپ جانتے ہی ہیں کہ کسی بھی زبان کی خوبصورتی اس کی قواعد سے ہی ہوتی ہے اردو اور ہندی زبان میں بھی قواعد کی بہت اہمیت ہے۔ تو چلو شروع کرتے ہیں۔ سب سے پہلے ہم لفظ کی تعریف سمجھیں گے۔

سب سے پہلے ہم لفظ کی تعریف سمجھیں گے۔

لفظ کی تعریف انسان کے منہ سے بولتے وقت جو کچھ نکلتا ہے اسے لفظ کہتے ہیں لفظ حروف کی ایک خاص ترتیب کا نام ہے لفظ کے معنی ہو یا نہ ہو یہ ضروری نہیں۔

کلمہ لفظ کی اقسام:- لفظ کی دو اقسام ہیں۔ (1) کلمہ (2) مہمل کلمہ ایسا لفظ جس کا کچھ نہ کچھ مطلب سننے والے کی سمجھ میں آجائے اسے کلمہ کہتے ہیں۔

مہمل کلمہ ایسا لفظ جس کے سننے سے کچھ مطلب سمجھ میں نہ آئے محمل کہلاتا ہے بے جیسے:- گپ شپ غلط سلت اس میں گپ اور غلط کلمہ ہے اور جبکہ شپ اور سلت مہمل۔

نوٹ یاد رکھیں کہ مہمل کی مزید اقسام نہیں پائی جاتیں جبکہ کلمہ کی مزید تین اقسام ہیں

बच्चों आपने कुछ कवायद उर्दू जुबान की कक्षा 6 और कक्षा 7 में पढ़ी। अब मैं आपको जरा विस्तार से कवायद(व्याकरण) पढ़ाऊंगा ताकि आप कवायद को बेहतर तरीके से समझ सकें। यह तो आप जानते ही हैं कि किसी भी भाषा की सुंदरता उसकी कवायद से ही होती है उर्दू और हिंदी जुबान में भी कवायद की बहुत अहमियत है तो चलो शुरू करते हैं।

सबसे पहले हम लफ़्ज़ (शब्द) की तारीफ़ (परिभाषा) समझेंगे

शब्द की परिभाषा इंसान के मुंह से बोलते वक्त जो कुछ निकलता है उसे शब्द कहते हैं शब्द अक्षर के एक खास क्रम का नाम है लफ़्ज़ के मायने हो या ना हो यह जरूरी नहीं।

शब्द के प्रकार:- शब्द के दो प्रकार होते हैं। (1) सार्थक शब्द (2) निरर्थक शब्द।

कलमा (सार्थक शब्द) ऐसा शब्द जिसका कुछ न कुछ मतलब सुनने वाले की समझ में आ जाए उसे कलमा कहते हैं।

महमल कलमा (निरर्थक शब्द)

ऐसा शब्द जिसके सुनने से कुछ मतलब समझ में ना आए महमल कहलाता है जैसे:- गपशप

ग़लत सलत इसमें गप और ग़लत कलमा (सार्थक शब्द) है जबकि शप और सलत महमल

(निरर्थक शब्द) हैं। **नोट** याद रखें कि महमल कलमा की और प्रकार नहीं होते

जबकि कलमा (सार्थक शब्द) तीन प्रकार के होते हैं।



بچو ميں نے آپ کو لفظ کے بارے ميں بتايا تھا اور يہ بھی بتايا تھا کہ مہمل الفاظ کون سے ہوتے ہيں۔ لفظ کی جو اقسام ميں نے آپ کو بتائي تھيں ان ميں سے آج ہم پہلی قسم کے بارے ميں پڑھيں گے تو لفظ کی پہلی قسم ہے اسم۔ مگر بچو اسم کی بھی اقسام ہوتی ہيں جو ميں آپ کو اس سبق ميں بتاؤں گا۔ بناوٹ کے لحاظ سے اسم کی تين اقسام ہيں اسم جامد، اسم مصدر، اسم مشتق۔

وہ اسم ہے جو نہ تو خود کسی لفظ سے بنا ہو اور نہ اس سے مزيد الفاظ بنائے جاتے ہو اسم جامد کہلاتا ہے جيسے:- قلم، ميز، علي وغيره

وہ اسم جو خود تو کسی سے نہ بنا ہو ليکن مقررہ قاعدوں کے مطابق اس سے مزيد الفاظ بنائے جا سکتے ہوں جيسے:- پڑھنا لکھنا وغيره مصدر کے آخر سے اگر نا کو دور کیا جائے تو فعل امر کا صيغہ واحد حاضر باقی رہ جاتا ہے مثلاً لکھنا سے لکھ پڑھنا سے پڑھ

وغيره اسم جو قاعدے کے مطابق مصدر سے بنايا جائے مشتق کہلاتا ہے جيسے:- پڑھنا سے پڑھائی لکھنا سے لکھائی وغيره۔

اسم جامد

اسم مصدر

اسم مشتق

बच्चो मैंने आपको शब्द के बारे में बताया था और यह भी बताया था कि निरर्थक शब्द कौन से होते हैं। शब्द के जो प्रकार मैंने आपको बताए थे उनमें से आज हम पहले प्रकार के बारे में पढ़ेंगे। तो शब्द का पहला प्रकार है संज्ञा मगर बच्चो संज्ञा के भी प्रकार होते हैं जो मैं आपको इस पाठ में बताऊंगा बनावट के लिहाज से संज्ञा के तीन प्रकार हैं इस्म मसदर (स्रोत संज्ञा) इस्म जामिद (स्वयं संज्ञा) इस्म मशतक (व्युत्पन्न संज्ञा)।

इस्म जामिद

वह संज्ञा है जो ना तो स्वयं किसी शब्द से बनी हो और ना उससे अतिरिक्त शब्द बनाए जाते हों संज्ञा जामिद कहलाती है जैसे कलम, मेज़ अली आदि।

इस्म मसदर

वह संज्ञा जो खुद तो किसी से ना बनी हो लेकिन व्याकरण के अनुसार उससे अतिरिक्त शब्द बनाए जा सकते हों जैसे:- पढ़ना, लिखना आदि मसदर के आखिर से अगर ना को दूर किया जाए तो क्रिया का रूप और एकवचन स्थिति बाकी रह जाती है जैसे लिखना से लिख पढ़ना से पढ़ आदि।

इस्म मशतक

वह संज्ञा जो व्याकरण के अनुसार मसदर से बनाया जाए मशतक कहलाता है जैसे पढ़ना से पढ़ाई लिखना से लिखाई आदि।



ज़मीर (सर्वनाम) और उसके भेद

اسم ضمير اور اسکی اقسام

ضمير وہ کلمہ ہے جو کسی شخص یا چیز کے نام کی جگہ تکرار سے بچنے کے لیے استعمال کیا جاتا ہے۔ جس اسم کی جگہ ضمير استعمال کیا جائے تو وہ مرجع کہلاتا ہے جیسے علی اچھا لڑکا ہے۔ وہ صبح سویرے اٹھتا ہے۔ وہ سب کی عزت کرتا ہے۔ ان جملوں میں وہ ضمير ہے اور علی مرجع ہے۔

اسم ضمير کی اقسام:-

ضمير شخصی

وہ ضمير جو کسی شخص کے لئے استعمال ہو۔ وہ ضمير جو ایسے شخص کے لئے استعمال کیا جائے جو موجود نہ ہو ضمير غائب کہلاتا ہے وہ ضمير جو ایسے شخص کے لئے استعمال ہوتا ہے جس سے گفتگو کی جارہی ہے وہ ضمير حاضر یا مخاطب کہلاتا ہے۔ اور وہ ضمير جو ایسے شخص کے لئے استعمال ہو جو خود گفتگو کر رہا ہو ضمير متکلم کہلاتا ہے وہ، اس، غائب ہیں تو، تم، آپ، ضمير حاضر اور میں اور ہم ضمير متکلم ہے۔

जमीर वह वाक्य है जो किसी व्यक्ति या चीज के नाम की जगह बहस से बचने के लिए प्रयोग किया जाता है। जिस इस्म की जगह जमीर इस्तेमाल किया जाए वह मर्जा(संदर्भ) कहलाता है जैसे अली अच्छा लड़का है। वह सुबह सवेरे उठता है। वह सब की इज्जत करता है। इन वाक्यों में वह जमीर है और अली उनका मर्जा(संदर्भ) है।

सर्वनाम के भेद

इस्म शखसी (व्यक्ति विशेष)

वह सर्वनाम जो किसी व्यक्ति के लिए इस्तेमाल हो। वह सर्वनाम जो ऐसे व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया जाए जो उपस्थित ना हो सर्वनाम गायब कहलाता है वह जमीर जो ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है जिससे बातचीत की जा रही है वह जमीर श्रोता कहलाता है या और वह जमीर जो ऐसे व्यक्ति के लिए इस्तेमाल हो जो खुद वक्ता हो तो उसे वक्ता कहते हैं वह, उस, उन, उन्हें सर्वनाम गायब हैं तो, तुम, आप सर्वनाम श्रोता हैं और मैं, और हम सर्वनाम वक्ता हैं।



बچو کل میں نے آپ کو ضمیر شخصی کے بارے میں بتایا تھا آج ضمیر کی مزید اقسام بتا رہا ہوں۔ غور سے سمجھنے کی کوشش کریں۔

बच्चो कल मैंने आपको ज़मीर शखसी (पुरुष वाचक सर्वनाम) के बारे में बताया था आज ज़मीर के और प्रकार बता रहा हूं। ध्यान पूर्वक समझने की कोशिश करो।

ضمیر موصولہ

وہ ضمیر جس کے ساتھ ہمیشہ ایک ایسا جملہ ہوتا ہے جس میں اس کے اسم کا بیان ہوتا ہے ضمیر موصولہ کہلاتا ہے۔ جیسے:- جو لڑکا محنت کرتا ہے وہ کامیاب ہوتا ہے۔ اس جملے میں "جو" ضمیر موصولہ ہے اور اس کا اسم یعنی لڑکا بھی استعمال ہوا ہے۔

ضمیر استفہامیہ

وہ ضمیر جو پوچھنے کے موقع پر بولی جاتی ہے استفہامیہ کہلاتا ہے۔ جاندار اسماء کے لئے "کون" "کس" اور بے جان کے لئے "کیا" "کی" استفہامیہ ضمیر استعمال ہوتی ہے۔

وہ ضمیر جس میں کسی شخص یا چیز کی طرف اشارہ کیا جائے ضمیر اشارہ کہلاتا ہے جیسے "یہ" اور "وہ"۔

ضمیر اشارہ

شخصی ضمیروں کے ساتھ "آپ" "اپنا" اور "خود" استعمال کرتے ہیں تو یہ بات میں تاکید پیدا کرتے ہیں۔ ایسی ضمائر کو تاکیدی کہتے ہیں۔ جیسے میں خود گیا تھا اس کا اپنا فائدہ ہے۔

ضمیر تاکیدی

جو ضمیریں غیر معین اشیاء یا اشخاص کے لئے استعمال کی جاتی ہیں ضمیر تنکیری کہلاتی ہیں یہ تعداد میں دو ہیں "کوئی" اور "کسی" جاندار کے لئے اور "کچھ" بے جان کے لئے۔

ضمیر تنکیری

وہ اسم جس میں ضمیر کسی صفت کے ساتھ واقع ہو ضمیر صفتی کہلاتا ہے۔ جیسے:- مجھ ناچیز اس عقل مند اس میں "مجھ" اور "اس" ضمیر صفتی ہیں۔

ضمیر صفتی

ज़मीर मौसूला (संबंध वाचक सर्वनाम)

वह ज़मीर जिसके साथ हमेशा एक ऐसा वाक्य होता है जिसमें उसके इस्म का बयान होता है जमीर मौसूला कहलाता है जैसे:- जो लड़का मेहनत करता है कामयाब होता है। इस वाक्य में "जो" जमीर मौसूला है और उसका इस्म यानी लड़का भी इस्तेमाल हुआ है।

ज़मीर इस्तफ़हामिया (प्रश्नवाचक सर्वनाम)

वह ज़मीर जो पूछने के मौके पर बोली जाती है ज़मीर इस्तफ़हामिया कहलाता है। जानदार अस्मा(नाम) के लिए "कौन" "किस" और बेजान के लिए "किया" की इस्तफ़हामिया जमीर इस्तेमाल होती है।

ज़मीर इशारा (सांकेतिक सर्वनाम)

वह ज़मीर जिसमें किसी शख्स या चीज की तरफ इशारा किया जाए ज़मीर इशारा कहलाता है जैसे:- "यह" और वह।

ज़मीर ताकीदी (निश्चयवाचक सर्वनाम)

जब शखसी जमीरा के साथ आप, अपना, और खुद इस्तेमाल करते हैं तो यह बात में ताकीद पैदा करते हैं ऐसी ज़मायर को ताकीदी कहते हैं जैसे:- मैं खुद गया था, उसका अपना फायदा है।

ज़मीर तन्कीरी (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)

जो जमीर चीजों या व्यक्तियों के लिए इस्तेमाल की जाती हैं ज़मीर तन्कीरी कहलाती हैं यह तादाद में दो हैं "कोई" और "किसी" जानदार के लिए और "कुछ" बेजान के लिए।

ज़मीर सिफ़ती (विशेषण सर्वनाम)

वह इस्म जिसमें ज़मीर किसी सिफ़त(विशेषता) के साथ हो ज़मीर सिफ़ती कहलाता है जैसे मुझ नाचीज़, उस अकलमंद इसमें "मुझ" और "उस"

जमीर सिफ़ती है।



इस्म सिफ़त (संज्ञा विशेषण)

اسم صفت

وہ اسم جس میں کسی چیز کی اچھائی یا برائی کو ظاہر یا جس میں کسی چیز کی خصوصیت معلوم ہو اسم صفت کہلاتا ہے۔ جس کی صفت بیان کی جائے اسے موصوف کہتے ہیں جیسے جھوٹا لڑکا سچا آدمی۔ اس میں جھوٹا اور سچا صفت جبکہ لڑکا اور آدمی موصوف۔

وہ संज्ञा जिसमें किसी चीज की अच्छाई या बुराई को बताया जाए जिसमें किसी चीज की विशेषता मालूम हो इस्म सिफ़त कहलाता है। जिस संज्ञा की विशेषता बयान की जाए उसे मौसूफ (वर्णित) कहते हैं जैसे झूठा लड़का सच्चा आदमी इसमें झूठा और सच्चा विशेषता है जबकि लड़का और आदमी मौसूफ है।

صفت ذاتی

اسم صفت کی اقسام:-

وہ صفت جو کسی موصوف میں مستقل طور پر پائی جائے صفت ذاتی کہلاتی ہے۔ جیسے مینھا کڑوا وغیرہ اس کے تین درجے ہیں وہ درجہ صفت جس میں کسی چیز یا شخص کی ذاتی صفت بلامقابلہ غیر ظاہر ہوتی ہے تفضیل نفسی کہلاتی ہے جیسے لائق۔ وہ درجہ صفت جس میں چیز یا شخص کو دوسرے پر ترجیح دی جائے تفضیل بعض کہلاتا ہے جیسے بہت لائق وہ درجہ صفت جس میں کسی چیز کو اس جیسی تمام چیزوں پر ترجیح دی جائے تفضیل کل کہلاتا ہے جیسے سب سے زیادہ لائق۔

صفت نسبتی

وہ صفت جو کسی شخص یا چیز کا دوسرے شخص یا چیز سے تعلق یا نسبت ظاہر کرے صفت نسبتی کہلاتا ہے جیسے جگر مراد آبادی مجید لاہوری وغیرہ۔ اس میں جگر ایک شاعر کا نام ہے اور اس کی نسبت مرادآباد ضلع سے لی گئی ہے۔ اسی طرح سے مجدد ایک شخص کا نام ہے اور لاہوری ان کی نسبت سے جوڑا گیا ہے تو اس میں لاہور اور مرادآبادی نسبتی صفت کہلانے گی۔ وہ صفت جو اپنے موصوف کی ترتیب یا درجہ کو ظاہر کرے صفت عددی کہلاتا ہے

صفت عددی

جیسے پانچواں سبق پہلا دن وغیرہ

وہ صفت ہے جس سے چیزوں کی مقدار معلوم کی جائے صفت مقداری کہلاتے ہیں جیسے

صفت مقداری

سیر بھر، کچھ اناج، بہت پیسے وغیرہ

سिफ़त जाती (व्यक्तिगत विशेषण)

वह विशेषता जो किसी वर्णित में लगातार तौर पर पाई जाए सिफ़त जाती कहलाती है जैसे मीठा कड़वा वगैरा इसके तीन दर्जे हैं वह दर्जा सिफ़त जिसमें किसी चीज या व्यक्ति की जाती सिफ़त किसी दूसरे के बगैर होती है तफज़ील नफ़सी कहलाता है जैसे लायक़। वह दर्जा सिफ़त जिसमें चीज या शख्स को दूसरे पर तरजीह दी जाए तफज़ील बाज़ कहलाता है जैसे बहुत लाइक वह दर्जा जिसमें किसी चीज को उस जैसी तमाम चीजों पर तरजीह दी जाए तफज़ील कुल कहलाता है जैसे सबसे ज्यादा लायक़।

सिफ़त निस्वती

वह विशेषता जो किसी व्यक्ति या चीज का दूसरे व्यक्ति या चीज से संबंध या निस्वत जाहिर करें

(विशेषण सापेक्ष)

सिफ़त निस्वती कहलाता है जैसे जिगर मुरादाबादी मजीद लाहौरी आदि। इसमें जिगर की निस्वत मुरादाबाद से ली गई है और मजीद की निस्वत लाहौर से ली गई है इसलिए इसमें लाहौरी और मुरादाबादी सिफ़त निस्वती है।

सिफ़त अददी (संख्यात्मक विशेषण)

वह सिफ़त जो अपने वर्णित की तरतीब या दर्जे को जाहिर करें सिफ़त अददी कहलाता है जैसे पांचवा सबक, पहला दिन आदि।

सिफ़त मिक्दारी (एक मात्रात्मक विशेषण)

वह सिफ़त जिससे वस्तुओं की मिक्दार मालूम की जाए सिफ़त मिक्दारी कहलाते हैं जैसे सेर भर, कुछ अनाज, बहुत पैसे आदि।



بچو کل میں نے آپ کو بتایا تھا کہ مہمل کی کوئی اور قسم نہیں ہوتی مگر کلمے کی تین قسمیں ہوتی ہیں۔ آج میں آپ کو ان تین قسموں کے بارے میں بتاؤں گا وہ تین قسمیں ہیں اسم، فعل، حرف۔

وہ کلمہ ہے جو کسی جاندار یا غیر جاندار چیز یا جگہ کا نام ہو اسم کہلاتا ہے جیسے کرسی، دہلی، لال قلعہ، آگرہ، حامد جنید جمشید وغیرہ۔

اسم

وہ کلمہ ہے جس سے کسی کام کا کرنا یا ہونا یا سہنا ظاہر ہو اور اس میں کوئی زمانہ پایا جائے فعل کہلاتا ہے جیسے حامد کھیلتا ہے، وہ آتا ہے، رام سوتا ہے وغیرہ اس میں کھیلتا، سوتا، لفظ فعل کہلائیں گے۔

فعل

وہ کلمہ ہے جو دوسرے کلموں کے ساتھ ملے بغیر پورے معنی نہ دے حرف اسموں اور فعلوں کو آپس میں ملاتا ہے۔ جیسے:- میں کل تک اسکول جاؤں گا وہ چھت سے گر پڑا، میز کے اوپر کتاب ہے، بلی چھت پر ہے۔ اس میں تک، سے، اوپر وغیرہ حرف کہلاتے ہیں۔

حرف

बच्चो कल मैंने आपको बताया था कि महमल की कोई और प्रकार नहीं होती मगर कलमा की तीन प्रकार होती हैं। आज मैं आपको इन तीन प्रकारों के बारे में बताऊंगा वह तीन प्रकार हैं इस्म (संज्ञा) फ़ेल(क्रिया) हर्फ(संयोजन)।

इस्म (संज्ञा)

वह कलमा है जो किसी जानदार या ग़ैर जानदार चीज़ या जगह का नाम हो इस्म कहलाता है जैसे कुर्सी, दिल्ली, लाल किला, हामिद, जुनैद आदि।

फ़ेल (क्रिया)

वह कलमा है जिससे किसी काम का करना होना या सहना जाहिर हो और इसमें कोई जमाना पाया जाए फेल कहलाता है जैसे हामिद खेलता है, वह आता है, राम सोता है आदि इसमें खेलता, आता, सोता क्रिया शब्द हैं।

हर्फ (संयोजन)

वह कलमा जो दूसरे कलमों के साथ मिले बगैर पूरे मानी ना दे हरफ़ इसमों और फ़ेलों को आपस में मिलाता है जैसे तक, से, पर आदि।

अभ्यास कार्य



प्रश्न,, जुबान की खूबसूरती किससे होती है?

प्रश्न,, महमल कलमा किसे कहते हैं?

प्रश्न,, शप और सलत कौनसा कलमा हैं?

प्रश्न,, क्या कलमा की तरह महमल कलमा के भी प्रकार होते हैं?

प्रश्न,, कलमा के कितने प्रकार होते हैं?

مشق

سوال... زبان کی خوبصورتی کس سے ہوتی ہے؟

سوال... مہمل کلمہ کسے کہتے ہیں؟

سوال... شپ اور سلت کون سے کلمہ ہیں؟

سوال... کیا کلمہ کی طرح مہمل کلمہ کی بھی اقسام ہوتی ہیں؟

سوال... کلمہ کی کتنی قسمیں ہوتی ہیں؟